

DPN 5858

Title : वेदांग रुदन्ति कल्प नाना उपकार , कोक मंजरी  
VAIDANSA RUDANTI KALPA NĀNĀ UPKĀRA KOKA MANJARĪ

Run. No. 6549

Cat. No.

Micro. No.

Subject चिकित्सा / Medicine

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

✓ Old Hindi पुनः हिन्दी

Size in cms. 27 x 11.2

Folios 107

Lines (in a page) 9

एकू समाप्ति वाक्य नेपालभाषाई  
Anera line in a colophon.

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

हेमराज Hemaraja

Author / translator

आनन्द कवि Anand Kavi

Scribe / donor

मानदास सुगतदास

Date: NS / SS / VS / KS 833

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu / one side yellow

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

श्री औषध सम्पूर्ण इति आनन्दकवि निरचिते कोक मंजरी संपूर्ण ॥ दुर्गावत ॥ ॥

सं ८३३ क्षेत्रादि ४ हेमराजन दयका लोक २३४२ x मो २६४२ विम)







[illegible]

अथर्वगान्ध्यानविधिलिखने॥ कसत्रिसगमासा अधवर्गत्रिमासा अधवर्गषाष्टोमोमृताजिह्वा  
नस्थार्थिउवाच॥ अजामुखमोजलधनसहागसंगुहीह॥ मिथीसषाष्टयानसंगकामदेववरे॥ हलद  
संगत्रकपिरुसहनसंगवलहा॥ इक्षपिरुङ्गनह॥ कस्तूरीसंगस्तनूहा॥ वंघासंगवगलर्ग  
धि॥ नसर्वत्रागजहि॥ ॐ नि॥ ॥ अथविधि॥ हलदसत्रयाव॥ अजमायवसत्रयाव॥ ववसत्रया  
व॥ दहीसत्रयाव॥ नलकउवासत्रयाव॥ ॐ नि॥ ॥ वा॥ ॥ अथवृद्धनीकत्यलिखत॥ रुंयायासाम  
॥ रुंयाकउविधियेव॥ खनात्रकावपीताव॥ रुंयाव॥ नलकनीनिनी॥ वलकायविनेषा॥ ॥ वृद्धनीव  
महाडो॥ षधी॥ फणुवा॥ दन्ध॥ ननायविंदूसमन्वि॥ ॥ १॥ नामडीषधसमादायगुक्कपदगुरुदिनसप  
गुमूलसंग्रहका॥ वृद्धकला॥ अजलन॥ ३॥ लंजीनकनगमदीत्र॥ जीवद्वयसहृक॥ नस्थानसंवकीत्रः  
वमधूसरिणसमन्वि॥ ॥ ४॥ पीतामहाषधीदिया॥ मासमका॥ रुंनवका॥ वजकायासवनन॥ वलीपलिनः

५३

अथ मन्त्रविना ४

१२५०७८९१०१११२

वर्जितं ॥ १ ॥ सिधनामाधियत्यं व, अमत्रत्वं वजायता त्रदंताग्रकयवीगं, स्वस्ववर्जितुकात्रयतु ॥ ६ ॥ धनन  
मधुनायुक्तं, यागत्रययधिवत्, वलीयलिननिभाका, जीवायं डगात्रकं ॥ १० ॥ भक्षवीगुरुगधीमानस्व  
जनानंदकात्रकषावालाकसमरंजस्वी, वायास्त्रगुत्रूपम ॥ ८ ॥ साधकोनां तु सर्वेषां, त्रदंतीयत्रभाष  
दी, त्रदंतीयसमादीया, त्रसनसहलावयत् ॥ ९ ॥ लेपनस्त्रयगालियुयाकनकांचनी, स्वस्वगात्रसमा  
यी, निर्वंगस्त्रयगंधुर्वी ॥ १० ॥ नागं वक्रुत्रतं हं मां, यकसमन्वितां १ त्रदंतीयससंयुक्तं, हमागकससंयुः  
तां ॥ ११ ॥ पादं त्रेडसमकला, स्वस्वसंवर्तिकांचनी, अर्थन्यसंयवकामि, त्रदंतीकल्यमरुमं ॥ १२ ॥ त्रसायः  
नमहादवि, मृग्यात्रिडनागनी, मनष्यालं हि नार्थय, यनीदं ममविस्तरं ॥ १३ ॥ ॥ ॐ नित्रदंतीकल्य ॥  
॥ अथविधि ॥ गमगु क्वाडिगमकी तलमी ॥ मावमावेतावा ॥ अकद्वमाधेदिन वंद  
ॐ कीमटी लग्नं कलालकत्रे ० टाकात्रमिटी नूनात्रे ॥ नीत्याकतलमावमावे, मदीकारुनकचिक

॥ अथविधि॥ गम मृग कृच्छ्रिगमकी तलमी ॥ मावजावेतावा ॥ अकद्वमाधेदिन दंव  
लीकीमटी लग्नकलासकने ० टाकात्रमिटीनूनावे ॥ गीयाकतलमावजावे मडीदारुनकच्छिक



७१  
 कलींतीनिवस्तु। दां मासे गुं जाय वस॥ मासे दां मासे दां वडा। सनको सनपीनका पीना॥ १॥  
 ॥ सषवावाकीविधिलिखन॥ नेनयानिआयिगुठि, यंदनस॥ अत्रं उके नलसत्र॥ यंदननां  
 कत्रिकापीन, नल यंदन इनानेक कत्रिहांडीमाह धलि वृक्षे यरा अग्निवालीयं॥ गवनां  
 ॥ अवनलसोषेनवहां कुंड नात्रिले अ पाके वड नल कत्री कत्रिन नात्रिली अ। यह स द क हावे  
 नाल॥ कस वकी भइमीस॥ नालादी अ क पूत्र विधीयामास॥ दो अ जा व दु ग न नी व सुं दौ न की क २  
 पीवी विभल दी दिन नात्रकी काणी माहि राषीने सिद्धि हां॥ ॥ हीग॥ ॥ अथ हीग की विधि  
 ॥ गीदू का भ सत्र अ त्रिहं कत्रि सत्र कारिले॥ इ सु सत्र॥ गु द सत्र आध॥ नल क व वा सत्र आ  
 ध॥ पी सिधे सत्र कालिहा उ भलो अ व सत्र आम न व व भलिं लाव (१) हीग वीषा सत्र॥ आध भल  
 सन सत्र नाषे का ह सु का व वीषा हां॥ १॥ ॥ व॥ ॥ विधि॥ मसुगी गुंद॥ भारी वृक्ष की जं॥

भारी वृक्षी जं॥ ॥ निषा वीषी जं॥ ॥ वालू का रं वराव, सूर्य का नि पाषाण नाका सपट कत्रे माहि भारी  
 घाली जं॥ ॥ डय त्रिले पदी अ वा न रं अलि दी न य ह न २ भारी हां॥ ॥ अथ धा उ विधि॥ अत्र ना  
 व सर्म कला, मृत्पुं ग नि आ ज य न॥ ॥ अ व नात्र व नी विद्या, पिना य न न क थ न॥ ॥ १॥ गंध क न ह नं स ल रं  
 द इ व ल व पीष य न॥ मा उ लिगे म सा ग्र म अ, ना ग य न व ल य न॥ २॥ य न न म य न रं ज न जां न क क मा  
 य म॥ नात्र की दि गु ल कला, क न की र व नि निध यी॥ ३॥ सा जी वा जी अ न ह न नात्री वी व व डू पी ठा कत्रि दी  
 जं॥ ॥ क ल वा न॥ जां न डय त्रि व द क दी जं॥ ॥ घे दे न व सु य नां॥ सी नं॥ ४॥ ला ह ड ना व ड न य न  
 व स॥ ही गु न म ल सिं दू ना दि र क त्रि ना लि य न ह की यं॥ ल ष मी ना ही दू त्रि॥ ५॥ ह र वि ला स नि, अ  
 व न न नाली, दान ड अलि व ग म मात्री, मा त्रि व र ग म वा ध रू स वा॥ च व य र वा ल क व न डू वा॥ ३॥ द  
 ग ल ह म व ड ग ल या ना॥ स न गु ल गंध क आ व ल सा ना॥ अ नि ना ग य नि हौ क व डू लि हा ना॥ ड य जं॥ क







पाकूँचीउगाळकाटकी १२ कयउलाळने। डयत्रिगंधकटकपाचनदूरकाळनेवानीकत्रिविकाळीनाः  
 नलंथलीधत्रीयळ। डसमाहियळयइळ॥ पाकूँचावासीसीमिद्यालिकलिधाउकीलीदिमाहिदिन३०ः  
 राशीनुपाकूँकाटिकत्रि। यात्रिमासनीवागमलीनु। पाकूँमासानकयवागलनीमूसमहीदलसुवनीरु  
 वनि। सदगुनुससादानुअखवर्लरुवनिमर्थ॥ २१॥ ॥अथनासमात्रवविधिलिखन॥ गांवाः  
 कटवधीपणकनावेपाकूँअवावत्रगडकमृगसनीगाळकत्रिकुआवात्र२१पीकूनीवृकत्रससः ४  
 नीक्षवेवात्र२१जवअकाहाळतवआककद्वधमाहिषत्रलेन्याद्यालेपीकूनाउमहिदाविष्काउ॥  
 धूपधनेजवद्वधसोषीतवपणकटिले॥ पीकूँआवलासात्रगंधकनाहाकत्रियिसीवापाकूँसीधाः  
 पीसिसूहागपीसिलावापीकूँअवावत्रकुलीकमृगसनीगंधकसिधीसहागत्रउलाळपणलग  
 वे। वइतमकावेपाकूँदाळसनीर्लीत्रगठिनिसमाहिभलली॥ पाकूँसनीमहिभलिडयत्रिलेय

कले। वृळसनीमाठीकामाठीवइतकमाळ। पाकूँगंठहाषादेगज२वोठालवा॥ डयत्पारुत्रेअधवीविः  
 सनाळधत्रअग्निवालिदळ। गावामत्रेनीसनाळीकाटिले०टाकत्रिका॥ घदवताकाआपलसंव  
 त्रिकत्रि। वाकलजिमावा। गातावानकात्रनीनिगषाळ। पानकवीठसनीसीनरुनि। सनीत्रसवीर्जः  
 रुवनि॥ ॥४॥ नागुसं३रागुसीग२रागुसिंदू॥ १॥ यवा॥ ॥व॥ ॥विधि॥ हटताल१  
 २॥ गंधक१२॥ पात्राउचीड॥ २॥ वनीकत्रिकचीडयवाव॥ डलेमसीतलनत्ररुवनि॥ श्री॥ धान  
 किकयालिधन॥ सुत्रनडसनमीसवकत्रेनामनावकयणुगत्रमकत्रिकुआवेवात्र३वइत्रि। धहः  
 त्रिकद्वधमेवमावेवात्र३गळकद्वधमेवमावेवात्र३सधदहाळ। सुवलषाननिक्षत्र। धहत्रिकद्व  
 धमाषले। नावकयणुलगाळकेअग्निमाहिवेळ। सनहाळ॥ ॥पात्रासत्रसाही१सीसासत्रसाः  
 ही१सावनमपीसदत्रसाही१सनसित्रसेत्रसाही१गंधकसत्रसाही१हत्रनात्रसेत्रसाही१वृदनीकन



समाषलकत्रे यत्री ३ नयकयकत्रे नासुलगवे, सयटभधत्रे, कयत्राटीकत्रे सुकार्ग आयदंलकडी  
 धेत्रकी, वनूजं गुचरावे पुहत्र ४ ॥ १ ॥ पात्रा नात्रा १ गंधक नात्रा १ हत्र नात्र नात्रा १ लीला १ थाथ नात्रा १  
 मनसिल नात्रा १ सर्वरु दंरु दंयीसे। सुवत्र कीनी कत्र सा माषत्रले कत्रे पुहत्र ८ सीसी कोक यत्री ३ दंल आष, डी  
 षदरुत्रे, सुले मानी मडा कत्रे वात्र जं गुचरावे अग्नि पुहत्र ८ दंल आयषत्री कत्रि दंल कलं करुव निगात्राः  
 नात्रा १ मासा नका १ दंल पीगरुव नि ॥ १ ॥ पात्री लीन सत्रा १ सागवन कत्र सा काया दंल यकावे न सत्रा १  
 डी २ जवली न रुस हांल न वहा डी मे आक्षली न रुले आक्ष नूय त्रि दंल ॥ वी विस् वलुषात्र धत्रे मडा कत्र गजः  
 पूरु दंल ॥ पुहत्र १ ३ न वक्ष न वक्ष क हांल ॥ १ ॥ ॥ पात्रा साधये सा नका रुत्रि ॥ अरुत्र कये सा नका रुत्रिः  
 राग मानाये सा रुत्रि ॥ सजीये सा रुत्रि ॥ सुहागये सा रुत्रि ॥ तालये सा रुत्रि ॥ समदरुत्रये सा रुत्रि ॥ ह  
 र नात्र ये सा पाव न रुत्रि ॥ अरुत्र कीमी गीये सा पाव न रुत्रा ॥ सद्रु उक दूध मेध त्रल कत्रे, पुहत्र यात्रि ४ ग

क दूध माषत्रल कत्रे पुहत्र ४ सीसी रुत्रे माद्रुत्र की गिरुह सो सीसी का मष मूदे, कयत्राटी कत्रे, वात्र  
 का जं गुचरावे, आय पुह १ ३ की दंल नांवे मे ३ ४ नात्रे व नी पीगरुव उ ॥ १ ॥ ॥ हा नात्र क वि कात्र  
 दाग डी मू, नी का हांल ॥ सुहाग सजी, वृना दात्र वं दू षकी ॥ आक का दूध, नी वृक न स मायी से लगवे रुला  
 हांल ॥ ॥ डी षद मगी की ॥ सित्र स क वी जवानी कयी से न क की कनी कत्र समा (लगली वा धे स कांल  
 वषे, जितनी गली निगना सद्रुना ना स दंल ॥ मगी जांल ॥ ॥ डी षद वाव सी व की ॥ रुंगये या ॥ मूठी सना  
 वत्रि, आसगी धिव काय नि, अत्र नी सहात्र नी नि पा न का ॥ सूर्य वंद मा की शानि वनांल ॥ केलंल ॥ स्रं व स का  
 वे वृ क नी कत्रे, नी नि कं गुत्र सी षांल ॥ वावे सूर लंल, वावे सूर षांल ॥ सुषी वृ क नी, वृ क नी क दूध साषाः  
 लंल ॥ षटावया ला व रंल ॥ वाव सी व जांल ॥ ॥ वित्र यत्रा कल्य ॥ सूरु यत्री मे वित्र यत्रा उषा त्रि म गवेः  
 काह सुषावे वृ क नी कत्रे, पुहले मंल दिन ३ २ सह न सी षांल ॥ ये सा रुत्रि, वदन सिधिद व द ही हा



॥१॥ सुत्रे मंथल न कवनी गंधक दधसांषां नो काया साधन हां ॥ २॥ नीसुत्रे मंथल निलीक नलः  
 सांषां नो दिवादिदिहां ॥ ३॥ औथे मंथल वकनी कदधसांषां नो वदन सिद्धि ॥ ४॥ पावमे मंथलगवा  
 कामूगु सोषां न जाककुजिमी मां हि हां ॥ ५॥ सानन निश्रवे ॥ ६॥ कुठे मंथलगवा कधी सोषां नो जहां  
 गया वाहे नहा जां ॥ ७॥ पावगवन नहां ॥ ८॥ सातमे मंथलगवा वदन सांषां नो जहां नीवथः  
 हे सवनन निश्रवे घीववे ॥ ९॥ १०॥ डोष ददी न की ॥ ११॥ शिकु गजिहला ॥ १२॥ नीया नीनो न यनंग सर्व  
 ॥ १३॥ ककु कवि कटे कयत्र कुल कये माझ हल के संग दां न साल गये दिन २१ वज्र दा नहां ॥ १४॥ ॥  
 नो सादवनी वृत्र समावर्त घटी २ नावी मास ३ मंग मित्री मास ४ राग मास ५ यात्रा मास ६ नीनील ७ अथी  
 मी ८ कद्वे नल माव आव १ वात्र पावहि नो को सहा गथा गले ॥ २॥ ॥ वा ॥ यात्रा नाला १ सीसा नाला १  
 वृय मास ३ यात्रा सीस कुल रुद १ वनील क नल माय कावे अल जं गु घटी २ नूल नले डय निदं ॥ हाजी

मानी वृत्र सस्था पकावे यहन १ नीवा नाल ३ वादी नाली ॥ १॥ दिवावे वृमावे नीवा वाजसूत जावमे वात्र ३ः  
 ये सात निश्रव साही ३ मास ३ यात्रा वृहती नवय मासा १ अल सी नल माय कावे ४ मी गल आत्र यहन ३  
 नाव मास यात्रा दं ॥ २॥ ॥ वा ॥ ॥ नावा नाला १ यात्रा मासा १ अरु मास श्यादी मासा १ अरु पार्श्व  
 लरु दावादी कुल रुदा अरु सां ॥ ३॥ ॥ वा ॥ ॥ अथ विधि ॥ पोलाद मास ४ वादी मास धयी नलि मास २ स  
 जी को सित कायं वरुक्ष दं ॥ ४॥ अगि यत्रि सुसां ॥ ५॥ ॥ ६॥ ॥ ७॥ ॥ ८॥ ॥ ९॥ ॥ १०॥ ॥ ११॥ ॥ १२॥ ॥ १३॥ ॥ १४॥ ॥ १५॥ ॥ १६॥ ॥ १७॥ ॥ १८॥ ॥ १९॥ ॥ २०॥ ॥ २१॥ ॥ २२॥ ॥ २३॥ ॥ २४॥ ॥ २५॥ ॥ २६॥ ॥ २७॥ ॥ २८॥ ॥ २९॥ ॥ ३०॥ ॥  
 स २२ गवत्र हे सा १ वकनी का हाठ हे सा १ मंथ कु ७ ली माहि वावे अग्नि घटी ४ सिद्धि हां ॥ सीसी सुत्र  
 साही १ वावल वना वत्रि कन वला १ नले डय त्रि यो क दं ॥ २॥ ॥ अथ मूस साल सध वली १ जे न कवात्र दिने ना  
 ही नो वात्र २ यहि ससी की कत्रली १ नवहि ने गाना ही लोक वस पद दं ॥ ३॥ ॥ दिवा वला सिद्धि हां ॥ ४॥ ॥  
 ॥ ५॥ ॥ ६॥ ॥ ७॥ ॥ ८॥ ॥ ९॥ ॥ १०॥ ॥ ११॥ ॥ १२॥ ॥ १३॥ ॥ १४॥ ॥ १५॥ ॥ १६॥ ॥ १७॥ ॥ १८॥ ॥ १९॥ ॥ २०॥ ॥ २१॥ ॥ २२॥ ॥ २३॥ ॥ २४॥ ॥ २५॥ ॥ २६॥ ॥ २७॥ ॥ २८॥ ॥ २९॥ ॥ ३०॥ ॥  
 ॥ ३१॥ ॥ ३२॥ ॥ ३३॥ ॥ ३४॥ ॥ ३५॥ ॥ ३६॥ ॥ ३७॥ ॥ ३८॥ ॥ ३९॥ ॥ ४०॥ ॥ ४१॥ ॥ ४२॥ ॥ ४३॥ ॥ ४४॥ ॥ ४५॥ ॥ ४६॥ ॥ ४७॥ ॥ ४८॥ ॥ ४९॥ ॥ ५०॥ ॥  
 ॥ ५१॥ ॥ ५२॥ ॥ ५३॥ ॥ ५४॥ ॥ ५५॥ ॥ ५६॥ ॥ ५७॥ ॥ ५८॥ ॥ ५९॥ ॥ ६०॥ ॥ ६१॥ ॥ ६२॥ ॥ ६३॥ ॥ ६४॥ ॥ ६५॥ ॥ ६६॥ ॥ ६७॥ ॥ ६८॥ ॥ ६९॥ ॥ ७०॥ ॥ ७१॥ ॥ ७२॥ ॥ ७३॥ ॥ ७४॥ ॥ ७५॥ ॥ ७६॥ ॥ ७७॥ ॥ ७८॥ ॥ ७९॥ ॥ ८०॥ ॥  
 ॥ ८१॥ ॥ ८२॥ ॥ ८३॥ ॥ ८४॥ ॥ ८५॥ ॥ ८६॥ ॥ ८७॥ ॥ ८८॥ ॥ ८९॥ ॥ ९०॥ ॥ ९१॥ ॥ ९२॥ ॥ ९३॥ ॥ ९४॥ ॥ ९५॥ ॥ ९६॥ ॥ ९७॥ ॥ ९८॥ ॥ ९९॥ ॥ १००॥ ॥



८२ पीयालिटं शुककविपीसिधरुत्रकप्रससनीत्रलां कयडागजावानीकविडूकपठगजियलट  
 (सा) जगनं कविजीयठनीही पायुगलसत्र १ हां ठे मलिल (सा) ४ हवा नी गलमहिवास्तही ॥ उयत्रिनः  
 लमलनं गा (सा) (सा) दा (सा) दा २ दं वत्रकत्र (सा) श गल हां साही ठे मल (सा) श को वं आसे मा द्वा हा  
 वं सा ॥ मू क हां ॥ अ क ड हां ॥ सा हा हां ॥ श न हां ॥ म द न क व ल र ला हां ॥ ॥ वा ॥ ॥ जी वा ॥  
 स निसर्वगं विविधिस्तानविषयगानि रुद्रि क ल ध य गाना ॥ १ ॥ अर्थ विषयगानां  
 नी ॥ सर्वान् रागीन् पुराणि न तथा ह सुग गानाडी ॥ यन कामय संवय ॥ २ ॥ पुनः (सा) घनी नाडी ॥ म  
 क्षा कृ वरिण की ॥ अ य रा कृ वा न की रू या ॥ पुनः यिरु साध न ॥ ३ ॥ वारी यिरु क रं दं दं नि नी यं स नि पाः  
 गज ॥ साक्ष साक्ष विवर्कं यं धि ना डी य का स न ॥ ४ ॥ वा ना विरु ग न ना डी ॥ य य ला यिरु वा हि नी ॥ स्त्रि त्र (सा) घ  
 वं नि या का ॥ सर्व लं ग न् सर्व ग ॥ ५ ॥ शि व र स व नि पा का ॥ व क मू र्क नि घा नि ना ॥ रा वि त्र ग वि वा धी य स्व र्क

नाडीयत्री कला ॥ ३ ॥ स्त्रि त्री व ह नि वा न न ॥ ४ ॥ व ह नि यिरु ला ॥ (सा) घ व व ह न मं द न ना डी विविधिल क ली ॥  
 ॥ १ ॥ ॥ वा ॥ ॥ अर्थ विरु का धि वृ ल विरु क टा ग ज पी य लि टं ॥ पी य लि मू र टं ॥ पी य लि टं ॥ ही गु टं ॥ य क  
 व मू ल टं ॥ अ ना त्र दान टं ॥ काला जी वा टं ॥ वि ठं ग टं ॥ ध ली या टं ॥ हा ह व र टं ॥ सो रु टं ॥ अ म ल व रं ॥ ही ग का याः  
 न ॥ मृ द ॥ च वा व य ॥ ध व ल जी वा ज वा य नि ॥ सो व ल ॥ स्त्रि ॥ वि ग रा का व स की य ट ॥ न्हा ह मू क रं वृ ल टं  
 ध व ल य र व नि ॥ दी उ य त र न ता या ली ॥ व ल ॥ २ ॥ पी जे ड द व वि का व स र्व मू ल पं च गु ल ह त्रि ॥ अ स्त्री व हि  
 व य ल ड ॥ वा ल व क जि का अ जी र्म मं द नि ॥ अ म वा न न रा ग गाना ॥ व ॥ वि मि त्र वा व क रं द न ॥ ल वं ग  
 ॥ व ल ग री ॥ आ वं रु ल ॥ मा च व स ॥ सो ड रु ॥ मा था ॥ अ वं रु ल ॥ ला ला द ॥ अ ही म ॥ जी वा क ज ल प ट ॥ ३ ॥ या न की  
 द ली गु जा य मा ल (ग ली ॥ सा णी वा व ल क या ली स नी ॥ व क अ नी सा न ॥ क री ॥ स ग ह ली न न रा ग गाना ॥ ॥ वा ॥  
 ॥ ॥ वा ॥ ॥ न म गं ध कं गु ल स र्वा नं द ह वि दू स मू र्क वी ॥ सा धि न वि वि धं अ व ॥ हा कि न म धू र्म य रं ॥ १ ॥ गं



प्रकाशययि यत्नामिध्रीवद्विगलं रुवेत्ता। निगुलं मधुना येव्वादिर्न मंठलज्यं ॥ २॥ गुह्यं ॥ यदत्रासीवाह  
 मार्गं यश्च दशकृष्टमववा। अष्टादशयुमहना। कसानां कल्पमववा ॥ ३॥ निविर्जय महावीर्यकामा  
 वसदाहवत्ता। अष्टकं सवकायसु। सिध्दरुवनिनिधय ॥ ४॥ ॥ वनिर्गंधकश्च कृष्णालकी ॥ ॥ व ॥  
 ॥ ॥ रागसंघायविष्णामि महादवेन राषिर्नां जनविहानमार्गं लं। रागर्नानामरुष्टं ॥ १॥ शुभमादि  
 यत्र विधावानं गुरुष्टं यकासर्क। अरुविधिष्टसंयुक्तं सर्वसासु समन्विर्न ॥ १॥ धर्नं नत्रमर्न विधा राग  
 नां नामरुष्टं ॥ १॥ वेद्यानीवहिनाथय रागसंघायनिर्नय ॥ ३॥ द्वादशनां नत्रं याका यिरुं वलात्रि  
 विंशति ॥ २०॥ विंशति (धृष्यकश्चैव ११) निधानं गुयादसा ॥ १॥ ३॥ ४॥ यं वदसान् दं लनां १॥ नकादशक  
 थालयत्ता ॥ १॥ ॥ मरुकेदस रागर्ना ॥ १०॥ कयालेवरुवेत्ता ग्रहा ॥ १॥ ॥ ॥ नव लेक रागर्ना ॥ १॥ ॥ अष्ट  
 उष्टसंरुव ॥ १॥ ॥ अष्टावदं नानी ॥ १॥ ॥ सूत्रहं ० सथा ॥ १॥ ॥ क० रागर्ना दशना ॥ १॥ ॥ द्वादययं वससु

[illegible]



[illegible]

हां० सिद्धि हां० पान सौं पाक्षत्रगी ॥ अक्षदणक ४१२ अक्षदणपमह १२ पिलुवाली स ४० लंघावी स २०  
 उदयवाधिदस १० कडुवासी वाय २४ यस्तुनिका सुवात्राग ॥ नयंसकरुला हां० ॥ अक्षदृद्धि हां० गजी  
 खरुन हां० ॥ सर्वत्रागनासुन ॥ ॥ व ॥ ॥ ने ॥ ॥ अथ न ४ संय विष्णामि, द्याया पत्र बलं कवी जन  
 विहानमागु ॥ ॥ कालहू ॥ रुथ न ॥ ॥ ॥ ॥ काले दूत्रस्ति नस्यामि, यनाया न न लक्ष्यता न व दामि समासः  
 नायं ॥ अदृष्टि समागम ॥ २ ॥ ॥ कां न य जनं गत्वा ॥ कलादिषां य पृष्ठि न ॥ नत्री कृणानिर्जं द्याया कं ० दस  
 माहिर्न ॥ ३ ॥ ॥ नं न ४ ॥ कासमी कृणं नं न ४ ॥ य पतिर्गं करं ॥ ने दी पत्र मवृक्षे ॥ न म ४ ॥ अक्ष न ४ स नं ४ ॥  
 नगा दृग्ध नं यमान ॥ १ ॥ ॥ दृष्टि क सं कां ॥ नाना द्रव्य धनं हनं ॥ यमासीत्यास आगन ॥ नास्ति किञ्च इलं रं, नद्र  
 यं कषू वलं वाय ४ य धनि याम निर्मलं महादव समास स्यात् ॥ रुचराय निर्वद ॥ ॥ ॥ ॥ वर्ष द न न ह ना  
 था कर्ला हलं स्वयं यद ॥ ॥ कालहू नं म वा प्राणि पत्र मानं द भे व ॥ ॥ ॥ ॥ स ॥ स ॥ स ॥ आगन ॥ नास्ति किञ्चि



ब्रह्मर्षी। नदूर्यं कषु वल्यः यश्च भगिनीयामनिर्मली ॥ १॥ षष्ठासामसां मृत् मवाग्रानि सत्रागीनाः  
 संप्रयत्नीनयाद्युत्तर्यं वक्रानीलहत्याविनिर्दिष्टा ॥ २॥ नानावृक्षसूत्रयास्ति नूडद्वग्नजायते मदात्रा  
 यादागुल्लवज ० त्रविनागं कमसार्वत ॥ ३॥ अयवर्गवर्षवः कुमाद्वर्षद्वयनयाविनागदक्षिण  
 हस्तविनागवर्षमाविनाग ॥ १०॥ अग्निनामागमत्रर्षविनागवर्षद्वयगना। अश्वहिर्वाधधनानागय  
 । कृयालु फागमक्षिण ॥ ११॥ कृयायुत्रषलकुलीय नतीर्थस्तानननयसी। नर्तकसूत्रननव ॥ १२॥ अ १०  
 धनध्यानयागनजायते कालत्रसायन। नयपूर्वकं गुटिका मृत्तजीवनी ॥ १३॥ नत्रागवज्रधर्कयप  
 वकालस्यवचनं। दक्षिणयमगादह यगाधर्मादि साधनं ॥ १४॥ गत्रीत्रनागय रंग दाषसाधूमलासः  
 मासमासुराकत्रागयी वलनं आविवर्द्धना ॥ १५॥ त्रागमजायाडग निःसाधुजायाअसाधुनिः। अः  
 साधुजीविर्नर्तकः ननस्यास्ति यनिकिया ॥ १६॥ यषद्विहू वसि गममदि नीयं नत्रर्ष नानागं कर

। हत्रस्यगर्षां मर्षं नगिकानि सयुत्रषयुनराजनी। स्वध्रियेनारुर्विकाली नरुयनरा ॥ १०॥ ॐ रुव  
 कमहं वंद्यो नमस्कृत्य साहिनी कामयुयमदान्मर्षं विघ्नपागनिकं नन ॥ १२॥ श्रीवेद्यनाथननया सालिनाः  
 थनधीमर्गसु मालाक माकषात्रविगात्रसर्मजनी ॐ नित्सर्मजनी कालरूनसंयुक्त ॥ १३॥ ॥  
 विधि ॥ रात्री संगमित्री गधरुगमाडवाले दिन १ संगमित्री गावकीवरावत्रिल ॐ त्रमावे ॥ सीपीकात्र  
 माअवृष्णागिसकांयालीनिगात्रिल ॐ त्रमावे दिन १ याके हत्रुके कनिकेनागिकारिगा ॐ त्रषे सवत्र  
 मलेडसयाली माहिडवाले दिन १ यादी मासद्वर्गावामास ३ ॐ क ० टाले हत्रियुक्तावावेरी टाले वात्रनी  
 नि ३ टाले पुरुकत्रो योधिवात्रहत्रियुक्तायेगीकीवरावत्रियु ३ संगमित्री सहागमनी न्यायीसियगीः  
 कालयकत्र १ त्राभगमससत्र १० यके सत्रावासयटमात्रोषाडहडयत्नामाहि हूकिद ॐ । आयुर्वेलेगाय  
 रुकत्रावे आयुर्वेलेनाही नीडहयगीकीनीनाकाले यद ॐ । गमससत्र १ माहि हत्रियकावे । यहशु



निवात्रनीनिकत्रे, पीठे आधीयादी आश्रम कत्री का, अष्टवर्ष रुवनि ॥ ॥ व ॥ ॥ जाडा ॥ स्वतः ॥ गर्धमूत्र  
 सत्रा कूत्रल सत्र साही ॥ नो सादत्र सत्र साही ॥ सत्र सूरवल सत्र सत्र साही ॥ सीरु त्रि सत्र साही ॥ वात्सायी सिगध  
 मूत्र मात्र लावा रुठकी दधयी वा सह नयाव ॥ रु दवा घला ॥ सत्र साही ॥ अस्त्री नत्र मकासी ॥ सत्र साही ॥ अस्त्री  
 पीतलि ॥ अस्त्री ना वा सत्र साही ॥ कंठक वधी यरु कना वेनी ना केश दश दश कंठक का ॥ अथ वा वं वल कका  
 ॥ अंशं कका ॥ ल्यामी हिलाल कत्रि के ना वे वा न ॥ व आ वे मूत्र माहि ॥ वात्र न नी ना व जा वे रुठक दधमा ॥ ॥ ॥  
 हि व आ वे वा न ॥ सह न मा व आ वे वा न ॥ स न हा ॥ ॥ ना वा मा से ॥ ॥ ॥ पीतलि मा स ॥ ॥ का सी मा स ॥ ॥ मा स  
 रु रु वी दी अस्त्री मा स ॥ ॥ सर्व न क रु कत्रि गले ॥ सुहा ग ॥ के वा न उ वा न उ रुठक दधमा हि टाला वा न ॥ सह  
 न मा हि टालि व आ वे ॥ ॥ ॥ ॥ व ॥ ॥ व ॥ ॥ अथ नू यत्र स अ नू याना ॥ सी न त्रि ॥ ॥ ला ॥ व व ठी स  
 व साही ॥ दाल वी नी सत्र साही ॥ अकत्र कना सत्र साही ॥ क स त्रि द मत्री ठी ॥ रु त्रि ॥ आ त्रि ठी ॥ धला ॥ रु त्रि ॥ नू यत्र

सत्र साही ॥ सह न मा ॥ गली मी सा य मा ॥ घाली जा ठ मा हि गत्र म व रु ना ॥ प रि व ल रु घ ला ली हा ॥ अ न रु धि ॥  
 ॥ ॥ ॥ ग्रीषम अ नू यान ॥ ला ॥ वी क्का टी सत्र साही ॥ का व वी ज सत्र साही ॥ दाल वी नी सत्र साही ॥ गाल म घान स  
 व साही ॥ क वा व वी नी सत्र साही ॥ यू ठी मा सा य मा ॥ त्रि गि थ य म रु सी न ल त्र हे ॥ व ल य रि व रु रु हा ॥ ॥  
 ॥ व ॥ ॥ कल र्थ रु वि धि ॥ कह ला ॥ कह ली ॥ कमत्र क स स या त्री का ॥ ल ॥ रु द ध र्थ ॥ ॥ ॥ पी य ला मू र ॥ का त्रि  
 क नी र मे दार धी ड ॥ गु ठा ॥ ॥ नि कत्रे ॥ गली वा ॥ ध र्षा ॥ सा म स व न ॥ कल र्थ रु स ही ॥ ॥ ॥  
 म भ मा ना ना ला ॥ य रु क ना वे कंठ क वधी नि स को सि ग त्र रु टं क ॥ विल्व गत्री सा पी सिल य कत्रे ॥ य का विल्व ना ठि  
 ला वे ॥ ये सा अ का त्र मू ष कत्रे ॥ गि त्रि क र्थ सि ग त्र रु सा धि ले ये ॥ कत्रे ॥ सू का ॥ विल्व मी हि म ले ॥ मू डा क त्रि सू का वे ग  
 अ यू ट अ मि य रु त्र ध की द ॥ ॥ रु त्र स त्र ष ग व द ॥ ॥ व ॥ ॥ स रु वा स रु ठि रु रु व नी ॥ द मा षा सी मि त्र व ने गत्र  
 मा ॥ रु त्रि हा ॥ सी ना ग को लो ग सा वि रु नि ॥ न रु आ व की नि स सा धि ॥ पी हा ॥ पी य ठा ॥ वा ॥ गली ॥ रु रु ॥ ॥ रु त्र



॥ गलाइ विहा ॥ गज आवने ॥ ॥ व ॥ ॥ चूनी विधि ॥ मूत्र का सवट ॥ सवट लघात्र ॥ मूत्र दय हत्र गाल ॥ १ ग  
 धकटका ॥ आध ॥ साधिल लसिंगर रुट ॥ १० मन सिलट ॥ पात्राट ॥ सर्व पीसि चूना वल्लवे विचडी डत्रियाली  
 गत्रावे ड पत्रि विचडी के राषे दिन ॥ राषे धत्रि ॥ ॥ व ॥ ॥ अथ कपूत्र दल की विधि लिखन ॥ सहगमीनी  
 लकंठी सत्र ॥ आलियाली यषाली ॥ विनिको डकल को जे सव स कूटक ॥ पिक्का मिजिके पाली यषाली ॥ नवाव  
 इवल क पीली यषाले डकल सी कायाली ॥ ३ मथी के पाली ॥ ३ स्रंक्ष आलिव द्रु सहगमी ॥ वासकी नली रुत्री ॥ गाल  
 ड सहगड ड पत्रि मासा ॥ आमलु ॥ कपूत्र ॥ काद ॥ डकि वीही मसेली किंवा ॥ विधीया ॥ लाग रुवा त्रिद कत्रि  
 कलिक मूंदल ॥ महिषी द्रुध पकवल ॥ वावल महि ॥ डहना लिनाधी ॥ त्रय गुं सी नल सी जे कपूत्र हा ॥  
 वहना लिकोरी नाजकी महि धत्री ॥ दिन २ ॥ कपूत्र हा ॥ ॥ व ॥ ॥ व ॥ ॥ हीग कत्र लकी विधि ॥ ॥  
 द्रुसल की गुली सत्र २ ॥ द्रुध के ली का सत्र २ ॥ कात्री हाठी मधिमल ॥ लो ॥ क्षेत्र ॥ क्षेत्र नीव क पाग दला ॥ गुली का ॥

१२

लि कत्रि सुका ॥ कत्रि अस्की कत्रि हांठी ममेल ली आसिया सिनीव क पाग दला वडु डि द्रुध्याल ॥ हा  
 ठी मूंदली चून कत्रि ॥ वडु डि सुका ॥ कत्रि टात्र चूने वट ॥ अग्निवाल ली ॥ रा रुनिकल वदली ॥ जव द्रुध  
 साषे नव ड नात्रि कत्रि निवीली की मीगीट ॥ १२ पीसि कत्रि छिट कावे वाषा हीगट ॥ २ छिट कावे मलिक कत्रि सुका  
 वे हीगु हो ॥ सह ॥ ॥ व ॥ ॥ वग की विधि लिखन ॥ वागु धलारु त्रि ॥ गिल की सली सत्र ॥ पीसि मे दा  
 कत्रे वाग क पत्र कत्रे ॥ पूना लो ना पद्रु हथ ड टल ॥ ॥ डस ड पत्रि सली विक्का वे ड पत्रि पत्रु धत्रे ड पत्रि  
 सली द ॥ गह वन ह कत्रे ॥ गय रुमा ठि द ॥ ड पत्रि सगली सी कसे ॥ पाथे मठी पुल पकत्रे ॥ पाथे धूय  
 द ॥ सुका वे ॥ पाथे पागाल रंग अत्र ॥ ड पत्रि अत्र ॥ ड पत्रि नहा हिनी ॥ पाथे म द ॥ अग्नि पत्रु व द ॥  
 लय ड्रि कत्रि पत्रु काटिले ॥ पीसले ॥ अद्रु पान की मिलोली ॥ मित्र वट ॥ १२ अकल नाट ॥ गयान ॥ १० यका अ  
 ला ॥ व २ ली गट ॥ २ न ॥ डल ॥ २ गजट ॥ २ न सत्र ॥ डोष दहि न रिं गा पीसली ॥ वडु डि वाग महि पीसली द



ॐ मिश्रीसनील वाधली। टं कं २ पु मा धा ३ अ वं सी ष ग्री ष म र नि षा णी। पि न वा न ह रि न अ न क य द्वि  
 पु म ह। स म स रा ग जा न ष टा व या ला अ म्भी सं गु व र्ज (६)। नू द्वा र्मा षा षा गु ठ न षा ॐ मि ० ॐ षा ॐ पु  
 द्वि हा ॐ ॥ ॥ व ॥ ॥ अथ संक्षेपवृत्तविधिलिखनं ॥ पात्राट १ विषूट १ मित्रवट १ सजीट २ १ सहलग्न  
 ट २ १ सात्राट २ १ आषात्रट २ १ संपलषात्र १ संपीयीट १ नोसादत्र १ २ १ टकडीट २ १ समूहट १ ट १ गं  
 धकट १ कजलीकट १ (६)। विसृजला ॐ राषलली। पीसिनक ० कत्र (६)। पोथुवास २ कीराषसत्र १ अककी  
 राषसत्र ॥ कं ॐ हलीकीराषसत्र १ पित्रहटीकीराषसत्र ॥ उगषहस ॥ सांठि २ षात्र १ विसषयराषाः  
 नृस ॥ वित्रवराषात्र १ हांगराषात्र ॥ अरुंठषात्र १ सहालूषात्र ॥ अरुंठषात्र १ सहालूः  
 षात्र ॥ सहजलूषात्र १ कसडं दीषात्र ॥ जवासाषात्र ॥ सींहठषात्र १ धमसडषात्र ॥ ज  
 वासडषात्र १ सर्वराषलकत्रि कं यठवाधियालीमला ॥ १ नेक ॥ टटत्रीवटा ॐ अगिवालिदीज ॐ ॥

13

[illegible]



अथगुण॥ वृत्त उपां कामू उयजे। अवीज कड वीश हां॥ वील कूषां पाठ उहां॥ वा पां पसूनहा  
 ॥ जिस कडं यह पन हां हाहि निस को यह यहाहि॥ नक अनी सात्र द्विहां॥ ॥ व॥ ॥ ॥  
 अथ स्यात्रीया कविधिलिखन॥ स्यात्रीटं २१ काली मूसलीटं २१ कोच वीजटं २१ यीपलिटं २१ मूट  
 टं ११ सुठिटं ११ यह कत्र मूलटं २१ मित्रवटं ४१ अजवायलिटं ११ सिंघाठटं २१ आसर्गविटं २१ वायः  
 विठगट ११ हाठंगीटं ११ अजमाइटं ११ रंगसत्र॥ कूरु कत्रियाली मल (भा) मलिकत्रि। षीत्रिकं इटं २०  
 ॥ क० यीसि। कय उच्छा ४८ टत्र मधिद्वधसत्र २१ मलि। पावेहाग कयाली नडाष इयालि अत्र टा वल  
 आदमीदां॥ यलावनं जीहि। कलां॥ श्री। डोष दजल नन द॥ यलावनं नहा। अत्र द्वध साषेन वनवासी  
 नटं २१ अट्टिकावे। अत्र सगला साषेन न कसारं साकत्रिड नात्रे। पांके मि ०॥ डोष उं धन नहि दाटि द  
 ॥ कत्रिया गुकत्रे अत्र पागुय के नवलोगटं २॥ अलां॥ वीटं २॥ जां॥ हलटं २॥ जावनीटं २॥ यीसि अ

१४

नवे डोष दमलां॥ गलीटं ४१ वाधित्राषे। सकाले संक्रा पाइं॥ वलव दून हां॥ ॥ व॥ ॥ ६० ॥ ॥  
 अथ अत्र कया लिखन॥ अथ सात्र सात्र विधि॥ सात्र काय गु कत्रि नन भात्र निकत्रि वूर्ल कत्र भात्रिह  
 वृने को अनात्र कात्र सकी पट ३६ ली॥ निहयावे कसी सकी पट ३६ ली॥ पांके माठी कं अउवेन सकी पट ३  
 ६ ली॥ पांके कं वात्रिकत्र सकी पट ३६ ली॥ पांके हांगत्र केन सकी पट ३६ ली॥ पांके अक कद्वध की पट ३६ ली  
 द्वधी कत्र सकी पट ३६ ली॥ पांके आमलिकी कालिकत्र सकी पट ३६ ली॥ पांके पं र्वा मरु की पट १६ ली सात्रः  
 सिद्धि हां॥ ॥ ॥ निसीत्र विधि भाव॥ ॥ ॥ अथ सात्र धत्र विधिलिखन॥ सात्र नखा सत्र याव। पात्रा  
 पाव आधा॥ ॥ कं कत्रि द्वधाषत्र लभा। कवात्रिकात्र ससनीषत्र लभा वात्र १०८ सूर्यपूटं द॥ षत्र लभा॥  
 पावे सत्रावा संयट माहि द्यालभा। संयटिलयूदभा। मूल गानी माटी अत्र न॥ ॥ कत्रिकत्रि कटली यहत्र ३  
 किहं मडा कालेय सयूट की दभा। सूकावभा नवसु कियत्रिय कहां॥ अत्र वालु कां गत्र रावभा। अग्निष



[illegible]

यत्रि (अ)डी २ द्यालनी। कला ॐ स्था हला वला। जवगमत्रि सी हा ॐ। रागु पात्राह त्रिहाला। पांके पाली ६ ॐ ह्रीं ठीका  
मूष मूदला। लेयू दला ॥ मटी २ ॐ सी। सर्व अग्निदिन पांय दली। पांके स्वाग सी गल कत्रि डला २ दला। दही कयज  
महि द्यालिनि याउली ॥ पाली काटि। गत्रला। पांके ॐ वाधिहि दही अत्रव गत्रव कयजामहि वाधला। वादः  
डी कत्रि सानिकत्रि। अत्रला डयला महियवावाला ॐ सशगतिवा २० दही की पूट दली। यवावला स्वागः  
सी गल कत्रि डला २ दला वगत्र सिधिहा ॐ ॥ ॐ निर्वगत्र विधि ॥ ६ ॥ ॥ व ॥ ॥ अथ गांवा मात्रलः  
विधिलिखन ॥ गावाकाय गुरु अत्रला गम मूगु पाली। खत्री लला ॥ ॐ कत्रि कत्रि कत्रि निहं माहि गावाका  
यगु द्यालित्र आवला अग्नि यह २ दली। पांके अं विलीका यगु माहि गावाकाय गत्र आवला अग्नि यह २  
दली। पांके आवला माहित्र आवला अग्नि यह २ दली। पांके काकि अत्रवात्री लला महि वाधलादि ॥ या  
ये गंधक दली यां गांवा की वत्राव त्रिलला गंधक पी त्रि डयना गली धनला हकी कत्रि ॥ या वासपट माहिः







वलवात्रशयावमलसिलसीसागिहअर्धमलसिलकीवनावनिसहागी।सहागमलसिलपीसिनन्हा  
 कत्रल्लायायेसीसागीकनामहिद्यालिगलावल्हामलसिलसहागकीवकीदवाकत्रोल्लकतीवीजवीधि  
 कत्रिचीनजकवात्रिगिप्रिस्थाअन्नसम्योरुवे।वीनजसाहलावे।जवनालीरुसहा॥।नवनालीहला  
 वे।जववकीद॥संपठे।नवयायेकात्रिकात्रसद॥केडहीचत्रजसापुहत्र२गुह्रीत्रगठ॥।जवम  
 न॥नवयायेपुहत्र२अग्निद॥।उपत्रिचकिराषलवठेनाही।स्वांगसीनलहा॥।नवडलात्रल्लानाग १०  
 सिद्धि॥ ॥॥निसीसामात्रलविधि॥२॥व॥ ॥अथनागसुत्रमात्रलविधिलिखन॥सीसायावापा  
 नापावअधाहंठीमहिद्यालिसीसासोगले।जवसीसागसेलेनवयावाविटकाये।पायेकवात्रिकात्रस  
 द॥कला॥सीसात्रगठ॥।जवहंठीमहकासीसायात्राहसहा॥।जवहंठीकावात्रमूदे।वालियालीद॥॥  
 माटीन॥कालपूद॥।पायेअग्निपुहत्र२कीद॥।पायेस्वांगसीनलहा॥।नवडलात्रासिद्धिलवकि॥ ॥

॥निनागसुत्रविधि॥१०॥व॥ ॥अथषपत्रमात्रलविधिलिखन॥जसपाव१हटकतीयावअधसा  
 नापावअधासात्राहटकतीपीसिनकीकत्रली॥कणि।गीकत्रीमहिद्यालिजसगलावल्हा।पायेहटकती  
 कीवकीद॥कठकीसनीत्रगठ॥।पुहत्र२अग्निद॥।जवजसुमत्रिलसहा॥।नवस्वांगसीनलकत्रिड  
 लात्रल्लाषपत्रसिद्धि॥ ॥॥निषपत्रविधि॥११॥व॥ ॥अथनित्रासजसमात्रलविधिलिखन॥लाहक  
 पाकुमहिद्यालिका॥लहकीअग्निउपत्रिवरावल्हा।पालसाधवल्हा।लाहककला॥सीसात्रगठनायती।  
 नककीअग्निशांमत्रिलसहा॥।नवडलात्रल्ला॥पीसिकपठकावकत्रल्ला।नवाकारि।गत्रल्लाअजनाधिः  
 हा॥ ॥॥निउषदहविनाजसमात्रलविधि॥१२॥व॥ ॥अथ हविगेत्रीत्रसमात्रलविधिलि  
 धन॥।नावात्रसाही२गीउषत्रसाही२सीसात्रसाही२जसुसत्रसाही२यात्रात्रसाही२आवलाः  
 सात्रगंधकसत्रसाही२यात्रावाहत्रिचक्रातद्रकायकत्रल्ला॥यात्रावंधककजलीकत्रल्ला।पायेसंप



एकत्रला। यगुंरुकोकजलदला। संघटमाहिधत्रिके संघटकोलंयुदलासूकावला। अत्रलडयलंकीअः  
 निशांगजपूटमात्रला। अग्निपुहत्रकीदली। स्वांगसीनलकत्रिउतात्रला। चांदीहाः। पीसिल्लीसिः  
 द्विकहीन॥ ॥००॥ निवांगहत्रिगेत्रीनस॥ ३॥ वा॥ ॥अथषयत्रेस्त्रमात्रलविधिलिखन॥ अस्तुया  
 वापागयावआद्य॥ अस्तुकायगुकात्रिनहाकाटला। गंधकयाव। अस्तुयात्रागंधकूषत्रलला। पावेपुहत्रन  
 कायर्जक। कवात्रिनसदः। षत्रलेसूजपूटदः। कत्रिषत्रलेदिन। ३००॥ वा॥ पावेसीसीलत्रदी। सीसीकोकय १८  
 उलयनदला। माटीमालयदला॥ अथसीसीकीमूडा। मटीमूलतानी। लाहचूर्नचूर्नागुठकाथचूर्नीसममा  
 ताकत्रि। नकत्रिगमः। ककथेदधमाहिषलला। कूटलायहलं३॥ नाः। सीसीकेमूहिठटाः। वकायठिकः  
 त्रिदः। निस्तुयत्रिमूडाकालयदः॥ पावेसीसीसूकावे। वालुकायगुवरावेअग्निपुहत्र३२कीदः।  
 स्वांगसीनलकत्रिउलात्रे। षयत्रस्त्रसिद्धिहाः॥००॥ निषयत्रस्त्र। गांवाताला। महिमासा। दः॥ नीसिधि

हाः॥ ॥००॥ निक्लंकसिधि॥ १०॥ वा॥ ॥अथहत्रिगालमात्रलविधिलिखन॥ हत्रगालवाषीकाय  
 गुआलिकयठामहिवांधे। अलजगुहंकरः। पुथम। गममूमहिशावेपुहत्र२पावेलाहसिंयालम  
 हिशावे। पुहत्र२पावेपथमहिशावेपुहत्र२। पावेगमः। कादधमहिशावेपुहत्र२पावेकंवात्रिकाः  
 वसमहिषत्रलिटिकठीवांधली। पावेयालासकीनाषमहियवावली। हांठीमाहिपावेववूलकीअः  
 निपुहत्रकीदली। ४पावेकुलीकदधमहिशावेपुहत्र२। स्वांगसीनलकत्रिउलात्रेहत्रगालसिधि॥  
 ॥ ॥००॥ निहत्रगालविधि॥ ११॥ वा॥ ॥अथगालस्त्रमात्रलविधिलिखन॥ पात्राटं१०मूहत्राटं१०अं  
 वलासात्रगंधकटंक३०॥ हत्रगालटं४०॥ गांवामासाटं१०॥ नसर्वधानः। ककत्रि। आककीदधमाहिषत्र  
 लकत्रला। पूटअर्कदधकीसागा। नसूजपूटदः। कत्रिपूटदः। पावे। आहत्रिकदधकीपूट२दः। पावेकंवाः  
 त्रिकीपूट३दः। सूर्यपूटदः। टिकठीवांधली। पावेयालासकीनाषकासपूटमाहि। वालुकाजगुवराव



॥ अग्निपुहत्र ३२ दली ॥ खागसी गल कत्रिड लात्रे, गाल खत्र सिद्धं रुवनि अग्निउ पत्रिधने धुवाड (०) नो कवा  
 त्रिकीपूट १ दंली ॥ यरावे, अग्निपुहत्र ३२ दंली ॥ गाल खत्र सिद्धि ॥ ॥ ॥ निताले धत्र मात्र लविधि ॥ ॥  
 ॥ व ॥ ॥ व ॥ ॥ व ॥ ॥ अथ यथ मत्र ससिद्धं यत्रा मात्र लविधिलिखनं ॥ ॥ पार्श्वे १ गंधक आ  
 वला सात्र १ हत्र गाल टं १ मलसिल टं ३ पात्रा की का वली उ नात्र ली ॥ यथ मंटा पा हा मे घत्र ले पुहत्र २ यावे  
 या ली सा (अं लं) पावे कं वा त्रिकात्र स महिषत्र ले पुहत्र २ यावे या ली सा (अं लं) पावे हल द म हि ष  
 त्र ले पुहत्र २ या ली महि (अं लं) पावे सु ठि मा हि षत्र ले पुहत्र २ (अं लं) पावे नी वू कत्र स मा घत्र ले  
 पुहत्र २ (अं लं) पात्रा अक्का हां का वली उ लात्रे पावे पात्रे अत्र मा ल सिल ह त्रि ता लं क क त्रि षः  
 त्र लि क त्रि व टी वा ध ली ॥ पावे गंधक दंली क ज ली क त्रि ॥ क श ली क त्रि सी सी रु त्रि ॥ सी सी के क प ठ लं प १ दंली ॥ पावे  
 सी सी के म हि ट का ठ टा दंली उ ट ल पू दी ॥ म टी मू ल गानी ॥ ला ह दू न दू ना गु ठ का थ मे दा नं ॥ न त स म

लागं क क त्रि ॥ पी सि न ह क ल य हत्र ३ कूट ला पावे सी सी के दा ट लं पू द ला सी सी स का वली ॥ पावे वा नू का  
 अं रु व रा व ला दी य अग्निपुहत्र ३२ की दंली ॥ पावे री ड लात्रे, घत्र ल मा हि गंधक सूत्र नि क त्रि वि वा त्रि क त्रिः  
 (अं लं) सा दंली ॥ सी सी ल त्रि मू षि दा टा दंली ॥ उ प त्रि मू डा दंली ॥ वा लू का अं रु व रा वे अग्निपुहत्र ३२ की दंली ॥  
 खागसी गल कत्रिड लात्रे अहि य त्रि वा त्र ३ य रा व ली ल त्रं ग ना थ का प रु पू ज ला त्र स सिद्धं यत्रा सिद्धि क ही  
 या ॥ अ नू या न ॥ ल डं न अ ला वी ॥ ॥ ॥ रु स ह त्र नी ॥ का टी की दंली ॥ हां की की आं ह ल जा व ली सा धि त्र नी आ  
 ध ॥ दंली ॥ ॥ ॥ नि त्र स सिद्धं यत्रा मात्र लविधिलिखनं ॥ ॥ ॥ ॥ व ॥ ॥ अथ यत्र स क पू त्र या त्र मात्र  
 लविधिलिखनं ॥ पात्रा ग ह न सी वे (०) स त्र १ पात्रा की कू वा त्रि की पूट २ दंली ॥ पावे (अं वं) ह ल सी का त्र स की  
 पूट २ दंली (अं लं) सा ग त्र का त्र स की पूट २ दंली (अं लं) काली त्रि य पा ट ली का त्र स की पूट २ दंली पावे  
 (अं लं) आ म दू का त्र स की पूट २ दंली (अं लं) अ त्र उ की पूट २ दंली (अं लं) अथ पात्रा की मे ली ली ॥



श्रीवलासात्रगधकपात्राकीवरावत्रि। लक्ष्मीमलसिलकनत्री टं१० सामत्रगधकटं१० हनरात्रवगदादी  
 टं१०७ करुकरिसर्वशुद्धलसीकात्रसमाहिकजलीकत्रोद्यती ३ नां०। सीसीकोवजलयदीजे। कपठाग  
 त्रिकालय १ सागदीजे। सूकावली। पांके सीसीरत्रली। सीसीकेमहि०० टकाठराद००। मृहिसीसीकेवजलय  
 द००। कलीवृनाकाथलाहवृनल्लवषात्री। गुठमूलगानीमटी। सममागालेली। निहहिस०० घालिकूटली  
 पुहत्र२नहीकरली। सीसीउयत्रिनिहकालयद००। सूकावली। पांके वात्रकाजं गुवराव००॥ अग्निपुहः २०  
 न३४ कीदली०० कनात्रअग्निदली। सांगसीगलकत्रिउल्लोत्रे। नसकपूत्रपात्रासिधिलवंग। अला०० वी। ज  
 ०० हल। जावलीकेसत्रि। सममागालेली। अत्रनसकपूत्रपात्रात्रलाव००। नकअउषधकीवरावत्रि। पीः  
 सिपूठीवाधली॥ ॥००॥ नित्रसकपूत्रपात्रासिधि॥ १८॥ ॥ व॥ ॥ अथत्रसमालिकपात्रामात्रल  
 विधिलिखत॥ पात्रापात्रा। आवलासत्रगधकपात्रा। मित्रयपात्रा। यहिलेपात्राउज०० लक्ष्मीउवत्रजंग॥

पा० पात्रामधकमित्रय। नीना०० कजिकत्रिषत्रलेपुहत्र२नां००॥ पांके सीसीलत्रली। सीसीकोकपठलपा०  
 द००। माटीसी। सीसीकेमृहिकजलयद००। मूलगानीमटी वृनां००॥ त्रेलाहवृनाकाथमेदा। नकरुकरिषत्रल००॥  
 सरुमागायहिलो००। टकाठराद००। पांके सीसीकेमृहिकजलयद००। सूकावली। पांके वात्रकाजं गुवरा  
 व००। अग्निपुहत्रा३ कीदली। सांगसीगलकत्रिउल्लोत्रे। नसमालिकपात्रासिधि॥ लडंगजा०० हलजावली  
 ०० ला०० वी। पात्रासममागालेली। सांगीकी॥००॥ नित्रसमालिकपात्राविधि॥ १८॥ व॥ ॥ अथत्रसत्राकसपा  
 त्रामात्रलविधिलिखत॥ पात्रासत्राध॥ कात्रिष्ठाषत्रलेपूट०० द००॥ सूरजपूटलेंद००॥ २ पांके कालीपयाट  
 लिकात्रसकीपूट००० दे। सहद०० कात्रसकीपूट०० द००॥ उगकीपूट०० द००॥ संपादुलीकात्रसकीपूट०  
 द००॥ वाकनाकात्रसकीपूट०० द००॥ आमत्रकात्रसकीपूट०० द००॥ दधीकात्रसकीपूट०० द००॥ सागत्राका  
 त्रसकीपूट०० द००॥ सूर्यधवावत्रीकात्रसकीपूट०० द००॥ उलसीकात्रसकीपूट०० द००॥ विसवयत्राकात्रस







ॐ सांगनाकात्रसकीयूट १ द० ॥ याचु कावानिकात्रसकीयूट १ द० ॥ डंगकात्रसकीयूट १ द० ॥ खुलसीकात्र  
सकीयूट १ द० ॥ सूर्ययूट १ द० ॥ या० सीसीरुत्रे, कालीमटीक घठाकलय १ द० ॥ सुकावे ॥ सीसीका ० ॥ टीका ०  
० घठिक त्रिद० ॥ हं ० मूडाकालयू द० ॥ यावेसू कावला ॥ यावे वालुक मगवरा वला ॥ अजियहत्र ३४ कीः  
दलीखांगसीनलंक त्रिडला त्रिल० ॥ नसक जलसू सुगुयात्रा सिधि ॥ २१ ॥ वा ॥ ॥ अथ यत्र रससू गुयात्र  
मात्र ० विधिलिखना ॥ ॥ यात्रा याव १ गंधक श्रीयला मात्र याव ० ० ककु कत्रिकली कवला ॥ नीवूकात्रसकीः २२  
यूट १ द० ॥ सूर्ययूट १ द० ॥ याचु खुलसीकात्रसकीयूट २ द० ॥ कात्रिकात्रसकीयूट २ द० ॥ सांगनाकीयूट २ द० ॥  
कालीवित्रयाटविकात्रसकीयूट २ द० ॥ आधमायुकात्रसकीयूट २ द० ॥ किर्गंधवीवयी कीयूट २ द० ॥  
सहद० कीयूट २ द० ॥ जलिरंगुवठाठे मेम मूडा द० ॥ अथ मेम मूडा ॥ मेम सत्र २ ॥ यमक यगु सत्र ॥ आः  
धगुलनिका दध सत्र न काला हवुर्ल सत्र आध ॥ न ककु कत्रियाणी कूटली दिन ३ गीः ॥ याव ० ॥ गलाकत्र ० ॥

पावे। गलायालीकामाटमहि यवावे। अवनोः। पालीडयत्रि। त्रिवाकत्र। अवनोः॥ अग्निदः। अवनलेवेसः॥  
 तवअग्निनदः। तवमे। मूडासिद्धिहाः। सवहमूडायात्रवहाडो। अग्निपहत्रयोसठिकीदः॥ ३६॥ दली॥  
 स्वांगसीतलकत्रिडकात्रे। रसमूगपात्रासिधिकली॥ ॥॥ निरुसमसमूगपात्राविधि॥ २१॥ व॥ ॥ ॥  
 अथहममात्रलविधिलिखन॥ हमकायककत्रलमीं। सीगीकात्रसमीं। हिक्मावेवात्रनयावे। श्रीवलासात्रगंधक  
 वत्रावत्रिलः। तलेडयत्रिदः। अवासंयटकत्रे। संयटिलयूदः। सूकाः। कत्रि। गत्रयूटअग्निदः॥ अत्रलडय  
 लाहकी। अग्निपहत्रकीदः। स्वांगसीतलकत्रिडकात्रे। सिद्धिहाः। अकदाविनूयामात्रे। सीविधिमत्रः॥  
 ॥ ॥॥ निहमत्रयामात्रलकीदानाकीनकेविधि। नकेअनूयान॥ २२॥ व॥ ॥ अथमृगंकमात्रलविधिलिख  
 न॥ हमनाले। सीसा। ना। ले। ग। वा। ना। ले। ग। वा। का। संयटकउवेः। तलेरुत्रल। संयटिलयूदः। संययं। टकउय  
 ले। पाटिकु। ककत्रल। नि। सर्वकषीयकत्रिहमगालिकत्रिडकात्रे। ॥॥ सविधिवान॥ ३६॥ आवला। पा। ०। ना। वा



वात्र ३०० सविधि वृजावत् ॥ पाठे सीसी वात्र ३०० सविधि वृजावत् ॥ पाठे नीगावत् ॥ कठिक विगले पणः +  
 कत्रेयुः आवत्ता सात्रगं कपण्डू कीवत्ता वत्रिल्ली ॥ गंधक पण्डू के नले ड पत्रिधने धावत् संपट माहि धनेगः  
 गपूट अग्नि पहर धकी दली ॥ खांग सी नल कत्रिड लात्रे ॥ ॥ ॥ निमृगं कसिद्धि ॥ २३ ॥ वा ॥ ॥ अथः  
 पायठी सात्र मात्र विधिलिख्यता ॥ सात्र लीजे ॥ गम मृग सत्र १० ॥ माकूं ठावत् ॥ निह मृग महि सात्र वृजावत्  
 का ॥ लह की अग्नि महि ना ॥ गा ॥ वृजावत् ॥ कसी स अत्र गंधक सात्र के लयट ॥ ॥ कण कत्रिको पाठे अग्नि  
 माहि नावत् ॥ पाठे वृजावत् ॥ गम ॥ क मृग माहि पायठी पठ हि सल ॥ ॥ सविधि सात्र मोत्रि ॥ पाठे डीत्र पट  
 द ॥ ॥ यथ म अक का दूध की पट ३ द ॥ ॥ अहत्रिका दूध की पट ३ द ॥ ॥ पाठे क वात्रिकात्र सकी पट ३ द ॥ ॥ पाठे  
 १० अनात्र कात्र सकी पट ३ द ॥ ॥ पाठे माड कात्र सकी पट १ द ॥ ॥ पाठे यवी मृग की पट १ द ॥ ॥ अग्नि पट द ॥  
 कत्रिड कठी कत्रे पट अग्नि पत्रो खांग सी नल कत्रिड लात्रे पायठी सात्र सिद्धि हा ॥ ॥ ॥ निपायठी सा

२३

वविधि ॥ २४ ॥ वा ॥ ॥ अथ नहन सी यात्रा मात्र विधिलिख्यता ॥ पात्राट १० आवत्ता सात्र गंधकट १० अक का  
 संपट कवावत् ॥ निह माहि पात्रा संपद कवात्रिकात्र ससात्रे ॥ संपटिल पद ॥ ६० मडाका ॥ पाठे संपद द  
 डी माहि धत्र ॥ हां डीत्र नसात्र ॥ हां डी का मृष मृ द ॥ ॥ अग्नि पहर ॥ आ० की द ॥ ॥ खांग सी नल कत्रिड ला  
 त्रे ॥ यात्रा नहन सी सिद्धि हा ॥ संपट निह ड लात्रिल ॥ खन गा निहा ॥ लव ग ॥ ला ॥ वीजा विगी जा ॥ ॥ हला  
 यात्रा सल मात्रा लसा ॥ अथ वायु उर्जा विना पात्र नह माहि सा ॥ ॥ ॥ निनहन सी यात्रा मीत्र विधि ॥ ॥  
 वा ॥ ॥ ॥ नि अक्षर मात्र विधि संपुल मृ स मा फ म ॥ २५ ॥ वा ॥ ॥ अथ यथ म सात्र अनूपान वि  
 धिलिख्यता ॥ अकत्र काट १ मित्र चट १ पीयलिट १ सूठि ट १ क १ घना सानी अजवायलिट १ मालका गुलीट १  
 जा ॥ ॥ हलट १ जाविगीट १ लडंगट १ अला ॥ ॥ वीट १ कनक वीजट १ समुद हलट १ विगुं केट १ वीय विडंगट  
 १ नजट १ घणुजट १ सर्व डषध निह सात्र मात्रा ॥ अक्षर लसा ॥ सर्व न कण कत्रिक पठ कुल केत्रे ॥ सह नसा ॥ गोली



वां धी वरगु० ली पुमा लाया न सम य दि न यु नि (ग म ली १ षां०) रा ग वि वा त्रि क रि अ थ रा ग स स्त्री जां०॥  
 भी ला जां० सी की जां० ३ पी ल क जां० ४ व र जां० न क य ल वं जां० ५ स नि पा न जां० न क हा द व र वाः  
 ६ जां० ७ ट ल क वां जां० ८ सा स्र व र ना व हं० १० सी नां ग जां० ११ सी न य का य जां० १२ हा थ या व र्ही ये न ना  
 व ह १३ ०० स्त्री की य सु नि का स्र वा रा ग जां० १४ स र्व वा य र्हा हि अ थ य थ मा ० की दा लि वा व ल द ला अ थ वा  
 (रं) गे व ल की रा टी द र्ही ष ट व या ला न द ला ॥ ॥ ०० नि सा व र्नु पान ॥ १॥ व ॥ ॥ अ थ सा व र्नु पान ॥ २४  
 न वि धि लि ख नं ॥ ल डं ग टं १ अ लां वी टं १ जां० ह ल टं १ जा वि नी टं १ सु णि टं १ मि त्र य टं १ पी य लि टं १ न ग टं १ यः  
 न ग टं १ स र्व ड ष ध नि रु ह नी य रा ग सा व र्नु पान ला व ला स र्व क र क रि स र्व व र्नु की व रा व रि मि धीः  
 म ल ली ॥ पू ङी क रा वा ग म ली क री टं ३ य रि मा ला या न व ला स र्व य न य थ म अ व च्छे टा का ० स र्व हां १ स रीः  
 व की पी ल क जां० १२ ॥ वा य क सा ल जा हि ॥ ३॥ जाला का दा ष जां० ४ स नि पा न जां० ५ ष २० जा हि कु ड द

त्रयाधि१० जाहि न कउनासीर ४ वायगाहि र वीरुद्विहा ॥ रेखउवखे १० वलवृषिहा ॥ नयूसकरुः  
 लाहा ॥ १२ अथयथादूधयानरागीकोयवावली ॥ रागीकोदालिरानदक्षषटावयालाविवर्जयता ॥  
 ॥ निसात्रखत्रअनूपान ॥ अथवंगअनूपानविधिलिखता ॥ ॥ ॥ ला ॥ बीरुगिला ॥ ॥ ॥ गिलागीन  
 रं ॥ वंगसर्वउषधनिहाअक्षत्रलावक्षासिध्रीसर्वनिहद्वलीनककुक्रिपीसिपूठीवीधली ॥ वनरु० लीप  
 त्रिमासादिनयतिपागवलाहकत्रोनिवर्जगनिहंक्षगहा ॥ १ यमहजाकत्रहे २ विलगीयायमहत्रः  
 हे ३ उदत्रतफिमिटे ० क्षहा ॥ नवलपूछिहा ॥ ३ अथयथावीवलदालिलक्षा ॥ अथवामसीनाटी ॥ न  
 लनषाक्षाषटावयालानषाक्षा ॥ ॥ ॥ निवंगअनूपानविधि ॥ ३ ॥ वा ॥ ॥ अथवंगअनूपान  
 नलिखता ॥ लवंगी ॥ ॥ ॥ बीरुगिला ॥ ॥ ॥ हल ३ जाविनी ॥ ५ सममाकुलली ॥ सर्वनिहहनीयरागवंगअनूप  
 नकक्रिकत्रेसिध्रीसर्वनिहद्वलीसिध्रीमिलावक्षा ॥ ककुक्रिपीसिपूठीवीधली ॥ ३ यत्रिमासायागवलाः







२०  
 १५  
 १०  
 ५  
 ०

रविकीजठ १० कंद्वारा २५ हवा की वीज २० गंग नूवा का वीज २१ जाळ हल २२ सिंधव २३ हाठ गी २४ काकडाः  
 सींग २५ लंगर २६ निवत्र सागुठ २७ जीव दाना २८ विरुक्त ३० लाळवी ३१ नज ३२ पगुज ३३ नाग कंगरिः  
 ३४ साठी कीजठ ३५ गज पीयलि ३६ उदाष ३७ हहावा ३८ वसलावन ३९ कडंय का वीज ४० सीवल कीजठ की  
 कालि ४१ जिहला ४४ कंसत्रि ४५ सर्व उषध पीसिक यत्राल कवली ॥ सर्व उषध हि निह मूरु क व उर्थ ४६  
 गत्र लावला ॥ सर्व मूरु उषध निह व उर्थ गुली मीठ मीलिया त्रिक नः ॥ सर्व उषध दद्यां बिलिं गमली क व उर्थ क  
 पत्रि माला ॥ पान वला गमली ॥ घाळ ॥ पथ मक्षान वृद्धि हा ॥ १ सत्री न की पील क जाळ २ वाळ जाळ ३ पूछि हाळ ४  
 कंदय वृद्धि हाळ ५ मूरु न हाळ ६ काया कल्या हा ७ सत्री न के विषे लाली हाळ ८ वाळ जाळ रे सी नाग जाळ १० वृक्ष  
 नय काय हाळ ११ सत्री न विषे सह १ गुल क ने २ सर्व नाग जाहि ३ यथ राग दालि लेला ४ घटा वया ला नावला ॥  
 ॥ ॥ कि मूरु क मूरु दयान ॥ ॥ व ॥ ॥ अथ नाग मूरु दयान विधिलिख्यते ॥ वासा कापी नाह म्यादी जळ न

२३

१०  
 ५  
 ०

गी १ माया सीसा मोत्र क पी नी जाळ दिन ४ रे जाव नू सिहाल कायाना ह म्या र नी १ दोजे नो क पा कल्या हा ॥ दिन ३ ३  
 याव नाना गयं कुं म्या दी जळ न १ मोक्षान वृद्धि हा ३ जिहला म्या दी जळ न नी १ मो दिन ४ याव नू ४ कूरु जाः  
 ॥ ४ ॥ कडु र्ज निष्ठा दी जळ न वी १ मो कंदय वृद्धि हा ५ ह न गाल का स न म्या की १ दळ ना ठल क वाळ जाळ १ दि  
 न सा न जाव नू लव ग म्या दळ न नी १ मो विस्त्रिका जाळ दिन ३ याव नू ॥ मूरु लू की कालि म्या दळ न नी १ मो सूवा  
 नाग जाळ दिन १० याव नू ॥ सिला जी न मिश्री म्या दळ न नी १ मो मूरु १ ४ पुम ह थं रु हि दि २ याव नू ॥ मय ह सी  
 पा ह के सा व ल हा ॥ पुक्षन ध न नाग की र साधे सर्व गं सु नू सर्व नाग जाहि ॥ कडु र्ज निष्ठा पुहा न व ला न नी  
 १ पत्रि माल सर्व द्या धि जाहि १ वीज वृद्धि हा ॥ मूरु ल वृद्धि हा ॥ वृक्ष ना सी वाय जाहि ॥ यथ नागी का सुध मा ०  
 की कालि हागी की कालि हा गा म धूम की पाटी ॥ कूरु की मूरु म मूरु ल व ल द ला ॥ ॥ कि सी सा का मूरु दयानः  
 ॥ रे ॥ व ॥ ॥ व ॥ ॥ अथ नाग मूरु दयान विधिलिख्यते ॥ लव ग १ लाळवी २ जाळ हल ३ जा विनी ४ न







ॐ ॥ वाक्कली वायवा ॐ ॥ लालीया वा ॐ ॥ ३ या ली पठना त्रहे ॥ सवल वा ॐ ॥ ४ नरु ह का सर्व वाग जा ॐ ॥  
 ॥ ॐ नि नि रा स ज रु अ न्न यान ॥ १२ ॥ वा ॥ ॥ अथ यं वाग ह त्रि (ग म त्री त्र स अ न्न यान वि धि लि ख्य त ॥ काली  
 मूसली १ ख न मूसली २ की व का वी ज ३ ड ट ग ल क वी ज ४ माल क गु ली ग सी व ल का र्ग ५ ६ सी व ल की क्कालि १ नाः  
 ग क ल त्रि ८ जा ॐ ह ल रे जा व नी १० न ज प रु ज १२ ल व ग १३ सर्व ड ष ध स म मा ल ली सर्व ड ष धी नि ह रु नी य  
 हा ग ह त्रि (ग म त्री त्र स मि ला व ला १ क रु क त्रि चूर् न क त्र ल स र्व नि ह रु ली मि धी म ल ली १ क रु क त्रि प ठी वा ध २  
 ली ट ३ अथ वा (ग म ली वी ध ली ट ३ य त्रि मा ला या न स म य रु क य न १ प थ म धा न वृ धि हा ॐ १ व ल वृ धि हा ॐ २ वा  
 ॐ घ ट ३ का म वृ धि हा ॐ ४ ग जी र्ण रु न हा ॐ ५ (ग म ठ दू ष ग त्रे ३ स त्री त्र की सर्व वा धि जा हि १ य थ ष ट व या ला र्ग  
 ष ल ह त्रि (ग म त्री त्र स अ न्न यान ॥ ॥ १३ ॥ वा ॥ ॥ अथ ष प त्र स त्र अ न्न यान वि धि लि ख्य त ॥ ष प त्र स त्र त्र नी  
 य त्रि मा ल ना ग प रु ल स ह रु क य न १ रु रु प थ म धा न वृ धि हा ॐ १ म हि षी उ ल्प व ल हा ॐ १२ स्त्री व रु ग ह स्था र्गः

२८

ग क त्रे ३ सर्व वा न न स्य नि ४ रु था द न स नि या न न स्य नि ५ यि रु ४० न स्य नि ५ ड द त्र वा धि १० न स्य नि ५ वि ग नि  
 ५ लू षा न स्य नि ५ पि न स न स्य नि ६ स र्व पि न ज्ञान स्य नि ७ य थ रा गी की माली दो १ वारा न दालि १ रा गी का भा ० की र्द  
 लि ष ट व या ला न रु क य न १ ती वा ना ला १ नि ह म हि ना वा ग ल्या म हि र्ण क ल क मा सा १ मि ला वे नो पी नि रु व नि ॥ ॥  
 ॐ नि ष य त्र स त्र अ न्न यान ॥ १४ ॥ वा ॥ ॥ अथ ह त्रि गाल अ न्न यान वि धि लि ख्य त ॥ ह त्रि गाल त्र नी १ जा रा स नी  
 दी ज ॐ नी त क पी न जा ॐ दि न ४ रे या व न १ य थ नू षा अ लू षा व ला द ला षा ठ स नी दी ज ॐ त्र नी १ ती वा ॐ श त्र  
 जा ॐ १ ल सी का त्र स स नी दी ज ॐ त्र नी अ ध नो पि रु क त्र जा ॐ १ ना ग प रु ह स्था दी ज ॐ त्र नी अ ध नो ट ल क वा ॐ  
 ना ग यं रु ह स्था दी ज ॐ १ अ ध गि जा ॐ १ रु व को य थ दू ध रा ना अ र्द्ध गी की रा न दालि ॥ ॥ ॐ नि ह त्र गाल की ३  
 अ न्न यान ॥ १५ ॥ वा ॥ ॥ अथ गाले स त्र अ न्न यान वि धि लि ख्य त ॥ गाले स त्र त्र नी १ ना ग प रु ह स्था दी ॐ दि न ४  
 या व न १ वा ॐ रा ष ली क रु जा ॐ १ य थ नू षा अ लू षा व ला अ थ वा मा ० द ला क रु अ रु द न १० जा हि १ व हा नी र्ज ॐ



२२

[illegible]







धनिह ननीयहाग ३ ह म म ल यो धा न क णि क त्रि पा सि पू ठी वा ध णी ॥ त नी ४ या त्रि प मा ला पा न वे ला रु रु थः  
 ता प थ म अ र्ध गि जा ॥ १ आ त्रा जा ॥ २ क य ल वा य जा ॥ ३ वि न त र्म स र्व अ र्ग की पी ठा जा ॥ ३ का या क ल्य हा ॥  
 ४ क्षा न वृ धि हा ॥ ५ का म वृ धि न जी वृ धि हा ॥ ६ वा ॥ जा ॥ ७ इ क्षा हा ॥ ८ स त्री त की स र्व या धि जा हि रे न त्री त  
 प त्र म त्र सा दा लु हा ॥ १० प थ दा लि हा न वृ षा द णा सा ना त्र पा की न क ॥ वि धि दा ना का न के अ न्न पा न ॥ ॥  
 ॥ नि सी ना त्र पा की न के वि धि नि स का अ न्न पा न ॥ २३ ॥ ॥ वा ॥ ॥ अ थ मृ ग र्म क अ न्न पा न वि शं धि लि ख्य  
 ता ॥ स र्व ग १ अ ला ॥ २ जी ॥ ३ रु ल ३ अ वि णी ४ न ज ग य ण ज उ ना ग क ण त्रि न या र्ण यी नी ४ वा व वि ॥ २ स र्व उ ष  
 नि ह य उ र्ध २ ४ हा ग मृ ग क मि ला व ल ॥ क णि क त्रि पी सि पू ठी वा ध णी मा सा अ ध य त्रि मा ला पा न म्हा षा णी ॥  
 पा न स म य षा णी ॥ प थ म षा सी जा ॥ १ क रु जा ॥ २ अ र्ध गि जा ॥ ३ रु णी जा ॥ ४ ॥ स्त्री की प स्तु नि का सु वा ना ग  
 जा ॥ ५ वि स्त वि का जा ॥ ६ कू र्ज जा ॥ ७ पु थं म ह १ ८ पि ल ४० ॥ १२ ॥ २० ॥ नि १ ३ ५ द न वा धि १० ॥ न स र्व ना ग जी हि

३१

का या क ल्य हा ॥ ॥ नि शं अ र्ध धा न मा त्र ल वि धि नि स का अ न्न पा न स र्व पू र्ण ॥ २४ ॥ ॥ वा ॥ ॥ वा ॥  
 जी ठा वि धि ॥ अ लु पे स ग पां व रु त्रि अ र्क क्षी त मा व मा वे वा न २ १ रु नि डो न दू ध म लि म लि व मा वे वा न २ १ सी  
 धी का यू ना अ ल अ क क दू ध म हि रि ग वे वा न १ मू का वा व दू ज लु वू न के वी वि द ॥ १ यू ना उ प त्रि न ले द  
 ॥ के उ य के ल्या मा रु के सी न ल क त्रि ल ॥ १ रु ना ला १ पा ना मा सा १ कू र्ज ती म हि न ल क दू वा म लि या ना ज रु  
 का र्म १० ॥ उ न नी वां दा मि ला वे वा षा हा ॥ १ रु क का जि वां वे रु क ठी वृ र्ज त्र व ना ॥ के जी वे ॥ ॥ नि ॥ ॥ वा ॥ ॥  
 अ थ तां वा मा त्र ल वि धि लि ख्य ता ॥ १ रु ह उ स त्र सा ही नां वे क प रु क रु क व धी क ना वे ग द ह पु ना १ ग ल १ अ व ली  
 प रु १ ग म मृ ग १ न ल १ म भ १ म वा १ का ग जी नी वृ न वा त सा न सा न व र्मा वे रु त्रि ली वृ त्र स म्हा १ क्ष वे १ ना व की व न  
 व त्रि र्ग ध क नी नू वा १ ना व ने यो थ ॥ या ना १ प णी का पा नी म्हा पी सि ल ग म के क ग ली क त्रि के १ ल ग म वे प णी कां प रु  
 उ य ना ग ली ध रे ही ठी मा हि ॥ उ य नि प णी के पा ला मू षा मा त्रे ॥ उ पा न वा ल स्या रु वे ॥ मू षा क त्रि अ नि द ॥ पु ह न रु



पाठेखीगसीतलकत्रिलं॥ ताषागेयोपां॥ सत्रमालं॥ गावासूत्रमां॥ कुरुकत्रिपीसे निर्मदसंपठकत्रे॥ यात्रि॥  
 वासूत्रमसंपठमाहिदं॥ मूडाकत्रे॥ अग्निमाहिदं॥ संपठलालकत्रे॥ वाललडयत्रि॥ अथनवकाटिलं॥ गांवसूत्रसिधि  
 हां॥ नि॥ गोत्रसंसीषां॥ सर्वयाधिकाहि॥ ॥वा॥ ॥ अथगांवसूत्रअनुपानविधिलिखन॥ सर्वगटं॥ अ  
 लं॥ वीटं॥ जां॥ रुलं॥ जाविगीटं॥ गजटं॥ यगजटं॥ दालयीनीटं॥ अकत्रकनाटं॥ गिहलाटं॥ ३ गिहलाटं॥ ३ वीगाटं॥  
 नकुरुकत्रिपीसे॥ सहनत्रया॥ गमलीवाधलीवत्रकाटवत्रममाला॥ पातसमे॥ गमली॥ यां॥ संधाको॥ गमली॥ यां॥ घटावः  
 यालात्राषला॥ सर्वत्रागनासुगता॥ रागवदुत॥ दुधकत्रवदुत॥ ॥ निगांवाकाअनुपाना॥ ॥वा॥ ॥  
 अथविल्वकत्यलिखन॥ रुषू॥ यदुतथा॥ यदुदनी॥ अमावास्या॥ अशुमी॥ कदिनतलकोटं॥ पातकंसं॥ गिषां॥ वादहः  
 थापठे॥ यलनकयमा॥ यां॥ पहलेदिनदुसरेदिनवहनी॥ वावजां॥ गोसूत्रेदिनरुलीवृद्धिअं॥ यीथेदिनसा  
 सुधात्रीहां॥ ३ यावमेदिनदि॥ ० हानड॥ यजे॥ ० सत्रमेदिनसर्वसामु॥ अवे॥ अशुमेदिनल॥ श्रीपापहां॥ ३ नोमे

३२

दिनअमकुरुहां॥ दसमेदिनसत्री॥ ॥वा॥ ॥ हनगात्रविधिलिखन॥ हनगालनवषीरुठकद्वधमहिषले  
 दिन३सीसीरुत्रे॥ सीसीकोलय॥ उसमटीकदं॥ वात्रजंगुअग्निदं॥ जवगां॥ थां॥ मधू॥ दानिकसे॥ नवगां॥ म  
 षम॥ षष॥ नषे॥ जवधू॥ वां॥ पीननिकसे॥ नव॥ सीसीकेमूहिं॥ ० टीकां॥ ठा॥ दं॥ ले॥ यदं॥ पां॥ ये॥ अग्नि॥ यहन॥ २ दं॥  
 पां॥ ये॥ का॥ गजीनीवृकत्रसमाहिषलेदिन३पां॥ ये॥ सीसीमाहिद्यालिमू॥ दा॥ कत्रि॥ वालू॥ कां॥ जंगु॥ वरा॥ वे॥ अग्नि॥ यहन॥ १२  
 दं॥ सी॥ तल॥ कत्रि॥ ड॥ रुत्रि॥ हनगात्रसिधि॥ ॥ अनुपाना॥ यावला॥ रात्रि॥ पान॥ थी॥ रा॥ था॥ ला॥ ग॥ थी॥ षली॥ सर्वत्रा  
 गनासयगवलय॥ षि॥ दुधवदुतहां॥ ॥ नि॥ हनगाल॥ अनुपाना॥ ॥वा॥ ॥ हनगात्रविधिअथा॥ नक  
 की॥ कली॥ का॥ त्रस॥ सत्रयाव॥ नीवृ॥ के॥ या॥ न॥ का॥ त्रस॥ सत्रयाव॥ नीवृ॥ के॥ या॥ न॥ का॥ त्रस॥ सत्रयाव॥ आ॥ त्रस॥ नि॥ के॥ से॥ ना॥ हो॥ नो  
 अ॥ रु॥ क॥ पा॥ ने॥ मा॥ हि॥ दं॥ के॥ स॥ ठ॥ ना॥ क॥ त्रे॥ त्रस॥ का॥ ट॥ स॥ रु॥ त्रस॥ या॥ व॥ नी॥ नि॥ ॥ हनगालनवषीसत्रसाही॥ अ॥ ००॥ पी॥  
 सि॥ के॥ त्रस॥ मा॥ हि॥ न॥ लां॥ दं॥ हां॥ डी॥ मां॥ हिं॥ अ॥ ग्नि॥ य॥ ज॥ व॥ गां॥ दं॥ ज॥ व॥ गां॥ व॥ स॥ ज॥ लि॥ जां॥ मू॥ डा॥ क॥ त्रि॥ के॥ ले॥ न॥ गा॥ नि



हा०० अन्वयान॥ वावलरुत्रियां नम्यां वा०० ह्रस्वसत्रयावसा०॥ सर्वत्रागगाहि॥ ॥०० निअथसमूहस्रउ॥  
ह्रउसत्रयावर्गगी॥ ह्रउसत्रयावावीगुधलांरुत्रि॥ नूलं संवलयेस॥ रुत्रि॥ काक्किगवीसत्र॥ काक्किमेहः  
नउयकावली॥ वकलूडरुत्रिकेयस॥ ह्रउसहिह्रउरुत्रे॥ वा०० धीवगमवमेयका०० अ०० धीवा०० नगसूल॥  
लाअरुत्रागी॥ का०० इ०० अ००॥ ॥०० निसेपू०॥ ॥व॥ ॥धीधनंनत्रा०० नम॥ लिखितं अ०० नन०० अ०० चिक  
हालका॥ कीकत्रिकलूट॥ काधूट॥ नागत्रमाधूट॥ चित्रलीकवीजट॥ संगमिणीट॥ एकत्रिकत्रिपीस॥ कयउ  
कालना॥ चिलीकइग्वसना॥ गमलीवाधली॥ दहीसनीचसिके अ०० अ००॥ अ०० अ००॥ गोरुलाहा००॥ धूधिका००॥ व॥ ॥  
अ०० वत्रविधिश्रुषिकी॥ स्रमाट॥ मलसिलूट॥ समूहलूट॥ होमसूट॥ मानीट॥ वायवीउंगट॥ नीला॥ थ०० थ००  
॥षयत्रीयाट॥ हटकडीट॥ मृगट॥ लाइट॥ मृवट॥ एक०० यीस॥ मीहीकपठोवा०० नाना०० वकीलकडीमाहि  
येसा०० के०० कांसीकीथलीमहि०० ग०० अ०० य०० ह०० ३०० वासीयालीसनी॥ गमलीवाधली॥ हालायनैलूयठिवा०० ल०० वा००

३३

[illegible]



गमलीवांधलीनेवीपडीहाळंनोदहीकपालीसनीअंजलीदिन३जेवालस्योडीहाळंन॥रागनेकत्रसम्यांअं  
 जेदिन१४जेठलकाहाळंनोवासीपलीसनीअंजेदिन१॥३॥ ॥वा॥ ॥अवत्रअंजन॥वीपापलासहीरां:  
 गत्राववलीकसमाहि॥त्रकयदनूलादत्रसूअंवलसिसमाहि॥अजाषीत्रिसांपीसीयळं॥सूकाळंयनहेवां  
 हागननलायलवाडूठो॥मूलंजनगजाहि॥ठाककायत्रठाटं१रांगत्रकात्रसूटं३कीकत्रिकहलटं१त्रकयद  
 नटं१लादकालेंसूटं३अंवलकात्रसूटं३वात्रीकपीसे॥कलीकदूधसां॥गंलीवाधे॥अंजनूकत्रेआधाहाळंनो॥  
 रुलाहाळं॥१॥ ॥वा॥ ॥धुधिकां॥वठीपीयालिननी॥मित्रवत्रनी॥हवठकवीज॥षपत्रीयात्रनी॥३  
 सिलवनेपीसे॥सहगंधा॥गमलीवांधे॥लावसा॥अंजधुधिकां॥१॥॥॥वा॥ ॥रांगकवीआलिहथसां॥मलिय  
 धत्रुपत्रिनिवाठो॥वालककपसावसाहिद्यात्रनी॥रांगडयत्रियेसात्रगठल॥घटी२हाहावूळीकारुळं॥ललाहा  
 हासूकावली॥वाधिकेउपत्रीनिगाळं॥कधीवेंकीधूमलीदली॥धूपदकेसूकावली॥हाहावठकीमाकदूधमहिरुव

३४

आश्रीविमाहिनियाउला॥आंषिरुलीहाळं॥१॥ ॥वा॥ ॥लालआंषिकाडोषद॥त्रीन॥गससगालआंजिज  
 लावला॥वात्रागषिके॥लाहालली॥कदूवागेलसित्रसमकां॥थलीमाहिमलला॥नलमहिनाषद्यालिनीवकी  
 लकदोमाहिपेसादला॥दिन३त्रगठला॥सिधिराळं॥सीकरुत्रिअंजेदिन१॥१॥रुलाहाळं॥१॥॥वा॥ ॥  
 अंजनआंषिका॥ललीठलकाषाशिसकाडोषद॥कोठीसषकायूना॥कत्रमहिद्यालिनलावला॥रुमकत्रे:  
 कयठळा॥गावाचीउठ३मामीत्रात्रनी२वर्लेदिन३अंजनूकत्रे॥लालाठलका॥धुधिकालाजाया॥अंजनूकत्रे  
 दिन१॥३॥ ॥वा॥ ॥अंजनूकत्रेदिने॥ममवा॥ आंषिका॥नीला॥थाथाटं३गजत्राणी॥हठकठीटं१  
 मिधीकालकीपी०३नीगा॥ककत्रिपीसे॥वकत्रकयसावसाधिअंजनूकत्रे॥आंषिकीलालीवाठलकाजाया  
 सायाकीपीउदळंदिन१॥आंषिदळं॥वांधेपठिवालजाहि॥१॥॥वा॥ ॥दात्रुषात्रवावकी॥हीमअ  
 वी॥नीला॥थाथा२षित्रली३गेकाचीउ४नीवकी॥हीमअं॥वी॥लकठीमाहिपेसाद्यालिनगठे॥मसीकत्रेदिन३



श्रीषिद्धश्रीजेषावावावाकलीवावशांश्रीजदिनगरुलाहां॥ ॥व॥ ॥श्रुजनुषात्रवावकाटं॥महना  
 पीसलश्रु॥०॥गहटकीवनीरुवली॥रुंगत्रकत्रसरुवली॥नाकिनीलाथेथयालला॥निलकेनलकाजलपाठना  
 ॥थलीमाहिद्यसला॥श्रुजनुकत्रलजाहिहां॥॥१॥ ॥व॥ ॥सत्रवादा॥धीउगवा॥सत्रकीजठवीवसाधि  
 वगडे॥श्रुजनुकत्रेदिनं॥हालाशां॥॥१॥ ॥व॥ ॥श्रुजनुध्विजालाटलकाषावावाडवाजका॥सथइहट  
 कठीटं॥समूहहलटं॥गंनटं॥महदीयासुदानाहिं॥गहं॥क॥गकाधीवा॥सरुवसुकात्रगठाकत्रलदिन३॥ ३१  
 श्रुजनुकत्रलदिनगरुलीहाहि॥॥१॥ ॥व॥ ॥श्रुजनुश्रीषिआंका॥सत्रांमीयालीमलि॥गत्रुयसल  
 हाहारुत्रिश्रीषिमहिनिवाठलवा२३॥दहीकपासीसनी॥पीजगां॥॥१॥ ॥व॥ ॥श्रुजनुषात्रवापका॥पू  
 वालीं॥टकां॥टाषाहा॥वालककीमाकादधानीवकीलकठीनाहिपेसा॥दं॥थल॥माहिरगीठला॥धसीकत्र  
 ला॥श्रुजनुकत्रलषावावाडगां॥श्रुजदिन४रुलाहां॥॥१॥ ॥जोषदविंदकसादपत्रभवकी॥श्रु

२ कायलस्वामिपुत्रिसि  
 कत्रकनाटं॥भाचत्रसटं॥सुसलीखनं॥सुसलीस्याहटं॥कोववीजटं॥डटंगलटं॥वीजवदटं॥१॥ ॥दजो  
 टं॥गालमषाटं॥सुडेमेसाषाटं॥वडहलीटं॥कवाववीनीटं॥सुनगिलां॥टं॥रुंगनाटं॥श्रुजवायलिटी  
 गजत्रवीजटं॥सहनस्यंगेलीवाधलीवेत्रउ०लीयात्रिमा॥षापीपात्रसमश्रुवत्रनकसंक्षका॥विंदः  
 कसादर्थहे॥ ॥१॥ ॥गंधकेनहनं॥गं॥सं॥मं॥ही॥गुलजात्रजा॥श्रुमलवीजत्रसं॥वेवनागपगालिलय  
 यत्॥श्रुवस्यं॥मृयं॥नं॥गं॥कं॥कं॥मं॥पुनिमं॥रुव॥गुं॥गुं॥वावधनं॥गं॥गं॥रुव॥नि॥कां॥चन॥गुं॥गुं॥गल॥सु॥  
 वहे॥गमीषीमाकलु॥श्रुवधनयजदी॥गुकी॥जै॥स्याह॥नगात्रे॥कूटं॥वना॥वे॥षाव॥गाल॥ ॥१॥ ॥गुरु॥ ॥  
 ॥सुसि॥ग्री॥ग॥ल॥भय॥नम॥॥ ॥श्रुथे॥वे॥य॥म॥ना॥सु॥व॥रा॥षा॥व॥द॥लि॥ख॥नं॥ ॥दाहा॥सि॥व॥सु॥न॥य॥य॥न  
 मोसदा॥त्रि॥द्वि॥सि॥द्वि॥नि॥ध्रि॥दं॥क॥म॥नि॥वि॥ना॥ग॥न॥सु॥म॥नि॥क॥त्र॥मं॥ग॥ल॥म॥दि॥न॥क॥त्र॥॥॥ ॥१॥ ॥श्रुल॥ष॥श्रु॥म॥त्र॥न॥श्रु  
 ल॥ष॥ग॥नि॥कि॥न॥हि॥न॥पा॥था॥या॥त्र॥॥त्रि॥श॥ग॥ल॥क॥॥त्र॥क॥वि॥क॥हे॥द॥हि॥द॥व॥म॥नि॥सा॥त्र॥॥२॥ ॥श्रुय॥वे॥द॥स॥रु॥म॥नि



केत्रशाशुताषाअनि॥ अत्रथदिवायाप्रगटकत्रि। डोषदत्रागनिदान॥ ३॥ मममनि अल पश कहनहो॥  
 कविमजिपत्रमअगम। प्रासुगमाविक्लिताविनविनि। कमरुसरे अयत्राध॥ ४॥ वेद्यमनात्सवनामध्वनि।  
 वषिग्रंथसूयगमसा। कसत्राजंनननेनसूषे। हांषाकीयाविलास॥ ५॥ पथमनसालकनकहा। दषिग्रं  
 थमजिसां॥ पुनिअनीअनूरावही। जेसीमममनिहो॥ ६॥ ॥ अथनाडीयत्रीकालिखन॥ ॥ कन  
 अंगुष्ठशमलहीदधीनसाअकात्र। जानइसुषइषगीयकार्यठिनकत्रइविवात्र॥ ७॥ आदिपिरुहूनि  
 निमधुकर। अन्कसूययनपुकासतिविधिनसालकनकही। जानइवेद्यसुजान॥ ८॥ मधुककागः  
 कलिगगनिपिरुनसां॥ हरां॥ हंसमधुत्रकधानकहू। नागजलकावां॥ ९॥ निगत्रलवावटत्र  
 गनिसाधमनीसुनियान। वलेहीनअनिहीनहू॥ नसाकत्रे॥ हयान॥ १०॥ इक्षययलधमनीवले  
 उध्वत्रककीजानहिनासुफिकीहूनि कहो॥ आमगहीववधान॥ ११॥ वलेवंगअत्रनयइयीकत्रलकन

३३

धमनीयकत्रइयिकिस्तासमजिके। आसुषपावेजीय॥ १२॥ अथपिरुकहवायुकायनिदान॥ ॥ योप॥  
 विषमासनशषटां॥ धाअइक्षहृषालेवइतअहोत्र। कटुकनिकुधममदिवायानासकेअनिकोधयत्रवा  
 ना॥ १३॥ उध्वशषां॥ धूयमहिगमी। आधीनानिइयहूनीसमी। कार्तिकगठअसुवेसाषा। पिरुविकात्रपगटि  
 भीराष॥ १४॥ मधुत्रइग्वदधिनिलनवनीन। लोनषटां॥ यलसुषसीन। राजनखफेकयदिनसावय॥  
 हूनेवेवसमेकहहोवय॥ १५॥ वालेउंगवादकुगुगहो। विनाषदरयानकवहो। नूषाषां॥ कइकनिसजागे॥  
 संधासमेसीनननलागे॥ १६॥ रुकलकत्रयकसेलासां॥ कीययहात्रवायुअंगहां॥ ॥ दाहा॥ मजिप्रयोष  
 शमादमहि। हायोअवनतास। पुनिअषाटयठिनकका॥ वायुत्राजषटमासा॥ १७॥ ॥ अथपिरुकहवायु  
 लिंनेयत्रीका॥ ॥ अथयोप॥ मषकइनायाकलवत्रिलाय। सुकहिअधनखदअत्रनापा। मूकोदाद्यसीनयः  
 त्रियीनिलकलसूइयिरुकासीन॥ १८॥ आलसुषहव्यासीस्वाम। मूषमीअशरुषकानास। हीयाहात्रीगतयंत्र

न

५१



हो। कहकलकनननकहे॥१॥ दहीपीठातालुजलो। आलसटावामनमहिदने। दहीसीतलनिदानासा। वृषाः  
 अंगवदूतदूयनास॥२॥ हृषहीनमूषहीकात्रहे। उधुपीनिकोयेद्वत्रगहेनेनाकविआककावधानि। माः  
 वृगलकननननजानि॥३॥ ॥अथविरुकाहवायडयवात्र॥४॥ गीयसंगमश्रुव्रीजना। केनेसलिः  
 लसूक्ष्मना। राजनमधुत्रसुगीधिता। कत्रनकायपिरुहान॥५॥ क्षात्रकसेलानिककद्र। नफादकडयवा  
 सावमनवित्रयनखदयनिहा॥६॥ नद्रकहनास॥७॥ नफोदकवगडकु॥ न। मदननलसुत्रीनासुनाया  
 नसकदहना॥८॥ नगंशा॥ समीत्र॥९॥ ॥अथसाधलक॥१०॥ सवि॥ हा॥ हृषाजिसहीना। कत्रयदना  
 रिजमफही। मृद्वसनायव्रीनसुरुलकननाककहे॥११॥ ॥वोप॥॥॥दीश्रुगुत्रहेयेननासुष  
 निडाश्रवेश्यसनासुरुविनवनिशसुनेवाकहे। स्वादगंधसरुकेले॥१२॥ विनयसदशत्रजाका  
 हा॥ सत्रलसासहीनकहसा॥ कत्रइविकित्तागाकोजानि। सानत्रजीवेककावधानि॥१३॥ ॥

पु०१२

अथअसाधलक॥१॥ दाहा॥ गा॥ शमात्रन। पिरुगहयिरुहादिकह। गहा। कहआवेअवकी०ही। यानेनेअगे  
 बदह॥२॥ ॥सात्र॥॥॥कं०विषेकहहा॥ निसादाद्युनि। सीरुदिन। मत्रेशत्रागीसा॥ कसूनवनेडया  
 ॥३॥ ॥दाहत्रा॥ गुदाहृषअत्रहीनसत्र। कासुखासुहनिगास। बाकलहियकीसाधननिनिहिज  
 मयुत्रहिनिवास॥४॥ ददयवननकत्रनासिकानाहिहा॥ हिमजस। सीसतफजिसकात्रहेअमयुत्रिगावास  
 ॥५॥ दंत्रसनंष्टगजलनेलमहि। द्यायादषश्रुनि। सीसत्रहिगतनूदधी। नासुपदूमहिजानि॥६॥  
 मं॥ नकीजनीनश्रुगा। कत्रयददयनिहा॥ ॥सकहिजिसुगतकाल। सामगहा॥ विवात्र॥७॥ क  
 विविवात्रदायककसी। अवेककद्वनगीधिमलिल। झाइनिनासु॥ नासुत्र॥ अमूहधि॥८॥ ॥अथका  
 लयका॥ अडाअदिरु। अनेमगमधुसुलहनिहा॥ नद्रक॥ सुत्रवीनामनत्रा। कनसाजवहा॥९॥ ना  
 गीमृषुशहा॥ नदागा॥ अहा॥ अमधमासागिदककाविवात्रिके। कालयकधनिनाम॥१०॥ ॥॥निधीयः



छिन वेद्यक सादास यगु । नेन सूष वित्र विने वेद्यमना । सुधना जी यत्री दावा नयिलु कह निदान सा असा असा  
 लक्षणा काल यक नाम यथ मसमू दना ॥ ४० ॥ ॥ अथ कत्र लक्षणा ॥ कत्र उय ड वन कर्ष ॥ ॥ हि का विट ग ह  
 मूर्त्तु कि मस्त्रा स अनी सात्र वमन अत्र वि अंग र ह । कत्र द न हि वि कात्र ॥ ३९ ॥ ॥ अथ यिलु कत्र  
 लक्षणा ॥ मूर्त्तु ह वा य ला य ह नि । नित्रा व र्त्तु म यिलु । न रु द र्त्तु क र्त्तु व द न न लक्षन कत्र यिलु ॥ ३८ ॥ ॥ अथ  
 क र्त्तु लक्षणा ॥ स्वास का सत्रा मा धि गुत्र । ष ह र्त्तु नि डा नी ता व म न वि त्रि वि मेष मधू र गा । क र्त्तु लक्षन मी  
 त ॥ ३७ ॥ ॥ अथ वायु कत्र लक्षन ॥ दा ह सि त्र कं रू त्रा मां य र मा सी त कं य र्त्तु र्त्तु मा ह सि थ लक्ष क वा य म  
 ष । न लक्षन कत्र वा ॥ ४० ॥ ॥ अथ मल कत्र लक्षन ॥ सात्र ॥ दा ह सा ष य त ला य । अ स्त्रि पी उ सि त्र व र्त्तु  
 र्त्तु म । न लक्षन मल ना या क क्रा श वे द्य वि या त्रि के ॥ ४१ ॥ ॥ अथ अजी ने कत्र लक्षणा ॥ दा हा ॥ व म न वि त्र य न  
 उ द न दू ष । व र्त्तु पी उ र्त्तु हिं जा म । लक्षन स कत्र क कह । द षि गं थ सूप गा म ॥ ४२ ॥ ॥ अथ ष द कत्र लक्षः

[illegible]



ਸਾਨ

यायीयत्रामूत्र। उषदमल्लसमल्ल॥१०॥ ॥नेयालीवित्राः॥नागानि।सहस्रं।उषदमल्लसमल्ल॥  
 न।उषदकावूत्रनकवूत्र।नामसुदगनलघुताधवूत्र॥११॥यूत्रनयीजंजलमहिद्यालि।आ०द्रुवनास  
 हिननकालादाहमाहर्गदानवहा॥।पायूत्रागकमल॥यत्रा॥॥१२॥हियरात्रनिहससमिताः  
 सीनिपातनंरहनवहा॥।उमशुडवाकी।गोत्रनसा॥।सासकासकीपीजाजा॥॥१३॥गोदशूनकनास  
 हिउंजानि।हमनैकविक्रकक्षधयानि॥ ॥अथमहाकृत्राकृ॥दाहा॥सांठिमित्रयश्रीपीयत्रं।टंक॥  
 पत्रमानगंधकविषुपात्रदकह्रीं।दा॥टंक॥अनू॥॥१४॥वीरधरुत्रटंकवित्त।पीसद्रुउषदसा॥ ॥  
 वसअदकेसेमिदियः।कत्रगालीवतीदा॥॥१५॥गालीषानुपातडठित्रसआदंकाद्यालि।तायूथिरुक  
 हवानकी।नासहिउननकालि॥॥१६॥गीजेद्वेजेनिलकोयीथा॥दीकनजा॥।सुअविषाशसीनकात्राडद  
 वयाधिनवहा॥॥१७॥महाकृत्राकृसनामल्लहि।आ०गुनयद्रुआनि।वेद्यमनासवर्गधमहि।राषाकका

वषानि॥३८॥अथसिद्धिद्वर्तकसु॥संघरुस्महवगालुसम॥अ०८॥कलद्रुविवानि॥नीला॥थथदा०००॥८॥का॥  
नीनेयूटदद्रुकुमानि॥३९॥डोषधर्मयूटर्महिधायु॥नाकोगत्रयूटद००॥यहत्रयानिपावकत्रयसीतलरु॥  
यज्ञल०॥४०॥अतीदा००॥यमानकहि॥षडंसादीजंजासा॥रुतद्वयसायथादा॥हाहिसतकत्रनास॥४१॥कः  
धाकर्तकसुवर्कमति॥यंठितलद्रुविवानि॥नासहिया॥श्रेनेकविधि॥सिद्धियगटर्मसात्र॥४२॥ ॥  
अथकत्रघ्नगुटिका॥पीयलिम॥सिलनीवहला॥नसूका॥त्रलया००॥गमलीकीजपीसिके॥नायूनिदा॥षमि  
टा०॥४३॥ ॥अथयिरुद्धत्रकद्रुवर्ण॥सात्र०॥यिरुपायत्रा॥नि॥रुलसा॥पी॥जपी॥सिके॥टा॥कूनकपत्रि  
माना॥दा॥धयिरुद्धत्रनात्रहे॥४४॥ ॥अथयिरुद्धाद्रुद्धत्रकद्रुवर्ण॥वोय०॥ला॥यनवा॥ला॥मा॥था॥आ॥न॥य॥दः  
नूयिरुपायत्रा॥न॥सा॥ठि॥डसी॥त्रनी॥त्रसा॥ल॥द्रु॥दा॥द्रुयिरुद्धा॥वना॥सूका॥व॥द्रु॥॥४५॥ ॥अथकहने॥द्रु॥विकि  
त्सा॥दा॥हा॥॥सा॥ठि॥मि॥त्र॥वा॥अ॥नू॥का॥य॥ह॥ला॥पी॥य॥त्रि॥ना॥हि॥मि॥ला॥०॥ना॥स॥ज॥दी॥जि॥नी॥त्र॥सा॥का॥ह॥द्रु॥व॥मि॥न॥म॥हि



॥ ४३ ॥ ॥ अथ वा न क न क दू दू ॥ सा न भा र्णी सा न व पा ॥ पी य त्रि मि त्र य त्रि त्रा ॥ ना क न मि  
 वा श न ला ॥ ४४ ॥ ॥ अथ न ह त्रे श वा न क न ॥ ४५ ॥ ॥ अथ म ल क न क का ॥ ४६ ॥ ॥ अथ क न नि या ला पी य ला मू ॥  
 कि त्र वा ला ॥ मा थ क उ ह न की ॥ पी ड का र्थ न न का ला ॥ म ल क न क ह का ना स दू य ॥ ४७ ॥ ॥ दा ह न ॥ अरु मा ॥  
 दा श ह न की सा न व न मा म हि पा ॥ पी सि पी ड ज ल न फ र्था ॥ त स क न त्रि न म हि ना ॥ ४८ ॥ ॥ अथ य  
 द क न का ड या ड ॥ म न द न की अ अंग क ड ॥ क ल तिला का ला ॥ य नि म रू न ज ल न फ र्था ॥ य द ना य रू मि ॥  
 ४९ ॥ ॥ ॥ अथ दृ ष्टि क न क दू दू ॥ पी य त्रि मि त्र य ॥ त्रि त्रा ॥ ना सा णि ही गु स म द्या लि ॥ य न न र्थ ॥  
 ॥ य ॥ टं क ॥ क ॥ ना प दृ ष्टि क डं टा लि ॥ ५० ॥ ॥ अथ वा ॥ पि रु क ह क न का दू ॥ मा थ र्णी त्रि त्रा ॥  
 ना पि रु पा य त्रा ना नि ॥ पी य त्रि क उ गिला ॥ स नि ॥ न स म पी स दू र्णी नि ॥ ५१ ॥ ॥ य ह वृ न क रू प स क क हि  
 ज ल र्था पी जे पा ना ॥ अनिल पि रु क ह दा य ना या हा हि स रू क न द्या ना ॥ ५२ ॥ ॥ अथ नी न क न का दू ॥

४०

पी य त्रि सु णि गिला ॥ रु नि ॥ गू मा ना हि मि ला ॥ ज ल र्था पी ज ॥ टं क द या सी ग ना प न हा ॥ ५३ ॥ ॥ अथ  
 वि ष म क न का दू ॥ पी य त्रि नि वा श र्णी व ना ॥ त्रि क रू स र्था सा ॥ वृ न न पी जे नी त र्था ना स वि ष म क न हा ॥  
 ५४ ॥ ॥ ॥ अथ स्वा स का स क ह वि ष म क न क दू का थ ॥ पा य ठि या क द ॥ क ठि या ॥ पी क न मू ल ना नि ॥ स म  
 दु लि रू सा णि गिला ॥ रू नि ॥ य रू का थ रू की अ ज ल मि ला ॥ क ह स्वा स का स क न वि ष म ना ॥ ५५ ॥ ॥ अथ  
 व उ र्थ क न का दू ॥ दा ह ना ॥ गू ग ल दू ल पा ष रु नि ॥ म्मा म व रु म हि म लि ॥ धू नी दो र्ण ग ड ठि क न वी थ ॥ नी न  
 लि ॥ ५६ ॥ ॥ अथ का स स्वा स क न क दू अ व ल ॥ म र्थे पी य त्रे पी सि के ॥ म धू र्णी वा ट दू रू नि ॥ हि का का स स्वा  
 स क न ॥ ला ह ना ग की हा नि ॥ ५७ ॥ ॥ अथ र्नी नि या न ना ग वि कि ला ॥ ॥ अथ अ न द रू व व स ॥ सि ग न रु मि ॥  
 त्र ये पी य त्रे ॥ वि यू टं क न रू स म नि ॥ अ ड क न स ग ली क ना दू न की ॥ क प न मा ना ॥ ५८ ॥ ॥ अ न द रू व व स ॥  
 क रू ॥ र्नी नि या न क न ना ॥ वा न ना ग नी ना ग क ह ॥ मा रू मू ल श य ना ॥ ५९ ॥ ॥ अथ वि रु म नि व स रू रू



नियात कइ ॥ गंधक पात्र द। पीयत्रे ॥ मित्रये जीवदा ॥ यवत्त व न गय पात्र विषु अरु कसां ठि श सा ॥ ४१ ॥  
 अरु कत्र स अरु पात्र नका ॥ सरु डोष ठं धपूट दइ ॥ यत्र मित्रियन कय मान ही ॥ गमली स मनिर्व (धइ ॥ ४२ ॥  
 वस विनाम निय इक क ॥ कत्रे ना स सी नियात ॥ अमव व सी ग्ल कइ हो ॥ विषम कत्र दान ॥ ४३ ॥ ॥  
 अथ कनक स द नी व स सी नियात कइ ॥ दाह ॥ मत्र ये पीय त्रि सां ठि विषु ॥ गंधक पात्र द जीनि ॥ टां क दा ॥ न  
 लीजिय हि ॥ कनक मूल गय अनि ॥ ४४ ॥ मंदन को के नी निदिना व स शरुंग व पा ॥ गुं जा स म गमली कत्र इ ॥ ४१  
 पात्र डोष ठि सा ॥ ४५ ॥ सी नियात सी नांग कइ ॥ हिम कत्र वा ला जा ॥ मंद अग्नि उ द मा द रु म न ग रा ग ना  
 स जा ॥ ४६ ॥ ॥ अथ अत्र ह मूल का काथ ॥ स नियात का ॥ धली या मा थ विना ॥ का ॥ क द्रु ॥ द न व जा  
 नि ॥ द व दा व द स मूल सी नी अरु ग व पी य त्रि अनि ॥ ४७ ॥ का कं थ रु क त्रि क ॥ पी जिय ॥ सी नियात कत्र जा  
 ॥ गिं डा हि का वाय क हा का स खा स रु मि टा ॥ ४८ ॥ ॥ अथ सी नियात कइ अंजन ॥ जि कू टा जि रु ला

हां गु व या संधा क द मि ला ॥ पी न कत्र स त्रि सां सि त्र स रु ल ॥ न डोष द स म रा ग ॥ ४९ ॥ अत्रा मूल सा पीः  
 सि के ॥ क स अंजन ने ना हि ॥ अस्मा क उ द मा द रु म सी नियात न व हा हि ॥ ५० ॥ निमत्रा ग नि स अंध यू नि ॥ रु  
 न दा ष सि त्र व र्णि ॥ वे य न क का वि या त्रि के ॥ न न क र ॥ नि व र्णि ॥ ५१ ॥ ॥ अथ सी नियात क का था मा थ स  
 ठि विना ॥ का उ गि ला ॥ मि ला ॥ का थ रु क त्रि क ॥ पी जी ना सी नियात कत्र जा ॥ ५२ ॥ ॥ अथ सी नियात  
 कं ड डोष द ॥ कं क म ल र्व ग रु पी य त्र ॥ अ कत्र क रा श त्र ला ॥ अरु कत्र स सा पी सि के टां क न का ग व सा ॥ ५३  
 ॥ सी नियात उ मा द कइ ॥ नि ड म न का सा सी न स ल रु म मा रु क त्र ॥ नू को के त्र वि ना स ॥ ५४ ॥ ॥ अथ नी  
 असात्रा ग व कि ला ॥ ली ला व नी व टी ॥ यो य ॥ मत्र य म रुं गी ॥ दा त्रि म कं ली ॥ व स रा व न अ व रु ० ली ला  
 इ म व रु नी मा ॥ धी ॥ मा श रु ल रु मा य त्र स या ॥ ५५ ॥ क उ जा ॥ रु ल की क त्रि रु ला का थ वि वि रा ग अत्र  
 स म रु लि ॥ न सरु डोष ध रा ग रु या त्रि ॥ य ० वी ज गि त्री नि नि या त्रि ॥ ५६ ॥ या रु रु ल सां गमली की जी टां क न क



पुमानधरीशानंदलजलस्यपीजेअनिनाकागुनकाकावधानि॥१॥राजनमभराउदंभासाअनीसात्र  
 सफरुहिनास॥ ॥अथवधिगंगधनवृक्ष॥अनीसात्रकड॥भाथअत्रलुसांठिशकां॥वलपनीसमात्रः  
 वसुपां॥लालेदेनालुआवकवीजाकूजायाटे॥उजवलीया॥१॥लावनवालाकूनिमधूपां॥गंदलजः  
 लस्यपाडीमिलां॥मभरागराजनअवलं॥अनीसात्रविनमाहिंथरुं॥१॥ ॥अथलवगंगधनवृ  
 क्षअनीसात्रकड॥दाहना॥सांठिशकुकीमात्रस॥अजमादाशमिलां॥पीसिक्काठिस्यापीजीयं॥अनीसाः  
 वरुमिटां॥१॥ ॥अथअनीसात्रकडलपू॥आववीजअत्रां॥हल॥विलसमहीमश्यालि॥जलस्यालय  
 इनाहिपत्रि॥अनीसात्रकडटालि॥१॥ ॥अथनागनादिकाथकत्रअनीसात्रकड॥संठीकूजापनीसहीगु  
 भाथगिलां॥मिलां॥काथशकात्रके॥पीजियं॥अनीसात्रकड॥१॥ ॥अथवकूअनीसात्रक  
 डकाथ॥थायं॥लावनवालाकूजापनीसाभाथवलरुसमकत्रिपीसि॥याकाकाथशकत्ररुसंमंकेनिः

४२

पीसि॥यांकेमिलां॥सावनअनीसात्रकड॥१॥ ॥अथअनीसात्रकडगुटिका॥दाहना॥लाइं  
 उजवमायसंनेभाथवलरुकां॥धनगुठसागुटीकत्रि॥अनीसात्रशर्थसां॥१॥ ॥अथआमअनीसात्र  
 कडवृक्ष॥दाहना॥संभासावनरुं॥गुवयासिनायनीसिमिलां॥पीसिपीडजलनयध्या॥आमअनीसा  
 वरां॥१॥ ॥अथसंगहलीनागयकिसा॥कनययकूकाथ॥धलीयाभाथसांठिहनि॥वालावल  
 कथ्यालि॥काथशकत्रिकेपीजिये॥संगहलीकडूटालि॥१॥ ॥अथसंगहलीवायसुलकांइंवृक्ष  
 ॥थोयं॥भाथसंठिगिलां॥यनीसि॥नफनीत्रसांपीजेपीसि॥आमअत्रविंसंगहलीजां॥वां॥सुल  
 विनमाहिसां॥१॥ ॥यायअं॥लाइयाटिलजालुभाथवलसांठिशपावहा॥धलीयांयं  
 नीसगिलां॥वाला॥कूजाकां॥मिलावहा॥समपीसिअडोषकाथकीजे॥पानिंउठिबेसीजिया॥आमहाल  
 अत्रविंसंगहली॥नासुं॥हहिकहीजी॥१॥ ॥निधीयठिनवेय॥कसायासयुनेनसुवः



विनविनवेयमनासवक प्रसनिपात अनीमात्रसंगहली। वागयनी कात्रनामदिनीयः समुदस ॥  
 २॥ ॥ अथ ववसी वागविकित्ता ॥ सुत्रवटिका अर्ग वागक ॥ दाहा ॥ एक मित्रवविविस्ठिक ॥  
 सुनि। वीना अ० यमाना सुत्रनृष। उरुगाले सुत्रनृष क प्रहृ सुज्ञान ॥ १०८ ॥ इगुनले इगु इपां के वाटी कः  
 वरुटं क दां ॥ यट अहा वागु ल ग दाना सुवसी हां ॥ ११० ॥ अथ ववसी क इ वसी हां ॥ अत्र लु वी लां ड  
 शवा। सुठी सीक्षवत्। सुत्रनृषी वेक क सी। वागु ववसी वत् ॥ १११ ॥ ॥ अथ ववसी क इ ववसी ॥ सात्र ० ॥ ४३  
 इधी वडी श अनिष्ट न लागे सी पीजी ॥ ठाक अ० यत्र कनि प्रक ववसी ना ह ॥ ११२ ॥ ॥ अथ ववसी वागक  
 क ववसी ॥ सुत्रनृष वव अत्र मूसली ॥ कृता साठि समहां ॥ पी सिक्का वि सी पीजी ॥ वागववसी जां ॥ ११३ ॥  
 अथ रुगंद व वागव किं ता ॥ ॥ रुमंद व वा ॥ वागक इ ल य ॥ दं नी ह व द श अं व वा पी स इ नी व मित्रां ॥  
 ल य रु की जे पात ड ठि वाग रुगं व जां ॥ ११४ ॥ ॥ अथ ल य ॥ अरु विलां ॥ अनिके रि ह ल व सु स जागु ॥

नाथ सिला व जानिके जां रुगंद व वागु ॥ ११५ ॥ ॥ अथ ल य ॥ संधा सी ठि श ह व द ह नि। वट य ल व रु गिला  
 ॥ जां ॥ वरु व सिलां ॥ य हि। ना सु रुगंद व हां ॥ ११६ ॥ ॥ अथ गु ल वाग य नी का वा वृ ॥ सी व वृ संधा  
 सु ठि हिं गु। अरु व लानु पु नि जानि। अरु पा य त्रि अरु मू दा ज व वा व विडी समानि ॥ ११७ ॥ ॥ अरु का वृ व नृ की जी  
 नृ व रु सी षां मिलां ॥ लाला सु ल वि सु चिका अर्ग अजी व नृ जां ॥ ११८ ॥ ॥ अथ अम वाग वाग विकित्ता ॥  
 साध क इ ल य ॥ स वि हा सी ठि। सु हि ज ना। व र्षा रु सु त दा व। का जी सा ज व ल पी ॥ सु ज वि थ श नि वा व ॥ ११९ ॥ ॥  
 अथ पि पा ना दि वृ ॥ अम वाग क इ ॥ यो य ॥ पी य त्रि पा ठि क टां ॥ जानि। सी ठि श अरु या जी वा अनी नि। मा र्थ  
 वी ला पी य त्रि मूल। ग ज पी य लि भ ल इ स म ह ल ॥ १२० ॥ न य नी व र्षा पी जे पी सि। अम वाग व द न न हि दी स।  
 सु ल अरु ष ही। ही न व हां ॥ सा सी क्ष सी चि न म हिं जां ॥ १२१ ॥ ॥ अथ अम वाग क इ वृ ॥ दा हा ॥ सा  
 ठि वि ड ग ह वी न की ॥ द व दा वृ मिलां ॥ न य ड द क सी पी जी ॥ अम वाग न व हां ॥ १२२ ॥ ॥ अथ वृ



लसमवानकडा॥दाहना॥दालहलदगुनठयुनि॥निवाविठंगयनीसा॥मित्रयव्वंउजवअनिकेलीअसमक  
 त्रिपीसि॥१२३॥गफवात्रिपीपीसीजिन॥अमवाननत्रहा॥कमकीपीत्राउदत्रमहियालीगशयत्रा॥१२  
 ४॥ ॥अथअमवानकडूचूर्ण॥गुगुलुनिवायननवा॥दालिनसाशगिला॥धनमूनम्यापीजोनानाससा  
 जिकाहा॥१२५॥ ॥अथरागकमपुनी॥कात्र॥संधानिवीविठंगसुनिपीसडूसमकत्रियागु॥गफनीत्रः  
 थापीजियेनासेकमकात्रागु॥१२६॥ ॥अथकमरागकडूचूर्ण॥जिकडा॥जिहलागिवीयवानीवचवीम  
 न्या॥षदित्रकूठांरुविठंगसुनिवूननकनडूमिला॥१२७॥धेनमूनमहियाव्वंके॥कडाव्वंयत्रवा  
 नासफदिवसजडपीजियो॥हंहिउदत्रकमहानि॥१२८॥ ॥अथसुलत्रागपुनीकात्रचूर्ण॥सांयत्रही  
 गुजसांठिसुनि॥अनडूसकनहा॥पीसिपीउजलगफसां॥सुलविस्वयीजा॥१२९॥ ॥अथहिंयक  
 कचूर्णसुलकडा॥मित्रयेपीयत्रिसांठिहीगु॥संधूजीत्रहा॥अजमादाजलगफसां॥कवडूसुलनहा॥ ॥

४४

अथचूर्णसुलकडा॥पीयत्रिसांठिहरीककी॥सायत्रनीकीसमनि॥गफउदकसापीजीथानाससुलकागनि॥  
 ॥१३०॥ ॥अथवत्रादिचूर्णसुलकडा॥सात्रा॥खवचूयकनमूत्रालवननीनि॥जवषात्राहीगुअरु॥यागः  
 महिवूत्रा॥अजवायनिशुविठंगयुनि॥१३१॥टंकटंकघत्रवानु॥सहडोषधलीजियहि॥निवीनीनिटंकजा  
 नूजहकाचूत्रनकीजीथ॥१३२॥गफनीत्रमहिया॥टंकडा॥जवपीजीय॥सुलगुलूमकडा॥अमवानअः  
 धमनगदी॥१३३॥ ॥अथसुलत्रागकडूचूर्ण॥ ॥दाहना॥सुंणीमित्रयेपीयत्रे॥अत्रसजीरुमिला॥  
 पीसिपीउजलगफसां॥सुलत्रागशुमिटा॥१३४॥ ॥अथपाठकमलात्रागपुनीकात्रा॥काथपीइत्रागक  
 डा॥हहलाकठकित्रा॥वासानीवगिला॥काथरुपीजिसहनसां॥नासुपीइगदहा॥१३५॥ ॥  
 अथपाठकमलवायकडूअवलेंडा॥नकयत्रजनीआवत्रा॥लहचूनरुमिला॥वाटरुमधूधुपा॥क॥  
 पांइकामलाजा॥१३६॥ ॥अथकमलवायकांअवलेंडा॥लाहचूनगिहलाकठदंनउत्रजनीवालि॥



दृढमधुसूत्रव्यापीयः। कमलवाडनवचालि॥१३८॥ ॥अथकमलवायकदुःखं नू॥। गत्रहत्र  
 दशआवत्र। करुं अंजनं नेनहि। कमलवायकानासहाः। मसूत्रीयथजडवाः॥१३९॥ ॥अथक  
 रागयनीकात्र॥ ॥अथकः॥ ॥असर्गधिर्गुणपीयत्रे। लवंगेमित्रीयाः। जलस्थीपीअपीसिके  
 कः॥ रागुनत्रहाः॥१४०॥ ॥अमुटिकादाः॥ ॥दाहा॥ अकहलअनलवंगयुनि। पीसदुसमकत्रि  
 आ। गमलीषः॥ यः॥ पातडि। हाः॥ वः॥ कीहानि॥१४१॥ ॥अथकः॥ रागकदुःखं॥ सात्रभा॥ गिरुला  
 सीठिविठंग। मित्रयेकलशमाधही। पीयत्रिमूललवंगदवदात्रगजलाः॥१४२॥ दाहना॥ यन्नयकः  
 द्रासना। गजकंठत्रिशुमिलाः। सरुनंदलीमिसत्री॥ कः॥ रागशयत्राः॥१४३॥ ॥अथकः॥ रागयनीकात्रमाह  
 यः॥ सादासपूनेनसुखवित्रयितव्यमनात्सवः॥ अर्गदत्रगुल्मः॥ श्रीमवातकमत्रागयनीकात्रमाह  
 नीयः॥ मूदसा॥३॥ व॥ अथहिवकीरागयनीकासहिवककः॥ वीठिमपीकीलाषत्रसू। पीसदुदोनोयाः॥

४३

नासहलीअपातडिहिवकीवदुत्रिनः॥१४४॥ ॥अथहिवकीकदुःखं॥ मित्रयेमित्रीलवंगदुःखनि॥  
 गित्रीवत्रिकीचालि। मधुसूत्राटपीसिकेः॥ हिवकीपीराभलि॥१४५॥ ॥अथहिवकीकडधुना॥ मनसिलह  
 वदशआनिके। पीसदुसमकत्रियागु। वदनशधुनीलीजी। नासीहिवकीराग॥१४६॥ ॥अथकः॥ रागयनीका  
 कात्र॥ यं दनमाधः॥ लाः॥ वीलाजाकलवंग। वत्रगित्रीअनकमलहलागजकंठत्रिशुयियंगु॥१४७॥  
 रुकावृत्रनूकीजियः॥ मधुमित्रीशुमिलाः॥ पातसमेः॥ जववाटीयः॥ कृदित्रागुशुमिटाः॥१४८॥ ॥  
 अथकृदित्रागकदुःखं॥ सात्रभा॥ लाजा सिलालवंग। कववीअनलवंगीयाटदुमधुकसंग। कृदि  
 रागकानासुदुःखं॥१४९॥ ॥अथसासत्रागयनीकात्र॥ वृक्षसासत्रागकदुःखं॥ वाययः॥ सीठिरुपीयत्रि  
 ककत्रासीगी॥ पूकत्रमूत्रकदुःखं॥ सीठगी॥ माथमित्रयजलनपूशलेदु। महासासकानासूकत्रदुःखं॥१५०॥  
 ॥ ॥अथसासकदुःखं॥ याधडीयाकृदुःखं॥ कंठियाः॥ पूकत्रमूल॥ जानि। वासाअनसीठिकूलथभनिः॥



यीसि शयीयेन फनीन। नवखासकास की जाव पीन ॥ ११॥ ॥ अथ कासकासकासकी जाव पीन ॥ गमलीयेन की।  
 सीठिवह नायीयत्रेः ककनासीगी जानि राउं गी शक वा नि चित् सैने मयी सइ आनि ॥ ११२ ॥ गमलीकी जे  
 नीन सी। ॥ ककुन कसम साव। निसा शमुखमहि नायीयेना सुखी दका हाव ॥ ११३ ॥ ॥ अथ गमलीयेन की ॥  
 वासा सीठिवह नायीयत्रे। नसमयी सइ आनि। गमलीकी जे सह न सी। हाव खीकी हीनि ॥ ११४ ॥ ॥ अथ वासी  
 की सी कइ वृत् ॥ वासा सीठिवह नायीयत्रे। कय ककंटाव पाव। यीसि यीउ जल नय सी वासी वासी जाव ॥ ११५ ॥  
 ॥ ॥ अथ मंदानि यनी का वृत् ॥ मंदानि कइ ॥ यीयत्रि निवाह नीन की। सीठिवह नायीयत्रे। नफनी न सी  
 यीजि याव। मंदानि शमि टाव ॥ ११६ ॥ ॥ अथ मंदानि कइ वृत् ॥ सी ॥ सिवा शयीयत्रे। यामहि विः  
 गक्यालि यीसि यीउ जल ले फ सी। मंदानि कइ जालि ॥ ११७ ॥ ॥ अथ कइ कइ वृत् ॥ गिकटा ॥ गि  
 हल लीन हीन। अत्र अत्र वायनि मलि। समगुठ गमलीकी जियव ॥ मंदानि कइ वृत् ॥ ११८ ॥ ॥

४७

अथ वृत् मंदानि। गजक सत्री ॥ योयव ॥ सी ॥ सी वर वाय विठंग। न कय गिहला। नि वील वंग। विठक ही  
 गुज वायन न नि। मी व दाव नात्र दाना अनि ॥ ११९ ॥ ॥ वृत् डोष धका वृत् न कइ वृत् ॥ नीनियूटे नीव की  
 धत्र इ। टकन कया न डोषाव। मंदानि विन मीहि मिटाव ॥ १२० ॥ ॥ अथ विसृष्टिका राग यनी  
 का ॥ सात्र वा ॥ नल गिला का आनि। कत्रय दमद न की जीयव। ना सुवि सुवी जीनि। सिद्धि आ गुं पंति न क  
 का ॥ १२१ ॥ ॥ वृत् निधीयंति न वेय कसा दास पूनेन सुख विन विन वेय मना सुवहि का की दखास  
 कास मंदानि विस्वी राग यनी का वनाम वरुथ समद ॥ १२२ ॥ ॥ अथ कइ वृत् ॥ यनी का ॥  
 अउ वृद्धि कइ लय ॥ जावास धाहि गुधत्रि ॥ कइ कलेने शय काव। लय शकी जे यन डो अउ वृद्धिः  
 शठव ॥ १२३ ॥ ॥ अथ अउ राग कइ वृत् ॥ गिहला वृत् न की जीये। धन मूग मूग हि यात्रि। पान हीः  
 यी जे सा न दिन। अउ साथ कइ जालि ॥ १२४ ॥ ॥ अथ अउ वृद्धि कइ डोष धा ॥ अत्र उतल विहाल



लि ययद्यु नस्था संभा गुपान इपी के सा न दिन ना से अं उ श्रु त्रा गु ॥ १३४ ॥ लघू ॥ जी रा पं रे ने ठा क  
 ० ह नि । व य हं ई व र मि ला ॥ कां गी था ज व लं पी या अं उ सा थ र य त्रा ॥ १३५ ॥ ॥ अथ पु म ह रा ग य नी  
 का व दू ल ॥ मू ह मूं दी दा ठि म क ली । स न का थूं म र्भ ठा दि न द स वृ त न रं क दू हं ॥ लघ त्र म व वि हं ॥ १३६ ॥  
 दूर्वा ॥ व व ठी ॥ ला ॥ वी र्भ ॥ दूर्वा रं क न क लं रु ता ज न की ज ॥ पा थ ज डा क हा क र य त्र म डा ॥ १३७ ॥ ॥ दी क  
 दूर्वा ॥ स कं षा दू ली ॥ ल वी सि ला जी उ म म र्भ ॥ सी न नी र थो पी जी न । न य त्र म ड वि ह ॥ १३८ ॥ ॥ अथ मू ग  
 क र य नी क र ॥ न ला दि का थूं मू ग क र य दू वी य त्र म न क रं ॥ न ला वी सा ग म ष त्रा । म र लं ० ज र ला ॥ पी य त्रि  
 न रं उ व दू का ॥ अ म रं द र मि ला ॥ १३९ ॥ ॥ का थ र या का पी जि य ॥ सि ला जी उ म दू घा लि । मू न क र अ नू य  
 थ नी । ह नि य त्र मि व हि दा लि ॥ १४० ॥ ॥ दूर्वा ॥ न रं उ वा सा । न ल वी । पी स र ना लि मि ला ॥ द शि र्भो पी जः  
 पा न ड ठि । मू न क र मि दा ॥ १४१ ॥ ॥ अथ मू ग रा ध य नी का व ॥ लघू ॥ वि द्वा मू स की र स नि । ना य

इ ज ल म हि म लि । ना हि न ले उ ड ल पि य ॥ मू न रा ध क रूं ले लि ॥ १४२ ॥ ॥ अथ का थू पा व ठी या रं द ॥  
 ग म ष त्र ज वा सा ह त्रि अ नू । पा षा न रु इ क नि या ज ले नू । य इ का थ र पी ज ॥ स ह उ म लि ॥ मा मू न रा ध क रूं दः  
 ॥ त्र लि ॥ १४३ ॥ ॥ दूर्वा ॥ दा ह रा ॥ जि ह ला रं षा ग म ष त्रा । वी ज क क टी पा ॥ न फ नी र थो पी जि य । मू न रा ध  
 न र हा ॥ १४४ ॥ ॥ अथ मू गी रा ग य नी का व ॥ यू क र दि का थूं मू गी ड ना द क र वि स्र वी क रूं ॥ यू क र म ल  
 वि रा ॥ व द्वा र्भो क दू त्रा । दा ल ह र द मू न दा न व वा । मा थ पी य त्रि मू त्रा ॥ १४५ ॥ ॥ अरु था कू ० र सि त्र स वः  
 डा का थूं र की जी अं नि ॥ अ प स मा त्र ड ड ना द क रूं । रा ग वि स्र वी हां नि ॥ १४६ ॥ ॥ ना स मू गी क रूं ॥ मि त्र  
 य स इं उ मा हि ध त्रि दि व स ॥ की स य मा नू । ज ल थो ना स र ली जी न । हा ॥ मू गी की हा नि ॥ १४७ ॥ ॥  
 अथ क र रा ग य नी का व ॥ यो य ॥ जि ह ला वा सा नी व य टा ल वि न गि ला ॥ र स मू क त्रि ना ला । वृ त नू पी ज  
 ज ल म हि दा लि । क र रा ग ना स हि न क काला ॥ १४८ ॥ ॥ कू ० दूर्वा ग य ल रं द ॥ जि ह ला म जी रि गि ला ॥



॥ कङ्कनीनीवृनिगाशजावहा ॥ ववदात्र हवदविठंगवासा ॥ ववदात्राश्रमनिहा ॥ समयीसिद्धवर्नकत्र  
 दुविधिस्थापीजीनपानीसंग ॥ कङ्कनागशांयवलकहंदिनासहिउवदंश्रंग ॥ १०१ ॥ ॥ अथमजिष्टा  
 दिवाधुवागत्रक ॥ दाहना ॥ मजिष्टागिहलाकडात्रजनीनीवृगिला ॥ ववदात्रववयीसिके ॥ काथश  
 कीजेसा ॥ १०२ ॥ पागडठिजवपीजिनावागत्रकनत्रहा ॥ ॥ अथकर्म ॥ डिलयामगदाकंङ्ककूमि  
 ग ॥ १०३ ॥ ॥ अथध्वनककडलपू ॥ वमसत्रिचुंड ॥ पुंजानीधुकुटववत्रिला ॥ समयीसदुमत्रः  
 मीला ॥ लपूशकीजेकीजीआनि ॥ ध्वनककडनासेडजानि ॥ १०४ ॥ ॥ अथध्वनककडलपू ॥ दाहना ॥ स  
 विविविठुकु ० ववाडगाहूममिला ॥ काजीसांजवलयीये ॥ ध्वनककडनत्रहा ॥ १०५ ॥ ॥ अथकंङ्क  
 कडल ॥ हवद ॥ वावयीनीवदला ॥ अत्रां ववात्रला ॥ टीकदा ॥ गममृगसां ॥ पीवगकंङ्कजा ॥ १०६ ॥ ॥  
 अथलपूपाकड ॥ मित्रयेअत्रसिद्धवसुनि ॥ महिषीष्टसंजागुमधिकेलेयूशकी ॥ जीने ॥ नासेयावशत्रागु

४८

१०७ ॥ ॥ अथलपूपावदादविचित्रिकाकड ॥ गंधकवाकविठंगपुनिकु ० शसिंगत्रहजानि ॥ हवदयि  
 याशसिद्धवसुनियीसदुसमकत्रिआनि ॥ १०८ ॥ कनकनीवृनीवृलत्रसु ॥ लयडु ॥ हहिमिला ॥ पाडदाइ  
 अत्रविविधिया ॥ नत ॥ वागनसीहि ॥ १०९ ॥ लपू ॥ द्ववहवदसमयीसिके ॥ लयडुजलसंजागु ॥ योंडदादअत्र  
 धत्रगिदानासहि ॥ नतत्राग ॥ ११० ॥ ॥ दादलेया ॥ योय ॥ द्ववनिगंधवावत्रीभनि ॥ शंक्षसिवाप्यवाउश्रुनि  
 ॥ लयशकीजेकीजीयालि ॥ दाइधत्रसनास ॥ ननकालि ॥ १११ ॥ ॥ अथमृगकडलपू ॥ यंदनकडसहालया  
 ॥ कवलसाठिवानसमहा ॥ लयशकीजे ॥ जलमहिद्यालि ॥ लुनिविधाचिनमाहिठं ॥ रुटालि ॥ ११२ ॥ ॥  
 अथकीयत्रागपुनीकात्र ॥ दाहना ॥ कदलीपागकीरुसकनि ॥ नामहिहवदमिला ॥ लयशकीजेनीनसां ॥  
 कयत्रागुनत्रहा ॥ ११३ ॥ ॥ लपूपाथडीयाचुंड ॥ यंदनहवात्रकयत्रभनि ॥ सहागममृलीवीजआनि ॥  
 मंहीनीत्रससांलपूला ॥ साकिंरुत्रागुचिनमाहिजा ॥ ११४ ॥ ॥ लपू ॥ सात्रभा ॥ गंधकयंदनआनिनी



वनस्थीं लघीयः॥ दिवससा नयनवानी॥ स्त्रीयत्रागन निनात्रहे॥ १२३॥ ॥ अथनात्रागयनीकात्र॥ दा  
 हना॥ अर्द्धदग्धकत्रिसो किका॥ दाधिसोपी वः साः॥ निरुडोषदपंठिनकक्रा॥ रीसूनात्रवाहाः॥ १२४॥  
 ॥ ॥ अथगमुद्यानकाडोषधू॥ काकर्जयकाभुल्लुकटि॥ समुद्यानमहिघालि॥ पीतत्रकूपवाहसुनिने  
 नासहिनककालि॥ १२५॥ ॥ निधीयतिनवेयकसादासयूनेनसूषवित्रविनेवेयमनासर्वः  
 कूत्रउयमवंमूककृमूकनाधश्रयस्मात्राकूकृकूपासादिइवित्रविकालुगन्धीयनात्रवाहासुद्यानः  
 रागयनीकात्रनामयंयमः समुदयभा॥ ॥ अथवागनागयनीकात्रकाडोषधकहा॥ पाथडीयाकुड  
 आसर्गधिसोठिनिलसामजीनि॥ समलुलिशमलदुर्वीश्रानि॥ वद्वआषदषयैः वृममिलाः॥ सावागः  
 दाधिविनमाहिजाः॥ १२६॥ ॥ बूर्लदाहना॥ रागसिरासुहांगना॥ मूडीगाहिमिलाः॥ वृत्रनषेयः  
 टंकुद्वः॥ वागनागुनहाः॥ १२७॥ ॥ कटिका॥ वीयः॥ पीयत्रिविलासगधिशानि॥ ववकविठंगत्रवा

४२

यनिश्रानि॥ सांठिकलोत्रीपीयत्रिमूल॥ नडोषदपीसद्वसमलुल॥ १२८॥ द्रुलपुठसो॥ गलीकत्रदुटीकः  
 दाः॥ यत्रवानरुधनद्रा॥ पागदुठिके॥ गलीषाः॥ वायुशयोरासीनत्रहीहि॥ १२९॥ ॥ काथवायुपीजः  
 कद्रा॥ दाहना॥ हूठिनत्रउशत्रसना॥ दवदात्रुशगिलाः॥ काथशकत्रिकेयजियपीत्रावानहाः॥ २००॥  
 ॥ वा॥ ॥ अथलघुविसगरुतल॥ वाः॥ कद्रा॥ वीयः॥ मीभगलसंत्रः॥ कश्रानि॥ लघुधरुत्रकात्रसगानि  
 पुगाविषधरुत्रवीज॥ टंकशपाययायसोलीय॥ २०१॥ विधिशकलकीकीजिः॥ श्रानि॥ लघुविसगरुतलः  
 लघुद्रुजानि॥ मदनकजेदहीलाः॥ वायुशयोरासीनत्रहाः॥ २०३॥ ॥ अथपिरुकापयनीकात्र॥ पाथ  
 डीयाकुड॥ ॥ नलवीकवृत्रमिभनि॥ आवलेशयंदन॥ लघुश्रानि॥ नपीसी॥ शयीजहिजलुमिलाः॥  
 सापिरुकापूत्रिनमाहिजाः॥ २०३॥ ॥ अथदायविधिकद्रुलघु॥ दाहना॥ वरीपत्रवश्रवत्रागड  
 लंकुडश्रवलाः॥ अत्रस्थालयद्रुवत्रलशरी॥ दायविधिश्रमिठाः॥ २०४॥ ॥ अथवर्दिडवाकीकद्रुबुला



यीसि कृहात्राक मलहला अत्रं लां यी बालि। सीगनी प्रभापी ॥ जियं ॥ दुर्दि उवाकी ठालि ॥ २० ॥  
 ॥ अथ कदवा पुनी कात्र ॥ कसत्रिमित्र ये पीयेने। रात्रगी अत्र जानि ॥ माया ना वो लत्राग सनि। न समः  
 यी सइ आनि ॥ २० ॥ ॥ यान इसां अत्र वां ये। पत्र मिनि टंक अत्र कदवा सी अत्र खास रुमा हां धं  
 कावा घू ॥ २० ॥ ॥ यून ॥ कल कं ठाली लवंग रूठि। अत्र रात्रगी पां। पीसि पी उत्र लफ म्हा। कदवा सी रु  
 नसां ॥ २० ॥ ॥ अथ उठमाल राग पुनी कात्र ॥ पी पत्रि अत्र कयना वरुनि ॥ ह हला सम कत्रि आनि। ३०  
 यीसि पी उत्र लफ म्हा। ना सहि जीना जानि ॥ २० ॥ ॥ लय ॥ रात्रगी अत्र सी ठि हनि। न इल अल महि मलिकुटि  
 शया काल युकत्रि। कठिन हं जी वलि ॥ २१ ॥ ॥ अथ दं मूष राग पुनी कात्र ॥ यून ॥ गवा पी व न लां यी भा  
 थ काथ वलां मूष मे मल दू पीसि के वदन पा कट मिटि जां ॥ २१ ॥ ॥ जिस के दी गला दू अवे नि सका डो  
 यध ॥ वसुवास को सह उमनि। मथ दू र दाना सां पा नही वाटी सात दिन दान इत्र कन हां ॥ २१ ॥ ॥

अथ दं कीट कत्र कय वा दू पी उ को डोष ध कट ॥ वा सा मा थ काथ रुनि ॥ कदू दू अत्र जानि। लद मं जी  
 ठि मिलां कं। पी सइ सम कत्रि आनि ॥ २१ ॥ ॥ न डोष दद सन न मल दू। वरु ग मन सायां। पी उः  
 कीट कय वल दू। निमष वी वरु यनां ॥ २१ ॥ ॥ अथ डोष द मूष या की का ॥ ह हला दाष गिलां  
 हनि। वं वली दल पां। दाल ह न द अत्र पाठ सुनि। नली जहि सम हां ॥ २१ ॥ ॥ काथ श की उ पीसि के।  
 कत्र ली कत्र मधु बालि। वदन पा क ॥ नना सहि न न काल ॥ २१ ॥ ॥ अथ की वं ले डोष द ॥  
 सइ उरं थला इ व व न डोष ध सम आनि। व ॥ शल पीथो। यय की ला का जानि ॥ २१ ॥ ॥ अथ डोष  
 द कां य दू को ॥ सात्र ॥ वी ल नि गिल म्हा म जी ना सत्रि सी पी न हनि। यय म्हा ॥ लय दू जाना मूष की वाः  
 ॥ नी ना वरु हि ॥ २१ ॥ ॥ वरु ॥ संधाला न श ह न द क ॥ न डोष द सम हां। नी वरु स सी ल पीथो। मूष की का  
 ॥ नी जाय ॥ २१ ॥ ॥ अथ ना का राग पुनी कात्र ॥ इव क रं ह ह नी क की। दात्रि म हल मिलां। सी गनी व



श्रीनात्रदत्रकगमनसायाः॥२२०॥ श्रीमित्रवडोपीपत्रे। गुत्रसायेनश्रानि॥ पीनसूषहत्रसीसइष।  
 नासूकाशानि॥२२१॥ नास॥ मित्रयेश्रवविदालहल। मत्रमिनिगिलल कलिम। नासइलीकेनीत्रसा  
 पीठापीनसत्रलि॥२२२॥ ॥श्रुनेकत्रागयनीकात्र॥सय॥ त्रसवगिलानहरीगकी॥ गत्रहत्रदमिताः  
 ॥। जलस्थी डयत्रिलयूकत्रिनेनत्रागशमिताः॥२२३॥ श्रुनू॥ कनिकहलश्रुजसुहनि। मंहदीत्रसस  
 शायु। लायनूश्रुनूकीजीये॥ त्रहेनकानूयायु॥२२४॥ ॥श्रुथश्रुनूवादिश्रुधकइ॥ सूत्रमात्रशनीशः  
 गमकहि। शानीत्रसर्वधाननइश्रुनूकीजिय॥ हा॥ रुलानिसिअध॥२२५॥ सावनूयेत्रायलिका॥ गिलश्रुज  
 ननेनाहि। जालाहलानिसश्रुश्रानिमिषिवीयिनत्रहहि॥२२६॥ ॥श्रुथयउवालकइडोषध॥ मित्रये  
 गत्रल्लगुठ। जवालीसमश्रानि। जलस्थालपडवाडिके॥ रुययउवालहिजानि॥ व॥२२७॥ ॥श्रुथयंग  
 जानुपीठकइ॥ श्रुथश्रुत्रकइतलहनि। कीसयागमहिया॥ कत्रिगगश्रुज नकत्रइनेनपीत्रशनसाः

३१

॥२२८॥ ॥श्रुथश्रुज नूसवलवावकइ॥ पात्राश्रुसुसंगिसत्री॥ भातीमृगश्रानि। टंकककहेकहली  
 जीने॥ रुकायइपत्रवान॥२२९॥ कत्ररुदसनश्रुत्रवाकसु। का ही ॥ सहिमिला॥ रुयरुयटीः  
 कशमलीय॥ कासयागमहिया॥२३०॥ कुलीपयश्रीपीसिके। दगश्रुजनश्रुकत्रह। सवलवाडकानाः  
 सइइश्रुशानपथलेइ॥२३१॥ त्रगउ॥ श्रुठकावाश्रुजसुसुनि। नीलाथश्रुश्रानि। सीपीयूनाहक  
 डी। सागत्रहनसमान॥२३२॥ काथलमहित्रगठियो। दृठगमकाशमिला॥ निसाश्रुश्रुनूकीजीय॥  
 सवलवाडनत्रह॥२३३॥ ॥श्रुथपाटलीनगुत्रागकइ॥ जीत्राकाहीहकडी। गिरुलाशानपा॥  
 त्रसवगिलहत्रदहनि। यामहिलाइमिला॥२३४॥ जडोषधसमश्रानिक॥ कत्ररुपाटलीपीसि॥  
 सर्वपीत्रकानासूइ॥ नेयनइनिर्मलदीस॥२३५॥ ॥श्रुथश्रुज नूनिमत्रहलंवीत्रवावकइ॥ सूत्र  
 माश्रुश्रुसूनि। मललिगकइश्रुलि। कनिकहलश्रुत्रमिसत्री। सागत्रहनसमानि॥२३६॥ श्रुज नूवली



वयसाठिहनि। संक्षसोहत्रली००४

इधसा। निमत्रोगुनत्रहा००। हलावावाडसनि। ननयीत्रशमिटा००॥२३॥ ॥अथकर्मत्रागपनीका  
व॥आकल्हसूननिलयगुत्रसा। कानवीविमसापा००। वहत्रापीत्रापूर्विइषु००। नत्रागनसाहि॥२३॥आक  
यानमहिहसूनधनि। गायइदानासा००। कानवीवित्रसूमलीप०००। हिहसूनहीहा००॥२३॥दवदान  
अंजामूगुसांनयकत्रिकानविथाशमिटा००॥२४॥ ॥अथसित्रागपनीकाव॥वागसित्रवर्हिकइल  
य॥दवदानक०कायहला००। नत्रागनसमिता००। काजसांजडलपीयोवागसित्रात्रनिजा००॥२४॥ ॥  
अथकहसित्रवर्हिकइलपू॥पाथडीयाचुंदू॥नत्रासनाकइजानिचुवयविषाघनामाथ००। नि। सा॥  
नयनीत्रसांपीसिलाया। चिनमाहिइकहसित्रवाहिजा००॥२४॥ ॥अथयिरुसित्रवर्हिकइलपू॥साः  
व॥॥२४॥॥वर्हिककसत्रा॥द्वकडसीत्राअंवर॥कवलवीजइइ॥वत्रयिरुसित्रवर्हिकइनागइय॥२४॥  
॥ ॥अथलपूसित्रवर्हिकइ॥कू०मित्रयेअत्रकायहला००। नत्राकीजठयालि। नयनीत्रसांलपीयो। सासि

३२

ववर्हिकइलि॥२४॥लपू॥पीपत्रिमित्रवहत्रीनकी॥००। नीसमसा००। कामीजीसनीलपकत्रिपीत्रासित्रः  
काजा००॥२४॥ ॥अथलपूआक्षसीकइ॥कू०यीयत्रेसात्रिवा। वयमइलपीआनिकाजीसनीलपूकत्रिः  
आक्षसीसीहानि॥२४॥॥चुनसांसांक्षपीसिकनासूलइरुत्राग॥सिद्धिजागुपंठिनकका॥आक्षसीसीजा  
न॥२४॥ ॥अथकसवधनकोडीषध॥निलइहलअत्राग॥षत्रा॥चुनमधूयामहिपा००। कसइल  
पशकीजीय००। विइत्रवधहिअधिकाय॥२४॥ ॥अथ००डलपूकइलपू॥हसीदनकीरुसकात्रि॥  
गाहिनसोनिमिला००। कलीपयसांलपीय००॥००डलपूशमिटा००॥२४॥ ॥अथकल्या॥लोहयूनअ  
त्रुंगत्रा॥जीलपुहहलनिनि। अंजामूगुसांलपीय००। कल्यत्रहेवइदिनि॥२४॥ ॥००निधीपंठि  
नवेधकसाकासयूननसुषवित्रविनवेधमनासवावागधिरुकरुगलमूषनासिकाभेनकलात्रागपुः  
नीकावनामषइम००। मुदस॥३॥वा॥ ॥अथअस्त्रीत्रागपनीकाव॥अथयेत्रकइडीषध॥गत्रकनत्र



गवधीप्रहृति। वंदनं नृवालायाः नंदलजलस्थीपीजियः। पदत्रागुशयहाः॥२१॥ ॥अथयद  
 वषागु। वाजकं कमनंदलसिना। पीपीजिनीत्रमिलाः। पदत्रागनागकानासदुः। मसूत्रसालिजनं  
 उषाः॥२१२॥ ॥अथयदहा। लकोडोषद॥ हृदिमित्रयत्रपीयत्रेवक्रुंठीरुनियाः। निलककाथ  
 स्त्रीपीजियः। हाःयुष्यअधकाः॥२१३॥ रूवीवीजत्रवषात्रगुड। कलमेवहलआलोदगीर्षदइव  
 स्त्री। वानीकत्ररुसुजान॥२१४॥ रुगमहिनाषेपानडिहाःयुष्यनिसुनात्रिडोषदयहृयससक  
 हि। कक्राशयत्रडयगत्र॥२१५॥ ॥अथडोषधंयुगरुहा। वक्रुः। सित्रकं वलो। आःहल। सागत्रहन  
 मिलाः। वाःविठंगःलाःवी। गजकंसत्रिसमहाः॥२१६॥ जलस्थी। गमलीकीजियः। गकनकयत्र  
 वान। पयसापीजिसानदिनयद्रुडोषधहृडजान॥२१७॥ वक्षगरुहहाःधूवा। अनिदाषसहृजाहि। सा  
 लिमूक। गमलीप्रद्युनयद्रुपुनियथकत्राहि॥ ॥२१८॥ ॥अथयदीयः॥ मात्रयेसांठिशपीयत्रो।

१३

नि। गजकंसत्रिशकटाः। अनि। गमद्युनस्थी। जवपीयेनात्रि। नाकोगरुहाः। ननकात्र॥२१९॥ ॥  
 अथसात्रभागजकंसत्रिअसर्गधिसिना। गमत्रायनस्यलिहृनि। पयसापीयेवधि। हाःगहृननकाः  
 लिमिसु॥२२०॥ ॥गरुहहागजकंसत्रि। गमस्यस्थी। त्रिनिश्रुंनियत्रयान। इवरागनराजनकत्रोहा  
 गहृनिसुजान॥२२१॥ गरुह॥ धनइवस्थालअभा। कत्रेयामसामात्रिनासलः। वनिश्रुंनिरुनिहा  
 गहृननकात्रि॥२२२॥ ॥अथगरुधाननिवात्रलोकोडोषध॥ धःलजालाकवसुहलामहलेठी  
 अत्रपाः। नंदलजलस्थीपीजीलागरुधानरुथहाः॥२२३॥ ॥अथकक्षीअसीकईडोषध॥ पारि  
 अवांगपीसिके। कत्ररुलेपुरुगमाहि। पसुनिहाः। ननकालही। डदत्रपीनसरुजाहि॥२२४॥ लेयुसा  
 वषययसईठका। अनि। लेयुकत्ररुनषनारुही। नीयकक्षकीहानि। दिनमहिहाःयसुगनिह॥२२५॥  
 ॥अथ॥ जठमूठीकीअनिकटिवाधेकक्षीवधू। नासपीनकीजीनि। हाःयसुगनकालमिसु॥२२६॥ ॥



अथरुगसकीयूनयमीकात्र॥२४॥याइकहलाहटकडी॥मां॥लाइकयूत्रावत्रमठीशकनप्रवित्तिमा  
 जयामहिवृत्र॥२४॥मदनगहविविया॥को॥कत्रेयूत्रषसंजागु॥आनिशअधिकिसंकायइयात्रहनकाइ  
 रागु॥२४॥अथ॥मां॥क्षवेहटकडी॥मां॥लाइकयूत्रावत्रमठीशया॥सीकनमां॥०लि॥  
 ॥२४॥ ॥अथडोषध॥हहलातइशक्षडकी॥आमलिउयाशसां॥आनिशलेयइसहगथा॥वृधिः  
 कूमात्रीहां॥२४॥ ॥संकायउसात्र॥मभशगाकाआनि॥क्षवेआनिशयागडठि॥हां॥संकायनजां १४  
 नि॥सिद्धिजागयंठिनकक्ष॥२४॥ ॥गेलीसंकायन॥कहूनीकायूत्रसमा॥गेलीकत्रमध्यां॥आ  
 निमधिशोराषीयं॥वीनीसीकनजां॥२४॥ ॥अथडोषध॥आनिइम्वकई॥नीवयानकाकाथ  
 कत्रि॥क्षवेआनिशनीया॥आनिइंगधिनसइं॥आनइइं॥वइयीफ॥२४॥ ॥अथकूयकठिन  
 कत्रयमीकात्र॥आसर्गधिमत्रवागजकलावयकनेत्रक०सां॥लेयूशकीजेनीत्रथा॥कठिनहाहि

कूयदां॥२४॥ ॥अथनाग॥सात्र॥अलर्गइलकाआलि॥नागदं॥त्रनदिवसही॥कठिनहाहि  
 कूयजा॥नि॥पगटजागयंठिनकक्ष॥२४॥ ॥अथडोषध॥लेलका॥निसाकूमात्रीनफकत्रिकूः  
 वडयत्रिशधत्रइ॥थलहलकानासइय॥सिधिर्योगजा॥२४॥ ॥अथयूत्रषयिकिसी॥डोः  
 षध॥दीर्घस्कूल्लिंगकत्र॥का॥विजियाअर्ककनत्रजठा॥त्रसधरुत्रयां॥गेलीकीजेयीसिकी॥लीज  
 कां॥हसकां॥२४॥आयमूरुसां॥पीसिकी॥कत्रेलेयूं॥दीया॥दीर्घकठिनअस्कूल॥दसतरा॥गेनी  
 य॥२४॥ ॥अथलिंगअस्कूलिकत्र॥वयाकू०गजयीथली॥आसर्गधिववशदां॥डुर्गगलः  
 कुनवनीनथा॥लिंगमूसलसमहां॥२४॥ ॥अथलेयूवृधिसकूलका॥आसर्गधियात्रदगजकला॥  
 वजनीसितामिलां॥लेयूशकीजे॥लिंगपत्रि॥वृधिसकूलकनां॥२४॥ ॥अथसंरुन॥अजासइः  
 ठकाइम्वहनि॥लेजालू॥उयां॥कत्रयदनाहिशलेयीयं॥असंरुनहां॥अधिकां॥२४॥ ॥अथ



मदनयमसर्व॥ गालमघात्रामुसली॥ सी० (गमयव्या०) कोयवीजअसुगंधिहनि॥ सीवलपूकमिला०  
 ॥२८२॥ वलासनावात्रिमायवसहनिशलसा०, जनि॥ सिताइग्वर्था० अयीवो॥ वरुणीयत्रमेनिगानि॥ २८  
 ३॥ ॥ अथकामविलासगुटिका॥ कूकमसिंगत्रहजायहसुगालमघात्रापा० कोयवीजतत्रमसुगी॥  
 अकत्रकत्राशमिला० ॥ २८४॥ उवत्रलींगनमालपनमूत्रवायनिषूत्रासनि॥ नीनिहागसुहलीजियहि  
 एकहीमयत्रवान॥ २८५॥ त्रसुविजियागुटिकाकत्रह॥ यत्रमितिटंकशुनकोसेनसमेरुनकिवातलि  
 नात्रमेअनका॥ २८६॥ ॥ अथइग्वहत्रापतीकात्रा॥ योय० ॥ यदनत्रजनीमाधकचूत्रालाइअग  
 वृपदमाषकयूत्रा॥ कूठमत्रवागजकसत्रपा० ॥ यान्हीजठश्रीवलमिला० ॥ २८७॥ ॥ दहीमदनः  
 कीजेनास॥ इयइग्वर्तनाकानास॥ यिरुदाषसुनुनासोअनि॥ यकयथनककाहावषानि॥ २८८॥ ॥  
 अथवगलगीधियुगीकात्रा॥ माधवलहनीनकी॥ यिवहलअत्रपा० ॥ लयशकीज० नीत्रस्था॥ वगलगीः

१३

धिजयत्रा० ॥ २८९॥ ॥ अथगुटिकामुखइग्वर्था० धिनाकइ॥ वलथनत्रा० लवी॥ गाविगीनशया० गजकः  
 सत्रअत्रजा० हल॥ उडोषदसमहा० ॥ २९०॥ ॥ गलीकत्रइमषीत्रस्था॥ सेनकत्रइमषद्यालि॥ आनः  
 नकीदंगधिना॥ नासुहा० ननकलि॥ २९१॥ ॥ अथलंय॥ योय० ॥ गजकसत्रपन्हीजठया० ॥ सित्रसयः  
 नअत्रलाइमिला० ॥ जलस्था० मदनकीजेगानि॥ अतिइग्वर्था० धिनाश्विनमहिजाहि॥ २९२॥ ॥ अथकत्राका  
 डोषध॥ अनिककठकीजटा॥ कत्रसमीपददिनास॥ या० सीसर्मऊनकत्रइ॥ हा० इवगधनानास॥  
 ॥ २९३॥ यदनमाधशवावयी॥ कालीनाशकचूत्रा॥ जलस्था० पावइसीसमहिदू० इग्वर्था० धिनाद्वि॥ २९४॥ ॥  
 यत्रमितिग्रंथसमूहसमा॥ मममनिषाजतयात्रा० डोषदत्रलश० नगहा॥ कीथयगटससात्र॥ २९५॥ वे  
 यमनीनसवग्रंथमहि॥ ककोसकलनिशुआनि॥ इषकदनहनिषूकत्रन॥ आनंदयत्रमनिधन॥ २९६॥  
 कसत्राजतननेसुषा॥ कीथाग्रंथअनिकदासुहनगत्रसीहवदिमहि॥ अकवत्रराजनविद॥ २९७॥ सुकलः



पदसुविमासनिधिदिनीयारुगुवात्रनि। यथायुधसुयगस॥२॥ मागुअंशुदहनि। ककाअलयम  
 गिसां॥ गुनिजनसरेसंवात्रियइ। हीनजहाँककुहां॥२॥ सात्रभा॥ कीथायुगटदधर्मथाडोषधनाग  
 निदानहनि। सकलसुधासमग्रंथा ककासमाफादिअंन॥३॥ ॥ निधीपंठिनयेयकसादास  
 पूरुनेनसुषवित्रविनेयमनासुषपदप्रपुषवासरवक्षा। गरुपानपुंदनकूलीसी॥ सुविधा। कुववि  
 थालिंगविधानिधनपुशोगपुगीकात्रनामसुयमभगमुदस॥ ॥ ॥ ॥ अथहत्रनालमानल ॥ ३  
 विधिलिखत॥ रुलेमदूत्रनिललीवगदादी। वगदादीनहां॥ नववीणावोयेसनवरुत्रिरेयन्नागुषत्रलर्म  
 दाले। निसकोपीयत्रिषत्रआध॥ मित्रयसत्र॥ रुदरुदपीसिकेबूहपाकुमाहिरिआवेनिसकयाविमाहिषत्र  
 लेदिननआयालीमित्रयपीयत्रिकासपठिआं॥ नो। डोत्रयालीमिलां॥ डोटां॥ लं॥ निनात्रिकेषत्रले। यी  
 दुविमषपत्रकीअठकात्रसुदं॥ षत्रलेदिननआविमषपत्रकात्रसु॥ थाअनिकसेनेयालीदं॥ यीसेत्रसु॥

गमटाकाटिलं॥ षत्रलेदिननकुसुडपत्रांनिसंपटकेत्रे। वठीवठीसीपीयोका नव॥ केत्रेयेसायेसारुत्रि  
 कनकसंपटका। माहिभेलेकं॥ हगाल। मिटीकयठकलप॥ ३ नीनिदलसीपीयकिंसपटको। डपत्रनिः  
 मिटीअंगुलंआधडोत्रयटावली। सुकावली। हांठीकोलेपदलसुकां॥ केहाडीनायसाहत्रलीआधी॥ नाय  
 सपदहां॥ लकठीकी। निसकासीपीकसंपटकेत्रेनोवा। डपत्रिहाडीनायसाहत्रली। मूडाकत्रिसुकावेगजपट  
 दं॥ गमसत्रानपहत्र॥ सीनलकत्रिलं॥ हत्रनालसंपटमाहनेकालीनिकसगी। निसकीहीषत्रलमाधे  
 ले। सत्रउहाककत्रसमाषत्रलेदिननसत्रउहाकांयंवांग। लेकेकूटपावीद्यालित्रसुगमटाकाटिलं॥ षत्र  
 लेदिननआसत्रउहाककात्रसुसाषकत्रउहां॥ नो। कवांत्रिप्रसुसाषत्रलेदिन॥ २ हीकवठीकत्रिकेषत्र  
 लमाहनेकाटिठिकठीकत्रलीसुकां॥ केहाडीमाद्यालिआधीनायिनलेआधीडपत्रिदली। आंपीकेअग्नि  
 दं॥ थीलोआगेअग्निदं॥ पहत्र॥ की॥ अग्निनागिकोदीयाकत्रेपागसीनलहां॥ नवलं॥ दसवीआंय







ॐ ह्रियत्रा लघु उ सत्र २ पीसिके गुठ सांगली वाधे नीति से सा १० ३३० गुठ पात १४ वाधे पहले महीने  
 उदत्र विधामि टि जा १० १ दसत्र सत्री नड जल हा १० २१ नी सत्रे वसकी जा १० ४ यो थे सक्ति जा १० १ गायी व मे स  
 पद वाल सा म हा १० ३ दूठ काम के जिय के नाही १० १ सा व मे दि वा दि छि हा १० ४ ॥ अ ० मे क दू या द ने वि सत्रे  
 नाही ॥ २० ॥ मे स व १ सू धि हा १० १ ॥ द स मे घ नू रू त्र मे हि क म नि ये दा क त्र ॥ १२ ॥ वा त्र मे म ही ने दि य स द  
 न हा १० ॥ ॥ वा ॥ ॥ सं घ द न वा व या त्रि ४ ये स र त्रि ४ ट क डी स प द सा त्र दू वा त्री स त्र सा ही ४ नो सा  
 द त्र स त्र सा ही ४ ॥ ॥ वा ॥ ॥ वाल द न वा व ॥ क द त्र स त्र सा ही ४ सं घी या स त्र सा ही ४ व त्री नो ना ४ ॥ ॥  
 ॥ ॥ वा ॥ ॥ ला ह द न वा व ४ स त्री स त्र सा ही वा त्रि ४ सी ४ लू ल स त्र सा ही ४ क दू वा स त्र सा ही ४ वा  
 व ल स त्र क त्रि के सी सी रु त्र सी सी ३ नी नि नि जा व हा १० ॥ ॥ वा ॥ ॥ वि स ग ग र ह ग ल लि क द न स  
 १० ३० दू ह दू ली का दाल ट ३० दालि रू १० वा धे दालि की था पी से दाना त्र ला १० के क ठ क त्र १० जा १० ह ल दू

गट

उन ष्टं क टं क म लिय को वे सी ता वं उ व ना १० को सी नांग म नि ला जा १० ॥ ॥ अथ वि धि ला ल क त्र (१) की  
 ॥ क प ठानी का ग ज १ लू सो उ की य ट १ दी रू हि ॥ दू ह स का व ली व र्ण १० का ही गु ल ली ज १० कि ह त्रिया लू के  
 ला लू हि गु लू पा ली स ड वा टि स का १० ध त्री ने १ क ड ला य ठे न व हि गु लू क प ठा ड य त्रि वि द श के सी १०  
 दाली १० ला ह ठा म धि अ ल सी का न लू म ली १० ड य त्रि का से को अ य ली दी ज १० न ले व ल सां डि की ल क डी  
 वाली य हि वे वा ल वा धि ग ठि न क त्री वि ट का १० य हि ला ल रु व नि स ही ॥ ॥ वा ॥ ॥ अरू ही म क त्र (१) की  
 वि धि ॥ क त्रि ला स त्र या वा दू ध स त्र १ म धि दालि वाला १ व स त्र दा १० २ व हे ड ना त्रि ल १० क त्रि ला क ट  
 क दू लिल १० ॥ गू द स त्र का स त्र २ ॥ पी सि मे दा क त्रि क त्रि ला पी से १ डू दू ध त्र रु ड (१) ड स म धि म लि ड स  
 वि क त्रि अरू ही म या धी पी सि स त्र १ द १० धा ट ली न न्ही क त्रि अरू ही म या धी हा १० स ही ॥ ॥ वा ॥ ॥ डो घ द म  
 द द सी न ल की क त्रि ट १ अ क त्र क त्र ट १ वी ज वं द ट १ सा रि न अ ग र ट १ स ग मि धी ट १ जा १० ह ल ट १ ग ट



१ कोचवीजट १७८ गलवीजट १ गगमाहीट १ सताववीट १ जाविनीट १ दग्गमावासर ॥ निसकाषावा ॥ सह  
 रुग्णां गमली वाधली वनयुमालषवावली ॥ रुलाहा ॥ ॥ व ॥ ॥ सवादा ॥ ये सरुत्रिगमाही नकः  
 रुीकली अदत्रक (धला धला रुत्रि) गुठनि वत्रसा कटिके (गमली वाधली माला १७८ वावासेत्र ॥ धनामदरुः  
 लाहा ॥ १ ॥ ॥ ॥ अथ नित्रगुंठी अन्धान ॥ नित्रगुंठी कामूलयवा नपी किल ॥ मलग्नसूरुनक  
 सूरुवडमा ॥ सुका ॥ पीसल सह रुग्णां गमली वाधली ॥ वनयुमाल गमली १ वाली १ सर्वराजन दूधरागल  
 धामन ॥ कावा कलराजन कत्रावे १० कवात्री १० जिमावे जे सीवा यामीगे ते सीहूने ॥ वज्रनगीहा ॥ रा  
 गी वद्रुगहा ॥ १८८ गम ॥ कसूगस्था पीवे दिन ३० कूखजा ॥ रुली कसूगस्था पा ॥ दिन २१ वालस्यामहा  
 हि दिन १४ पीवे ॥ दिन २१ सूर्यनषा ॥ दिन २८ पीवे अरुधनी ॥ आनयोहे यानीनयोहे अग्निनयोहे ग  
 ॥ कद्वधसगी पीवे मास ४ गल महि सह दषे ॥ आयुदावर्षे मीनि ३०० भयल मिली ॥ नित्रगुंठी कामू

३२

ला ॥ ॥ व ॥ ॥ डोषददादकी ॥ दा ॥ टकरुत्रि ॥ लुवादा ॥ टकरुत्रि अत्रवजमाय सिदानोपी सिलः  
 गवहलाहा ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ श्रीगुत्रसुखा ॥ अथसा (गयोंग पुकत्रला) कद्वयमहाराग ॥ धा  
 उगहंगया ॥ सहदया रुयसुथा ॥ रुयादगनिषाराग यणीजा वादिरागिका ॥ ॥ हस्माजी कपरागी ॥ गमत्रराः  
 याधुदं नुकादगदं त्याहु ॥ वधक कटिका ॥ २ ॥ दगहागदजटा ॥ विन्नकां गानददं कां खनार्कस्य वरु  
 गमालगलुनवरुगिका ॥ ३ ॥ धजारागल अलरुया ॥ द्विषका भषगिका ॥ वजालीरागलकास्या ॥ निधिसाव  
 डवावली ॥ ४ ॥ लननषाठनकां जागा ॥ सर्वसिद्धिकरं नला ॥ पुनियोगं वडका ॥ वडमीनसुगिका ॥ गार्थ  
 हने इकिजागना ॥ यरुजुयथे विना ॥ लननषां यत्रिरागना ॥ ह्यफिहउ निर्गयना ॥ कला १३ गुल ३ सत्रागप  
 रु २ समुदा ॥ रुवनानिय १४ रुड ११ राग ४ रुदिवा १० ॥ मूग ४ ग्रह २ सत्रवि १२ ॥ ॥ वडध्या ॥ निधय ११  
 ॥ धनिरुलाहागानि सहत्रना ॥ सूर्यपुण्यथे वाथा ॥ वडवर्धं समालिखना ॥ ॥ वाचना कं कसुमया ॥ कुर्यान्



धाउगकाष्टक। हाही दूह १ वउदी इलकेक वीजमालिखतु ॥ मागुर्लिखदइ। ममत्रकउसंयुगा। मंगुलः  
 दूयउंनन। पुयवादननकुमान् ॥ १० ॥ त्रक्षयासांकुसासांड। प्रषा। यवजमालिखतु। धाउग। नोउकाष्ट  
 नी। मथेकेकमोषधं ॥ ११ ॥ स्थाययत्पूजयद्विमान्। रंजामंगुलरुकिना। वींणीयादिकुमलेव। कउलाका  
 वनोरुवतु ॥ १२ ॥ स्थायनपूजनधेव। सर्वकामार्थसिद्धनतु ॥ ॥ अर्यं रंजामंगु ॥ (तं) जीवकवामूठुतुः  
 कूत्रममसर्वसिद्धिकूत्रकूत्रसाहा ॥ ॥ अर्यं रंजामंगु ॥ १३ ॥ पूर्वसवीर्युर्ग १०००० जयतु। ननसर्वसि  
 द्धिकूत्रारुवतु ॥ कलागुलसमेदोर्णां अंगलययगदनी ॥ १४ ॥ नेत्रवकयिलाशन। कऊलं वाश्ववस्य न।  
 दिसफमनूत्रेसु अंगलयाजगदनी ॥ १५ ॥ नेत्रवयूक्षत्रजागा। राजनमीवसिरुवतु। त्रडाष्टदनावाः  
 लेसु। अंगलयाजगदनी ॥ १६ ॥ दंयं यमलायनी ॥ रंजन। गत्रमादिके ॥ धूपिर्ग वसुपूषावा। दलुकीः  
 वाश्ववस्यतु ॥ १७ ॥ कलानवगुलेवाले। अंगलयजगदनी ॥ दंयं यमले ॥ योनेनेत्रनायाश्चवस्यः

३०

ततु ॥ १८ ॥ निर्धीदसूर्यमउशि। अंगलयजगदनी। धाउग। यासुधुधन। नवद्यदरुननव ॥ १९ ॥ वउत्राद्यः  
 जनजायं। पंवाद्यामानकर्म। रुद्रकलादिदूयां। मरुगसर्ववर्गकर्त्री ॥ २० ॥ नयानादियदुना। सर्वः  
 लाकवर्गकर्त्री। षडगिकलाजागा। निलकसर्ववस्यतु ॥ २१ ॥ मून्यकसमनूतिर्गलययतिर्वग ॥ २२ ॥  
 दिग्बलनिधिवेदध्यागुलिकायवर्गकर्त्री। क्षत्रजमसुककाला। राजनवाधजाजयतु ॥ २३ ॥ गुलदिग्वः  
 सूकोमेस्या। दंगलयामयं कत्रावस्यदसमेतूडोनसंज्ञानियसुनिकुतु ॥ दिग्बलसमनवहि। याविल  
 यकनंगति। धूनेविजयमाप्रानि। यथाइर्जाधनधुर्वी ॥ २४ ॥ मनूस्मत्रकिरिर्वेदे ४ कलाउगुटिकाकत्रा ॥  
 बाहोनित्रनिकं १० वा ॥ ४ लोयोत्रेनवाधतु ॥ २५ ॥ गुलदिकसफनवहिर्गलययतुकात्रउड। अउगनात्र  
 । मयन्यवंक्षपूगवनीरुवतु ॥ २६ ॥ निधिदिगुलषडिस्थांडुटिकावीयं ४ कूमूषाअधवाहसुलेयनन  
 प्रलोहनेदमन ॥ २७ ॥ स्मत्रसूर्यलद्वसुकि। वूर्णकलायजाजयतु। रंजवानननगनीधो। यत्रसेन्याविदाः



वकी॥२॥निधिइवसुदिमिमु।युर्लकलाजलक्षिपुन।मंयीलायत्रसेनंन।दयहीनंयजायन॥३॥वृद्धः  
 षट्कलायुकी।जलनासंयुर्ववना।निलकवाद्रुमलवा।धत्रनवाधमूर्धनी॥३॥यत्रसेनंयलायकु।नानुः  
 कार्याविवात्रला।कलाग्रहयुगेवाले।पिष्ठायादोयलयन॥३२॥जलसंरुकरा।आगा।समूहपिगः  
 निरुथना।वैडार्कसफरुवाले।यादयुग्मंयलयन॥३३॥यथेष्टजलम।अडागकलेवययासुलावद  
 दिग्मनिकोमेध्यावन्कलेनकमद्विषी॥३४॥समार्कषड्गुलेयुकी।निलकंगुजिह्ववना।त्रविनूडवाधम  
 उहि।निलकंवांगलयन।कलासर्वगजा।कूत्रेयाद्येदृष्टेनर्वाक्षन॥३५॥सफषलवसूर्येध्यायुष्यकके  
 मलेयुगी।दहुरुयनत्रसुली।सर्वलेयवसंकर्ष॥३६॥युगीदमनूनिधि।आनार्यापिष्टेनर्वादिना।य  
 धार्कलययखा।सर्वगुविजयासुवना॥३७॥स्यष्टमागुलावेजंथा।संदह।ननुवादजयंकन॥३८॥  
 गुलषट्निधिदिमिमुयुर्कंयंमलेसहे।हसुयलयननना।स्यसुलीनयवधरुवन्॥३९॥त्रविदुः

३१

सत्रनागेमु।युर्कंयंमलेसुधा।दशंगधुधेधुर्थायी।धनधान्यकत्रग्रह॥कलात्रुडकगानिर्लेयना  
 धात्रलक्षयी।युष्वावाधहर्त्रंख्यानंनधलाहवर्गकत्री॥४०॥कलार्थमवनकेमु।गयासेमोहिषेष्टेना  
 रुमहिकजलंरुवा॥कूत्रनंवात्यलोकिकी॥दक्षिणंरंयकूत्रन।नत्राक्षीनागुसंसयात्रविदुसफरुः  
 वालो।सिलनेलसमायुगी॥४३॥धुपादिष्टमकत्री।नत्राक्षीनागुसंसयाना।गंददिनदिमिमु।गु  
 वृष्यादिनकन॥४४॥नेलेनवनधुधन।धुधनजनभाहकन।समार्कषड्गुलेयुकी।युर्लेन्द्रयागमः  
 रुमं॥४५॥कलाडुनिलकंरुलसर्ववस्यकर्षरुवा।दिसफदादनेकोमे।जनभाहनवधकन॥॥४६॥  
 निलकंनगुसंदह।नानावादजयत्यपि।दिग्मलनिधि।वैदेध्यायुर्लिमायांगुत्रोदिना॥४७॥मलर्यंययुगः  
 क्षिप्ता।वायीकूपनजकक॥पिर्वनिनिर्कलंययानंउवग्गारुवनिवी॥४८॥नवषट्निधि।वैदेध्या।दशर्म  
 मदिनकन॥दयंयंमलायनंरुसार्कवाधयुर्लीया।सत्रनंसर्ववस्यकन॥४९॥कलासफदिनवकोधरु



वनस्य विने। खदहलपनकला। वनो नामावसं नयन॥ १०॥ यवगवानसह नो। मनस्ययगग्रहे॥  
 कर्मदे॥ कमलेधूया। द्रवहनविषायदे॥ ११॥ मनस्ययदे नो। वोलो। हानयदवविषये। विषयवद्विधे  
 नि। नस्ययानायधूयन॥ १२॥ कलागुलेस्मरेद्वार्या। हत्रिडाधनयानन। विषेनानाविधेद्विनि। कालदः  
 शायिजीवनी॥ १३॥ दिक्कालगुलवाध्यायुर्लरुं कयदययन। सर्वेषां यमजीवानां। नानावस्यकत्र  
 यत्र॥ १४॥ कलाकामगुलेद्वार्या। कलावकां विधानयन। मयनं वधनागनीधुं कनदायाजयंरुवन्॥ ३२  
 कलावयुने नूदे॥ सिनमध्वस्यपिठिने। कर्षमाणं सदाखादे। यन्मासे॥ यलिने यल॥ वडाकायाहवेः  
 दध्या। क्रावदंसीवक्रदिनगया। कलावधुनिवालेध्या। नकवर्गगवांयया॥ ११॥ पिश्यायिवदनीवध्यासम्य  
 क्पुणवनीरुवन्। वसूदस्मरेद्वार्या। पूर्ववर्लरुनसूत॥ १२॥ दिग्मल्लस्मरेद्वार्या। मूर्द्धन्यावाटका  
 वका। नूडास्मत्रयकेमु॥ १२॥ सिनमध्वस्यसंयुनं। श्रीगलियं विवादडा। जयमाध्यानिनान्यथा॥ ३०॥ नि

धियकशने॥ कामेसकयुने नूदिनानननेलननद्वर्हिदि वायधुनिरु निध्व॥ ३१॥ नवधन्नाग नूदेधु  
 मूर्डिने निनिनग्नका। होमपाट्ट नित्रोमानीपिश्चावांकलनेलके। हस्तेलिष्कारुवलक्ष्मी पादयावीर्यः  
 धनर्त्त॥ ३२॥ सनजो जनगमीनरुवखेव नसीसया नूदं मननागध्वनवनीननसंयुनं॥ ३३॥  
 ववितननलेपन ननुजानं नननय। यनूषाजायन नामा जथावरागुलान्विता॥ ३४॥ कला नूदेगु  
 लेवदे। धूपायं मधुघिनी। अपस्मत्रिनिहंत्याग्नानानाकारं नमहाकटं॥ ३५॥ गुले॥ कामेस्मरे नूदेन  
 क्लीनेलपिने। गिलाहवेष्टिने वके। धात्रिने धूपाहास्त्रे॥ ३६॥ मूदल्लकायलसल्यं दवत्रधिनद्वर्ध  
 न। दिग्मदमूनिकामेध्व। श्रीकलीनेलपिने॥ ३७॥ यथाहास्त्र नजागेन गिलाहवष्टिनी। मूर्द्धि ४  
 खयल्लस्यजानां गनाविद्धि॥ ३८॥ एनं सर्वमहाजाग। ध्वंजामं गुलसिद्धिदा॥ ३९॥ ॥ निधीया  
 वनीपुननिखनाध। सिद्धिवित्रचित्सिद्धिषं भुमं भुसात्रमृत्तसंजीवनादिकदयूटीनामसमा



फ. यथमयदगः॥ ॥ व॥ ॥ रुतात्रवटमूलं वा॥ जलनसह घर्षयन् विरुत्यागयन् मंगु॥ निलक  
 लाकवस्य रुत॥ ॥ १॥ पृथाननवा मूलं, नूदं गीमूलिकायिवा॥ यवामूलमथ वक्षकं वंगनाहिमंगुनी॥  
 पृथारुवमिसेवन् मंगुयन् ककथनानं पृथंकारुयरुगवनि॥ गंही प्रत्तखाहा॥ अर्थमंगु पूर्वोक्त, अ  
 यूनदर्थ॥ २०००० अयसिद्धि॥ ॥ अयामागस्य मूलं रु, यथयडावननन॥ लिलाटनिलक कया  
 दनी कया जागुय॥ ३॥ उनभाकं दगवत्रजालिनि सर्वलाकवर्गकविखाहा॥ ॥ अर्थमंगु डकथागः  
 स्य अक्षानत्रसहस्रं १००८ अयसिद्धि॥ रुतायवा सागृक्षी या, समूलं यं दवात्रली॥ डरुनाहिमुखनेवः  
 कृदयन दल्लसल॥ ४॥ गल्लिकं किं कं ठं रुतं, अजामुगं नयी यथना॥ क्वायाष्टु द्वागुटी कया सोव  
 टीवकयं दनी॥ ५॥ यद्वाथसागुलीलिह्या, नयास्य द्विजगदगी॥ ६॥ सावटीदवदा नूव, रुतं वसि  
 ननदनी॥ जलं रुतं विं लयायं, दलं विं रुतं दगी॥ ७॥ सावटीवाचना रुतं, कलना ननपी यथना॥

३३

अनननिलककला॥ सर्वगुवित्रयारुवन्॥ ८॥ उनमभसवार्थसाधिनिखाहा॥ अयसहस्रं अय १००० पूर्वथाः  
 गसिद्धि॥ रुतुपक्षक रुतं दगी॥ मय्यावाडयाधिनी॥ वृत्तिंदलासमध्यासहदवीसूत्रनेयना॥ ९॥ नीव  
 लेन रुतं वृत्ती॥ दलं वक्षकं वृत्ती॥ स्नानलेयन रुतं वृत्ती॥ अर्थवस्य करी॥ रुतं॥ १०॥ वायनीसहदवीर्यानि  
 लकावसिकात्रक ४ मन ४ सिलावनमूली॥ अयनं सर्ववक्षकं॥ सफही नीवृत्तस्यां॥ सहदवीयजायना॥  
 वाजावस्यमवाधोनि सर्वलाकषक ४ कथा॥ १२॥ नित्रसिधायनं च, वृत्तं सर्वगुवक्षकं॥ मूषद्विष्टावन  
 मूली॥ कयावडवावकामथाना॥ जानात्रीसाहवदस्या, मगुजागवनान्यथा॥ १३॥ उनमारुगवनिमार्गः  
 गंधवी॥ सर्वमूषत्रं जनि॥ सर्वस्यां महामार्गं गिकुमात्रिकलिदं दं वगी कृत्रुखाहा॥ सहस्रं १००० अय  
 कजागनीसिद्धि॥ ॥ खनायनाजिनामूलं यं दग्रहलं वडुनी॥ अजिनादाननासुनावनिकुर्था रुग  
 गुयं॥ १४॥ मयनादस्यमूलं रु॥ वमुखं वस्यकात्रकी॥ यनायवादीरुवन्मूक॥ अथवायानिदिगीनरी॥ १५



ग्रहं शुक्र बुध दक्षिणं शनिं गुरुं शक्रं । नानावर्णं नय दानं सर्वलोकवर्णकरी ॥ १३ ॥ शिला वाचनं नमू  
 लं वा त्रिभुवनं कदम्बं ताम्रं सारणं सर्वेषां वर्णकर्मकरम् ॥ १४ ॥ खलु वक्षिणं नमूलं मण्डिका कायनेन  
 अङ्गुली कदम्बं गमाया नीलोत्पलं त्रिधनेन त्रिधनं ॥ १५ ॥ चर्वयन्तान् नमूलं तने वा तिलकं कर्णं दिशि मातु  
 वर्णं याति नात्री वा नृषाधिवा ॥ १६ ॥ डकककत्रलनिवन्तकत्रकुरुवममादिश्रुमन्कुरुखाहा ॥ डकः  
 क्षिप्रं जंयं मे मं । आगन्तुं सहस्रं १००० अयं सिद्धिः ॥ ॥ रुक्मिणीशायनीं पुर्वमवायुर्गन्तुं गन्तुं  
 नम्रवर्णं नीलं तने वा या निरुज्जनं ॥ २० ॥ उडुक्षिप्रं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं  
 अनददिवा उडुक्षिप्रं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं ॥ व ॥ मङ्गलं मिदं अष्टाशुभं नाथयणीदनि । नवहृया  
 तालरुगानि सप्तवर्णं नववर्णं ॥ २१ ॥ उडुक्षिप्रं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं ॥ व ॥ अथवाय  
 वर्णं ॥ कुरुमं वदने वदने वाचनं गणिमिदं नीलं गवाक्षीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं ॥ २२ ॥ उडुक्षिप्रं वक्षिणीं

३४

कंभवर्णं कुरुखाहा ॥ पूर्वमवर्णं सहस्रं १००० अयं ॥ तना अननं नमं गुलसफाहिमीं नमं निलकं कार्यं ॥ सवर्णं  
 दागवर्णं नमूलं वाचनं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं ॥ २३ ॥ मधुनीं गन्तुं पुर्वं वक्षिणीं  
 गोवर्णं पुर्वं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं ॥ २४ ॥ अथवायुदीप्यं गन्तुं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं  
 वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं ॥ २५ ॥ मार्गणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं ॥  
 वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं ॥ २६ ॥ वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं ॥  
 वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं ॥ २७ ॥ वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं ॥  
 वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं ॥ २८ ॥ वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं ॥  
 वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं ॥ २९ ॥ वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं ॥  
 वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं ॥ ३० ॥ वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं वक्षिणीं ॥



[illegible]

विरुमं॥३१॥स्वांगं धूपं लं न रुक्मिणं कामवत्क्रिय। उं मूलि मूलि महा मूलि वक्र वक्र। सर्व संकः  
 गुया लया उ य व व ४ स्वाहा॥३२॥ व॥ ॥ जिह्वा मलं दं न मल ना ग्ना कर्ल मलं न धा सूत्रा या न यदा न वी॥  
 वगी कर्ल मद्रुं॥३३॥ उं न मा ४ न व प्र स्थान म ४ सर्व रु व ल य व अ मू की म व न मान या॥ स्वाहा॥ व॥ काम  
 कां न य चि रु ना मा ग्ना र्कं ज यि ना नि नि। अ व ग्धं कू व नं व ग्धं पु स न्ना वि श्व ज व र का॥३४॥ लं सी क्री काम यि  
 ना वि अ मू की काम ग्र ह या। अ व प्र म म नू प द न शे वि द्या न या। २ डा व य। २ श्र ह न वं ध य २ धी रु ट्॥ व॥ ग्म  
 मूं ठा नि नी य व लिं रु ला य वा नि मू ठि क। या नूं लाली रु ला जा चूर्ल उ ड व हि र्ग नं॥३५॥ या नूं लाली व य  
 थ क चूर्ल। व रु थ च प थ क २ व हि र्ग नं उ य चूर्ल। मू र्ध चि फ ड ग्म मी य॥३६॥ अ न गं न न चूर्ल न कि ४ द्वा  
 व ग्धं नि व र्ति न। सि श्र जा ग्म न वि ना मं ग ल सि दि वा क्॥३७॥ गं ध रु स्य नि त्रा म क्का पु न ल न व या न  
 का रं गि व कू व स रु वा व र्ति का या ल स र व॥३८॥ स फ रा नं न सा गु क्का म जा पा नु प दं य थ न। क ज लं नः



नपाकुङ्गनिवात्रसमूहप्रभु॥४५॥ननीजिमानत्रामावणीकूर्योदिलाकनाथा॥वा॥गुह्यपदयुक्तय  
 धसंग्रहंनिसंगमायानिधमरुथावीर्ज॥वत्तनावामयालिनी॥ननस्यस्यधीवग्नावामयादानिलकि  
 ल॥४६॥यानीजस्यजलीसफदत्ताविषामिमांजयन्॥सालंकरेनत्र४कंन्यालरुनमासमागुन॥४७॥  
 ॐविष्णवधुनामगंधर्वकंनानामादियनिस्रवृया॥सांकरांदहिमनसुस्तेविष्णवसखाहा॥॥वा॥॥  
 अथलिंगलय॥॥अथंकर्यंरुंरुकर्युत्र॥ह्रिडांमदनमधु॥भषयिरुनलथार्यलिंगमुदाववध॥३३  
 कड॥४८॥कर्युत्रानंरुयस्काका॥रुक्कननकयालकं॥मधुयुक्तंयुलथार्यलिंगमुदावकंरुवगा॥४  
 ९॥ग्रीवालंयुष्य॥कर्युत्र॥मूडीयुष्ययथिर्न॥लिंगलयवर्जनामा॥दर्वकित्रिगुसंगमा॥४९॥कपिलिर्ग  
 निस्रुर्नकंक्रमंनकंमधुगृध्रिविज्ञानस्का॥नास्त्रिपिष्टातिर्गयलंयथगा॥५०॥नकांवाहालाहलंजा  
 ग्ना॥डावकावसायडमुया॥५१॥टंकलंमधुकर्युत्र॥पात्रदंमदयगुसमी॥ननत्रययत्रलिंगवग्नाकड

वत्रंथाविर्न॥५२॥वहनीरुलानियिपत्तामित्रवानिवा॥मधुत्रायनयासाई॥लिंगलयानिवग्नाकड॥५३॥  
 कोडगंधकलयन॥निलयुक्तंनरुलं॥॥वर्निलयथंन॥॥अथडावली॥रुक्मगर्द्धरुलिंगसंगलाः  
 कांमधुनकिपन्॥नानयस्याविष्णवावगलाकामधुत्रनगा॥नकिडनिविषत्सुगी॥कषमाणंयत्राधयगा॥५  
 ४॥वहिविर्नधनेलेपेलाकहिंगुलकादिहि॥डक्षीयंधत्रयद्रुक्कामिनीनागुसनिष्ठा॥कनलव॥अमूषनसि  
 नाडिस्मरुडर्वनिगा॥५५॥जलनलागली॥कंदपिष्टाहलंयुलंयथगा॥हलंनमुिकत्रस्य॥५६॥दर्वलज्जोष्ट  
 रंयथा॥५७॥सर्वेषांयवथागमनां॥मंरुत्रार्थनिवादिनी॥अशरुत्रंनं१०८॥अद्या॥ननाथांगस्यसिद्धया॥  
 ॐनमातृगवतंउदामत्रध्वराजडावय२॥मुक्षीमदंपांनय२॥खाहा॥०९०॥॥वर्निग्रीडावली॥वा॥अथ  
 पनीवग्ना॥षड्वीरस्यमांसंता॥मधुनांसहयषयगा॥अननयानिलयना॥पतिर्न॥अरुवल्हली॥पंयांगीः  
 दाडिमपिष्टाक्षनसर्वयर्गंयुर्न॥यानिलयपतिर्न॥साकत्रानापियरुहंगमा॥५८॥कर्युत्रंदवदार्नवः







उवधर्क। अजासृगं संधय। स्त्रीर्षां निरसिनी कथय ॥ १४ ॥ पूरुषस्य पसूनां वा क्रियया कथय ॥  
 जलका नीलसंघेय। सावित्र्या दहं हि गो। जवीनकोले नव्वर्ण। धृपादी कर्षय नृमिय ॥ १५ ॥ साध्या वामः  
 पदस्थाना नृलिका माह वरुण ॥ ककला सस्यत्र कन्यु निमांका वरुण तस्य ॥ १६ ॥ नृग्यां नामा कन  
 नस्य गडको विलिख नृदि। मृगुक्ता न निषने नृसदा नृवयूत्रय ॥ १७ ॥ आर्षय नृगानां त्री नृतया नृः  
 नृसंस्तिता। वरुले नृमि नृजया। गुकन नाम यटका। पुरुषा हलो दीनां कत्रा त्या कर्षय धृवी ॥ १८ ॥ अ  
 वरुण नाश्र कर्ष कर्म कर्लो विष्टि पूरुष मर्क कत्रा हि की ॥ व ॥ वरुण कर्म वरुणो ग्रामो रुम नृजन ना वः  
 धार्हि नो कत्वा दहं नो ह विरु कक्षो नृया पुन ॥ १९ ॥ वरुण वधय दहस्स पृथक् नृत्वा टली दय ॥ नृया प्रक  
 मजर्ण ॥ गृहं वक्षय नृकथ ॥ २० ॥ या ४ या या नि उ सामधी सायुध नृनृय दय ॥ नृस्म निरसिना  
 र्क्ष क्रिष्ण दा कर्षय मिय ॥ २१ ॥ अय नृनृय दह नृवा वसत्वं निका मिनी ॥ व ॥ कषु वरुण य स्वाहा अ

(३८)

यमं नृपुर्वमश्रय नृजया। नृना उकथा गनहि मं मं नृसिद्धि ॥ व ॥ उं की विलि र्द्विद २ दहि ह म ह न २ य  
 व २ अनेन मं नृल सुही कील वं अश्र सना हि मं नृि नृकत्वा। नृपु निवाधया नृस्य नामान मा कर्षय नि ॥ व  
 ॥ उं आ वी ह वादी दं रुद्र ॥ लक्ष्म कं नृय दस्य पुर्वम वा समाहि नृ। दृवा दा कर्षय नार्त्री नृगत्या क्षारयः  
 त्यत्रि ॥ २३ ॥ उं मल मलय ०४०४ ॥ अनेन मं नृल ॥ कं रुका वस्य मृको ले या पुनि कर्म कत्वा ॥ मान षा स्त्रि की  
 लकं न अश्र स ह या हि मं नृि नृना गह निषने नृवृद्धि वश्र वय नृ। अथ वा ना पुनि कत्वा कट्ट कना लि यः  
 मक्र दिष्ट नय द्यय नृ। नृस्य रागं स्रु विकाया विप्रया। ललाट नामा कनृ वं द्वा अना मि का वृ धि वल लि य नृ  
 ना वं पुनि क निषादि। नां गत्र मध्वं नृका यय नृ। नृना पुर्वमं नृजय नृ। या व सि धि कं गल नि ना व ना कर्ष  
 वी रु व नि ॥ व ॥ ॥ अथ स्मं रुनी ॥ नां गत्रा जाय सं ग वृ सिद्धार्थ सह दे विका। उल्य २ व वा ध्व ना उ व म  
 षा समाह व नृ ॥ २४ ॥ लाह या नृ दिन दिय। दिनिदि नां नृसमृध व नृ। निल क न वं नृगुणी वृद्धि रुक



[illegible]

हस्तनीमहिषीवक्रधरुत्रहसिनामलं। मयूत्रस्यमलसार्धं धूपकलंनभाहकन॥३॥ वृद्धिकाडवयूलेन  
यूथामाहयननृत्तं। गत्रलंधूलघर्षांगं महिषीसाविर्नंकल॥४॥ निम्नयांकुत्रनभाहं धूपागुगलः  
संशर्गं॥५॥ ईर्कूठंकषणानि, हलिनीनालकंवया। कनकानियूनधूपस्वस्त्यवस्यकात्रका॥६॥ न  
लांगत्रमलकाया, विस्वावाजगनाहवा। नचूर्लेधूपितामो, मर्दनिषालिनाधुवं॥७॥ हलिनीविषधरु  
त्रं। निषिविस्वाहिर्नंविर्नं। समरागतयाधूपा, महयणवनिष्यय॥८॥ विमलान्निषिषाचूर्ले, लंगली  
निषिनामलं। महिषाश्चकडल्यानं, धूयामाहयननरं॥९॥ नालकान्मलवीजानि, पानान्मलारुवन  
नासमन्नीत्रनिनाकालंस्वस्त्यानाफुवेरुन॥१०॥ चूर्चुंदनीसर्पमूर्धं, वृष्टिकस्यडुर्कं॥११॥ हनिनालः  
समंधूपाभाहविश्वकर्नृत्तं॥१२॥ अथडच्चाटार्थंवांगंविणकस्यकीलंअर्धंयूनवसो। सफाहिमंति  
नंगहन्निखनाच्चाटनंरुवेन॥१३॥ छंलाहिरुमुखस्याह॥ स्वात्पामोदंवरंकीलंमंतिनंयडुनंगुलीं



जस्य निषन (गह, कस्य उवाच नरवत् ॥ १२ ॥ घुगिलि गिलि स्वाहा ॥ रुत्रं न्यामं गुलं कं ड्डुलु कास्त्रिय कीः  
 लकं । सफा हि मं गिनं जस्य निषं न्या वाचनं गृहं ॥ १३ ॥ उं दह दह हन स्वाहा ॥ व ॥ का का लु कस्य पचा  
 स्तु इत्यादि विधिं गनं । यत्नात्मा मं गुया गन समस्मा वाचनं रुवत् ॥ १४ ॥ उं न मरु ग व नं नूदा ॥ घ ड्डु  
 पृष्ट स्वाहा ॥ ०४० ॥ ॥ न त्रां सु की ल कं दान निष न्या च ड्डु त्रं गुली मं गुय कं म त्रि दान सस्य म्वा चनं  
 रुवत् ॥ १५ ॥ उं न मारु ग व नं नूदा य अमूकं ग ड्डु ग ड्डु य व र ग ग य र ग र य न ग र य स्य नि त्रा क्ताः  
 घय नि ०४०४ ॥ मं गु ॥ न त्रा सु की ल कं यथा गृहीया च ड्डु त्रं गुली निख न रु ड्डु ह य स्य रु व न स्य क ल क र्यं ॥  
 उं दं दं दं रु स्वाहा ॥ अ धि स्त्रि की ल म ध्वि न्या निष न च ड्डु त्रं गुली गृह गृह नि हं त्या गु क रं व व त्रि ल क  
 लं ॥ १० ॥ उं सु त्र य व स्वाहा ॥ स र्या सी गु ल मा रं ड्डु (ध्या र्या त्रि य गृहा विषा न स प क्ष ज र्पं मा त्र य डिः  
 यं सं ग नि ॥ १८ ॥ उं मा य (ल स्वाहा ॥ व ॥ ष ड्डि इ र धि को ग्रं धे विष त्व वा न त्री ह ला गु न न च र्प य दा नः

१०

र्गं न न ना र्था न ना दि धू ॥ १९ ॥ जार्थं न स्या ट कानी वा द ग हां दि ना त्र य धू वी ॥ २० ॥ स्नान रु द्र स्य लिं ग स्य मुद्रा  
 र्थं गुं स मा लिष ता सृ पि ष्ट वां ग त्र क न वि र्णा ग त्र विष न य ॥ २१ ॥ लि वि त्वा त्रा ष वि रु न ग स र्व ल य य ल  
 वा ॥ अ ध्व य मा व ने स्त्री त्वा ग नो मं गु मि दं ज र्पे त् ॥ उं न मारु ग व नं ड्डु क (र्ष य रु रुं ड्डु क (र्ष वि क ता न न  
 का ल त्रा हि मा नू षा नी । व न्ना त्र धि त्र हा ज नं अ मू क स्य पा फ का ल स्य । म ल्क प द ड्डु पृष्ट रु ह न रु द ह र्मा  
 स त्र धि त्री य व र य व र ड्डु पृष्ट । अ मू मं गुं ज र्प दा नो त्रा ष का दि य स्मि त्र नू । अ र्ध त्रा नु ष ह स्ता र्णी म र्द य लिं  
 ग म स्त कं ॥ २२ ॥ रु द्र जं गुं म स्त क स्त म य नं न त रु न्ना दि धू । इ ष्ट य ल य (नं वा र्म सि धि या ग ड्डा द न ॥ २३ ॥  
 ॥ ॥ अ थ वि दं ष ॥ न क रु स्त का क य रु म ल क स्य क र य त्र । द र्ह व द्वा य ष्म स्मा हि स फा हं ज लीं ज लीं ॥ २४ ॥  
 त्र क्तां ध मा त्र य षो कं मं गु य कं ज लीं ज लि । नि र्ण न या य दा न र्वा अ र्क्ष कं त्र स रु य कं । य त्र स्य त्र रु व द ष सि  
 धि या ग ड्डा द न ॥ उं न मा टि किं य मा टि कि या गी त्री अ मू क स्य अ मू के न का का ल का दि । कू न र ड्डु स्वाहा ॥ व ॥



अथ उमरी क वने मंगल कंधू र्क वीजं वा यूल वूल चरु दय ग। दलं मल्लारु वगु सिता कीये पुन ४ सखी  
 ॥ २३ ॥ मयूत्र पात्रा वग कर्कटा नां ग्र मयूत्री र्थ कनकं वगाली। नन मूर्द्धि दलं कू वग पिभ र्थ। निवर्क न  
 मूर्द्धि नमस्त कषू ॥ २४ ॥ गुठं कर्क वीजं व यूल वूल सम २ दल स्यां गप दान वी। उमल्लारु रुद्र लह वग ॥ २  
 ८ ॥ गर्क वीज गयू र्था र्था पीत्र पान स्या वदं। उं मल्ल कल वि श्वे ०४०४ ड काया गन मय मंग ॥ व ॥ कषू जी  
 व क वूल न अंजि नासान यग्नि। ग कल वालय वृक्ष खल्लारु वगि धाट क ॥ व ॥ २८ ॥ खाल्ल वूल दू दनीः  
 वूल दलं पगि धाट ४ कं शा खल्ल वंदन पान न गदान सन ससय ॥ ३० ॥ अग्नि किल मन्वि र्था कुर्यात्सं  
 फी गुलं पुन ४ निषं न्य अग्नि सा सा लायां मात्र यत्न वधाट कं ॥ ३१ ॥ उं यव २ खाहा ॥ उकथा ग अर्य मं  
 ॥ व ॥ पुन वल्ले विरु काष्ठ कीलं दि गुलं द्वि पग। सगारि मं गि र्क कुरे गगन स्य विन स्या गि ॥ ३२ ॥ उं ल  
 हि नमूष खाहा ॥ व ॥ यूवा हा सं गुनी न कृ गमी का ह्य कील कं। अग्नी गुलं यमी ली हनि खन दज क गः

११

हा गगारि मं गि र्क न न कस्य वम्लि ना गय ग ॥ ३३ ॥ उं कुरु खाहा ॥ वज्र स्नान मृदा का वजा का र्थ उकात्र  
 यनाय धग्म वध वक्रुं दि पं गगु ४ वि ना ग र्क ॥ ३४ ॥ उं न भा वजि ला पा गय २ व कं सूत्र पगि वा स्ता पः  
 यनि दू पट् खाहा ॥ व ॥ उं न भा सूत्र स्या वला ४ अघ त्रि पसि ली सिलि खाहा ॥ व ॥ उं न भा सूत्रार्ध नमस्तुः  
 ल ॥ र्म वि र्था पु या र्था मिर्या वि भ सि र्थ र्थ लि ला। जं व का ना। मूष का ना। मृग ना मंग का ना। अन घा या  
 लि ना इष्ट वध क ना मही। अष्ट ल कृ ग द्र स्या। नन पा य न लि य ना य दि मं गान य गि कु म गि खाहा। गगान  
 मं ग दय न वाल का रि। सह ख ग ग र्थ पान स प वा रा हि मं ग कृ ग म श्रे र्थ ग। सर्वा प द वं न स्या गि ॥ ३५ ॥  
 मूष जं व क क की टा ना। कू व गं उं उ वं धनं। विद्या मं कन नाथ स्य मं ग वा रे व व स्य व ॥ ३६ ॥ न भा मज नाथ  
 य ॥ ग र्थ र्थ य ॥ ग र्थ र्थ ह व २ गि लि २ स र्थ र्थ पा नि ना। उं उ वं धं ॥ कू व २ दू र्द खाहा ॥ ३७ ॥ उं उ कृ य नी न  
 गत्री रु य व वाले महा द व र्थ ठा वा दू ले २ हा न ह नू मं गं रु ना दि अ कि म मृ। अन न मं ग य व स पानिः



मंजिर्नवाटिकामक्षदिया, यथरुलसमस्तनित्रयं डर्वरुवनि॥व॥ अजाम्बुलसंरावा निंभर्षं डिंद  
 वूर्लकं। योनीसानययागनखं ठलं जीयनं नृक्षी। निलगमे। इत्रयावूर्ल। वीगीइ (घनराविर्न। सीनलं मध  
 नायकं॥ यिवनं षं ठलं जीनय॥ ३८॥ अलकादग्धं वूर्लं नवनीननरादिनी। आवजीवनिर्द दहा ॥  
 नत्रस्वठलमाप्रयात॥ ३९॥ धरुत्रयथरुक्षल पुनः संपद्यनं दुखी॥ ४०॥ ॥ अथरुगर्वधनी॥ सदात्ररु  
 क्षार्थरुगवनीविष्ममि (लक्षनं राधादि। पुवाकं कलिहारी लीगलीमूल। वामपादस्य पांशुर्क साक्षर्याग्रह  
 धीमान् द्वयनं दुकिं संपटा लेयने रुगर्वधस्य नास्ति लोकवकित्सक॥ ४१॥ यनीवायनि वामं नावायवानरुग  
 मर्दक। सर्वनविमृषायानि वर्य (ननु कामूके स्तथा॥ ४२॥ उं विट २ स्त्रिविट २०४०४ यथागद्यस्य यमं  
 लये लं वंदनं षीत्रे। कालीमर्दो रुवं रुग ४ यं नमं गदिनं रुग। यनास्ति वरुग रुक्षरुनं। नरुस्य वरुवजन  
 नासिधिमं नु डयनं॥ ४३॥ सफारि मंजिर्न नायदुद ४ पात ४ विवेनियं नस्यं नु रुग नादाषं नु विवरुविषा

१२

नि॥ ४४॥ उं वज्रमुक्ती वज्रकिवाडू, वज्रवंक्षेदसमं दाना वज्रपालीयीभावा (गं) यलिं ठाकलि ननुवे  
 सपांगे। मंजुत्रयो। गुरुषो। जया। लिजकलि वावेनाडा। वीक्षेकाल २ साने नावक्रकाधीया। गस्तुत्राय  
 लिमिलि कत्रिप्रसातो वाधा। मात्रोजीवा। रातकत्रगीवनकत्र, पालीकत्रे। गूवाकत्रा। घानकत्रे। हासकत्रा। प  
 त्रिहासकत्रा। नयनकटाहकत्र। आयनेहा। धजीवकत्रसंवात्र। कीललीया। गली। श्री। यात्र वत्रीकत्र॥  
 (ननु विज्ञानमूहिनला। गे। जामूहिकत्र २०। वरुठिनि सकं मसकयडे। दू। मेसिदिगुद्रयादूधी महादवः  
 कीश्रुता॥ व॥ अथ गृहं कृतं॥ नृष्येष्टननालन, लेयत्यरुलिकां रुनी। नमार्गं चार्यं गृहयार्नि। मकिः  
 काना रुसं सया॥ ४५॥ गुदीकं इग्व कृत्वा मा। निलवूर्लसमं निर्न। अर्कं यनं ष विनयं मूषकातकत्रं गृह॥ ४६॥  
 माऊत्रसामलं गालं गालं पिद्वा मूषकमा। लियरा। नमायाय गृहं लखा। सधानियार्नि मूषका॥ ४७॥ अर्कम  
 लमयं वरुं। रावयथा वक्रनवादीयकं कद्रं लेनं नि। लषाया। मिस्तु॥ ४८॥ वूर्लं रातकलपिर्नं द



हसर्जत्रसाधिनीं। मत्कुक्षममकाभ्रमृखा, सूर्यावाविषकीटका। पलायनं गृहं लका, यथायुद्धं नि कात्रगशा  
 नाजट्टकुरुलं वक्षःपद्मायामन्कुक्षपदं। धरुनामगर्कहं निधूपादागृहध्वजध्वज॥३०॥ ॥ॐ निधीः  
 पार्वतिपूजनीतिर्येनाथसिद्धिविप्रविर्गनिद्धिषं ठमरुसात्रमहनादिगृहकुर्गोनिवात्रलनामहनीयाः  
 पदना॥३॥ ॥व॥ ॥अथकीहहलं॥ मध्वं उजिलानालं रुजयदिनसफकं। नादंशालिफहसध्वज  
 वीधुकाधिनेनक॥१॥ ॥सफाहं तिलनेलन, तावयदानयषत्रां अकालवीजवूर्जकुसां धयीयनयून॥२॥ ॥  
 गुरुलं ग्राहयत्यूर्ज। गलाकात्रस्ययुगना अथवाकागयागुदं। ननकल्लेनलेययन॥३॥ उक्तायस्त्रायध्वः  
 भीसुमुखं उयत्रस्यत्रं। गथात्रथकां सपागु यत्किं नेलमाहत्रउ॥४॥ ॥ॐ दमवाकूलोनेली, सर्वथागवृज्जात्रय  
 नालिफमंकुलनेलन, मूठिनेनलिध्वजि॥५॥ पूर्ववत्तुयुजयनूकले, सद्यनवंनसंगया। गुरुलीलिफः  
 मीमांठं, नाधिनीं रुवतद्विस्थान॥६॥ स॥ हलो जायनवृद्धं रुद्रध्वना रुसंगयशयधिनीवीजवूर्जलु, ताव

१३

मंकुलनलन॥१॥ न्यसंजलमहाध्वर्यं, गद्विध्वजसकृद। वीजीनीलात्यलंरुर्ग, सिद्धिमंकुलनेलना॥२॥ नि  
 लंजलमहाध्वनकात्युषासंरुवशयानिकानिववीजानि, जलजल्लजानिव॥३॥ अंकुलीनेललिफानि, नानि  
 २षयूह्वंतिथे। यस्याकस्यापिजीवस्यापेयं नेलनेलधिनीं॥१०॥ वालिगुरुल्लजलिफं, गजीवस्यानसमूह  
 शयकिंविद्वन्सुलास्यानू, पुरुषध्वलादिकं॥११॥ अंकुलीनेललिफं नदंनंयुयंरुवध्वं॥१२॥ गुंजाहलं  
 धुक्कपिष्ठां, लययनूकाद्वपादूकं। विनावक्षानत्रागदुर्ग, कागमकंनसंगया॥१३॥ लघुदानमयंथीनं गुं  
 जाकाक्षनलेययनू। धुक्कनेनजलेसार्द्धं, डयविद्वंनमूंयनि॥१४॥ गुंजावीजं रुवामूकं, वूर्जरावांनमूगक  
 शसकवात्रंनन॥ कांस्थ, लिफमंकुलवह्वेन॥१५॥ नेलमादायलिफं, पूर्ववत्पादकागनि॥१६॥ कात्रं  
 स्यवीजानि, निवनिर्थासभवय। पिष्ठापलेययत्पादो, पूर्ववत्तुपादकागनि॥१७॥ वल्लिसर्जत्रस्यध्वंनेलः  
 लिफाजलेलिना। कालिनादीयवलिध्वर्यावद्वर्णिनेसंगया॥१८॥ दध्वंनमूगवद्वर्णयावद्वर्णमिन्कुलाकूली



श्वरुमायाविनयेव कर्कटस्थानाकमान् ॥ १२ ॥ अर्थं ह्यरुद्रयदद्यात् विष्णोर्गस्य समाह्वयान् ग्यालला  
 टनिलकं कलान्वी श्वरुडयान् ॥ १० ॥ नदन्तं कमिव लोके रुद्रमाले विलोकयन् यलायनगतादृष्ट्वा मू  
 र्धनिययनातिव ॥ २१ ॥ कर्कटं वाथनेलन पात्रावतयत्तु वं मलयनिषि मूलं वापयितुं गर्धराक्षिं वा ॥  
 ललाटनिलकं कलानापासादृष्ट्वा नने ॥ ११ ॥ दृष्ट्वा नानुसंद हा जथलाकं ध्यानाय ॥ २३ ॥ सिन्धुवीजास्ति  
 मोनेला पात्रावतयत्तु वीषकां वात्राहस्य वसाशकं निषामूलं समं समं ॥ २४ ॥ ललाटनिलकं तं न यश्च  
 रागिसेवेने ॥ ११ ॥ दृष्ट्वा नयं वदको ज्ञी जदासाक्षात् सदा निव ॥ २५ ॥ सद्य ह्यरुद्रस्य वीरस्य ग्रन्थं वीरस्य वाः  
 निद्रि। गदकं कृष्ण धरुन वीजं वायं समुत्थिकं ॥ २३ ॥ श्राव्यारुद्रकृष्णवदं धीं मासान्ते न वं जयना नानाव  
 लीपहात्रेण पूषधूपाकनादि हि ॥ २० ॥ नित्रश्चने कृष्णरुमो रुके विक्षानस्य यत्ता दीपं नातो सदा दया  
 न् उकवर्णासंयुतं ॥ २८ ॥ सहलं गुरुवजावत् गावहृदययुजयत्ता ग्रन्थं कृष्णवदं धीं वलिंदत्वा

१४

वकर्कटं ॥ २२ ॥ पंजीगंधयथगुसाई गुटिकाकात्रयदृष्टी निलकं कुर्यात् सनत्रादृष्ट्वा नने ॥ ३० ॥ नदं कुरु  
 नसहसेषु नृपे ॥ ११ ॥ दृष्ट्वा नानुसंद हा जथलाकं ध्यानाय ॥ २३ ॥ सिन्धुवीजास्ति  
 मोनेला पात्रावतयत्तु वीषकां वात्राहस्य वसाशकं निषामूलं समं समं ॥ २४ ॥ ललाटनिलकं तं न यश्च  
 रागिसेवेने ॥ ११ ॥ दृष्ट्वा नयं वदको ज्ञी जदासाक्षात् सदा निव ॥ २५ ॥ सद्य ह्यरुद्रस्य वीरस्य ग्रन्थं वीरस्य वाः  
 निद्रि। गदकं कृष्ण धरुन वीजं वायं समुत्थिकं ॥ २३ ॥ श्राव्यारुद्रकृष्णवदं धीं मासान्ते न वं जयना नानाव  
 लीपहात्रेण पूषधूपाकनादि हि ॥ २० ॥ नित्रश्चने कृष्णरुमो रुके विक्षानस्य यत्ता दीपं नातो सदा दया  
 न् उकवर्णासंयुतं ॥ २८ ॥ सहलं गुरुवजावत् गावहृदययुजयत्ता ग्रन्थं कृष्णवदं धीं वलिंदत्वा



ब्रह्मा॥६०॥ ॥ॐ नमो ब्रह्मणे॥ ॥ व ॥ ॥ स्वर्गद्वारवाक्क्षीर्मासीनागवभवत् । नवकायाः  
 लिकायाग्नवनात्रीवर्णकवशा॥१॥ ॥ श्रीर्षाभिनिदिदामया यत्रषाभिउयादयाश्रदासादासर्गाजाः  
 निजावजीवनसंशयशा॥२॥ ॥ व ॥ ॥ ॥ सर्वसिद्धि॥ ॥ दजाललि॥ अलसंरुनीपिसावदव  
 सनी॥ अनेककोठककंर्षीपीवअवंधनी । अकालहलाअनेकद्रुपदवसनी॥ अने॥ पथमंगुटिका॥ ॐ  
 नमारुगवर्णवासुकीनागवाजायकपलसषवलितानगवासाहा॥ ॥ लर्मनुकत्रिद्विर्वंधल॥ ॥ कर्त्र  
 कीलकठी॥ कमलकीनाला॥ नाकीलकठी॥ नदालूकुमारीकन्यकात्मासुग॥ निसकीलपट्टेयुअंगुलीमंत्र  
 सगीर्मणीनर्मगु॥ ॐ नमावदकयाजामूठाय ०४०४खाहा॥ पीठे॥ लकठीर्मणीय॥ दं॥ पीठेयलकठीः  
 सहामक्षहनीनादिषा॥ ॥ नोद्विर्वंधल॥ ॥ पाषीदलखाहा॥ यहर्मनुवात्र १०८ अक्षानवसगजसा  
 नीविद्विवदुगहा॥ ॥ पथमंगुटिका॥ उयवात्रुडोषदी॥ गमर्गगअंकुत्रांपुनिसिखसुका नामलेकेदि

(अहत्रिकपानावकत्रकमूगसापी)

११

सि(गमलीकने॥

षा॥ ॥ नासावसुलाकदेषा॥ (अहत्रिकीलकठी॥ अलिकत्रिधालीनेतिसकागुटकनकलपूकीजेपावेलाकन  
 मेदिषा॥ ॥ नासावसुलाकदेषे॥ लकजालेजालुहहेकरया॥ आठाअनूलेपूकीजे॥ लाकूमषीयादेषाः  
 (गमलीदिनीय॥ गमर्गगअंकुत्राससकीर्मगली॥ (अहत्रिकषाम॥ हनठ॥ कीगित्री॥ वरुठकीकालासमसुनः  
 कसत्रीषलीजे॥ वकत्रीकमूगसाधिवारिक(गमलीकजे॥ न(गमलीकाअंगुलीकासंपूकीजे॥ नवजेसात्रुपदिषावे  
 नेसासाकदेषे॥ पुन४यही(गमलीमनूषकीलग्म॥ ॥ नोमसुवविनादीसे॥ यही(गमलीकागकपत्रसालपूकने  
 लाकसर्वकागुदेषा॥ नागवलकपानसात्रस॥ डोत्रवाषावाटिकत्रि॥ अंगलपूकत्रयूत्रषमहायूक्षिदीसे॥ कम  
 लकीनालकोलपूकत्रिडवीनाषी॥ ॥ लाकूनित्रक्षत्रदेषा॥ नही(गमलीअंगुलीकोलपूकत्रिांवकपानकोलपूः  
 दीजे॥ नवलागुसर्वदीकुदेषेपूनाकूकटाकयत्रसालपूकीजे॥ नालाकसर्वमात्रदेषा॥ पुन४सबवठअनाजको  
 लग्मवे॥ नालाकमलकाम्मगदेषेपून४सर्वक्षनकीकोपूटदीजे॥ पीठेरुमिम(अवा॥ ॥ नागकालहलेहलेलोजल

अंगुलीकत्रिवृला॥ नागव

कठीअवे॥ पुन४नी



सुकटे तहो गहली मयम (अथो) आयको कांली नदये ॥ ॥ ॐ किं ॐ डजाल आय यथ मथा ॥ ॥  
 श्री गहली यन मथा ललित समधन अलिपन वन नकु विमान दूकंद ॥ मधुत्रि नहि छ अति नित वन जे  
 मदन अनंद ॥ १ ॥ वन निका म अहि ताम सु विव नाना मि निराग ॥ सकल का कद धि मधन कवि तया सा वस्य  
 याग ॥ २ ॥ अहि नव जध वन न सकल सूषध वन स्या म सग ॥ मधुत्रि छ त्रि पति ह छ य म छ ड न य कि द ह  
 यग ॥ यदू य वी व अलिप निव सदा साय क म न रं जन ॥ जल वन व प ल प ना क अ सु न स व व व ग जन ॥ ३ ॥  
 मन नू य के डो न नी नि वा न का या ग ॥ द र्व ड पा व न ह वि रु जन अ नू रा मि नि का रा ग ॥ ४ ॥ रु कि ए क रु ग रं  
 रु की रा ग सा रा मि नि रा ग व ह सं क ट मे सु ख क र ल य ह दू ष क व न वि जा ग ॥ ५ ॥ का य थ कू ल अ नं द क वि वा सी  
 का ट हिं सा व का क क ला ॐ नू वि क व न जि नि व दू कि या वि वा न ॥ ६ ॥ त्रि छ व स रं स सा व ह से आ ० ॥ का क रं ज नी  
 ॐ ह क री क व म क रं म के या टि ॥ ७ ॥ रं छ यं व द न अ ति स व स व ज व दू वि धि दू द ॥ प टि न व टि न अ ति

१३

यो प वि न व ट न अ नं ग अ नं द ॥ ८ ॥ व ड न सू क वि यं डि न स व स ज्ञा न न द वि द द ॥ दू टा अ कू अ कू स वा त्रि य  
 वि न ति क व न अ नं द ॥ ९ ॥ ल लित व व न स व क वि न क सू न क व न स व ला ॐ ॥ दि ग रं जन स व रा मि नी  
 हा द से नि म हा ॐ ॥ कू ये ॥ ड कि रु कि दू अ नि स म वि ना य क गु ल की ज ॥ १० ॥ हि वि धि य व म वि ना द का क ग ति  
 ज्ञा न ज्ञा ने ॥ सक ल रु द नि व व ह क लि व दू वि धि न सू टा ने ॥ रं जन ने न रा मि नि स वे हि त्रि क टा द ह सि म नू  
 ह न ति वा ॥ क वि न सू न ह रि न क्ष त्रि के आ ० ॥ ति वि धि नि नि कू वि ध व ति ॥ ११ ॥ दा हा ॥ रं ग ल वि नू दू द हि  
 व रे अ नू गी ता वि नू लान ॥ का क य ट वि नू त्र ति के त्रि नि न दू रं व क स्था न ॥ १२ ॥ का क य ट वि नू त्र ति स मं वि नू  
 दी य क नि नि क्ष म ॥ ता का व न व न व ना व या का क सा व स जि नां मू ॥ १३ ॥ गु न नि क्ष न प ति सू य ट अ ति स द व  
 व ली य वी न की डी ल हे न त्र ति स म का क क ला आ ही न ॥ १४ ॥ अ थ य थ म रं छ ज्ञा पि ना ज्ञा नि व र्ण नं ना म ॥ दा  
 हा ॥ व ड न वि नू त्र ली क हो य ग टा वि वा त्रि वि वा त्रि ॥ य धि नि वि धि नि स वि नी डो व ह सि नी ना त्रि ॥ १ ॥



अथ निनीलकुन ॥ यद्यनीयं यक वचन रत्ना ॥ अग्निका मूल सवर्ग ॥ वदू वागुं अरु वचन विधि विनय ॥  
 संग ॥ २॥ कृपे ॥ दृग न अरु कृ वि अरु न ने न हं गी रु कृ टि वत्र ॥ निल पसून समना स वि वली अ हि ज ० व कं  
 ० य वी ॥ वचन ग व अ हं स ग का म ल वि वि रु अ ग्नि ॥ न न स्रु अ क टि का म य ग ट द मि नी द ह ग ति ॥ अ न न द वं  
 द य व न व द न स द अ ग नि व म ल व ह आ ह य नि मि धि ॥ च क र अ म ल सा वि ल टा व व टा व ह ॥ ३॥ स व ॥  
 या ॥ व वी सी वे स व ह स व ही दि न मा नू क रे क कू र्ण क कू लो जे ॥ स र स त्रा ज का न ह ध रे अ ग्नि ड अ ल वी व स  
 वी व हि कू जे ॥ स र स त्रा ज का न ह ध रे ॥ वा त्रि ज का स व ना म द न ग ह नी व र नी व स द स वि वा जे दी न ह न  
 ही म न मा हि अ न दि न रं रु क कू य य द नि वा जे ॥ ४॥ कृ पे ॥ अ म ल क म ल द ल व च न ने न वं व ल अ नि अ  
 व ॥ म धू व म धू व सू य व च न कू वि ति कू व का व ॥ ल दू दा व द न हि द ह स र व न ग व र ना वी ॥ मा या वं न व  
 दू डा ॥ पू रू य प त्रि म ल व दू रा वी ॥ धि व धा न न घ ष न ग्नि य ग गि ग यं द अ न न द क हि ॥ वि वि कू व नि न व ॥

११

कटका म कटिका क द ली र्ष म र ग रं य जि हि ॥ ५॥ अथ वि नि नी ल कु ल ॥ दा हा ॥ न हा रा वी द र्व ल न ही ल दू दा व  
 य न हि अ र्ग ॥ अ नि वि धि वि रु अ ग्नि वि रु नी ला व न व रु न कू रं ग ॥ ६॥ वि रु दू य रु म वि धि नी अ ग्नि वि वि  
 रु न वी त्रि ॥ वि रु ला वे स व का र त जि नि व षि गी र स गी र ॥ ७॥ स वे या ॥ का म का अ म व ना अ ग्नि का म ल र्व  
 का ना म न हि स र ग जा क ॥ व र्ण ल हा ॥ न हा ॥ सा दी व द वा स म नो मृ ग म द सि ता क ॥ वा हे न ही वि व ला व गि नि  
 नि नि द क्ति ने हे स व ल द्दि न वा क ॥ ना म द या वि नू का म की क लिका डे से हे रा मि नि अ म ने जा के ॥ अ थ स  
 धि नी ल कु न ॥ दा हा ॥ ८॥ स द न क स क र्क स व च न द र्व ल दी व द हा ॥ नि ल्पे अ वि ल वि रु व ले ज नू स धि नी न  
 दू ॥ ९॥ दा हा न न दी व द दी व द रु जा क व प ग दी व द रा मा ॥ व ल न वा ल ड लाल अ ग्नि ज नू स धि नी ना म ॥ १०॥ कृ  
 पे ॥ ल दू ला व न अ रू क टि ल यी व प गु दी व द ना वी ॥ स द न प न न न र ह न ज ० व क टि जा का रु वी ॥ कू व स रू  
 म न कू टि ल अ धि क ना म स हि का मि नि ॥ अ रू न व स न अ रू प ह य नि प ट वा ह वा ह न रा नि ॥ रा ग स म ल य ॥



74

विजिनीनवसंविनीसत्रीन॥दादगहस्तिनीजानीययहविधियानिर्गहीन॥१०॥ ॥ॐ॥नियथमर्थ॥अथ  
पूत्रषजागिलक॥दाह॥ससाकूर्वंगवृषरुहयपंगठयूत्रषयात्रि॥नषसिखलयंगुलचकनसकलः  
कहाँवियात्रिविद्यात्रि॥१॥ससाकूर्वंगवृषअखवियचकन॥वात्रिरानियूत्रषनकचकन॥नअवकहोसः  
कलयत्रिवान्॥अवनविरुद्धेसूनदूसूजाना॥२॥अथससायूत्रषलचकन॥दाहा॥ससायूत्रषसाजानिः  
यसीगलजाहिसूराव॥मदनीकसषट्शृंगुलीत्रनिकाअधिकनयाड॥३॥दाहा॥सूचमकामलननवः  
वनसीलर्वनमहान॥त्रनिविनादअनित्रविर्नहीससाकत्रनअनिर्गहीम॥४॥कृपे॥दृगविसालअनिर्ग  
धूकपदकचूमनहिनत्रषे॥अलपसूत्रनआहात्रववनडोत्रेसूषराषे॥सीगलहा॥ससावदनदाअः  
दूआनन॥कचकामलअदूअगलययत्रिमलदूवियाननडत्रनिर्गवशगर्जयकुजग्रीवसूचवननि  
४३॥अंगसाशपूत्रषजसजानी॥१॥ससाकचूकसामनाअंग॥२॥अथकूर्वंगपूत्रषलचकनंगदाहा॥मधः



नवयनमृगमश्वतनययल वृद्धिमनिधीनयउत्रसाधुश्रुति॥हस्तमूषकांनीधूनकसुगीवा॥३॥अथ  
 वृषरूपयूषलकुन॥वृषरुजानरात्रीयूषदाताकूचसूराव॥कपटीककुलंघटहभमाकामकलिव  
 दूयाड॥१॥वृषरुजानिरात्रियूषदाताकूचसूराव॥मदनांकुसुमोश्रंगुलीकामकलिवदूयाडा॥२॥च  
 ये॥द्वगविसालविनययलरालदीनयरात्रीतना॥रुजायीनडनकठिनकठिनश्रुतिकमठिणीम  
 न॥वसनयानिविनविदूत्रश्रुदेवाविडकठनश्रुति॥कामवतनिशजानिवसनयदिसदादानविः  
 न॥श्रुकूचकलिमनगीतकविनवश्रंगुलश्रंकुसुमदन॥सावृषरु दूयःमडचत्रेडनहनककुकरा  
 षेवदन॥४॥अथश्रुमयूषलकुनी॥दाहा॥ननदीनयदीनयवननदीनयतषसिषश्रंग॥सेवेनव  
 निसगरनित्रयनश्रुवसश्रुधिकठुवंग॥१०॥अथयूषश्रालसलियंवदूनिदायूनिताहि॥गीनिमूष  
 श्रंकुसुमदनषसिषदीनयश्रुहि॥१२॥लोचनयूगलवीसालहाथदीनयदूवलनन॥वदूराजनश्रु

निषीनिविद्रुमभाटयैवलमन॥कामवात्रवद्रुवडुत्रगाहिरात्रीनियहावो॥अगिलीविनवद्रुवलेव  
 वनअगिद्रुविडयगावो॥शगजंयवनननिशकटिलअगिमध्वननसनयाहननसलकनकीनसनअंग  
 रुजापीवकं०दीनचदसन॥१२॥सात्रगा॥वडुत्रसयनवजानद्वादसकनयल्लवयभटा॥मदनोक्तस  
 यनमानससाआदिजानूवडुत्रा॥१३॥ ॥ॐनिदीनीयषडा॥अथसूत्रनरुदवर्नन॥ससायूत्रषयदमि  
 नितरुनि॥समत्रनियाकानामडरुयनस्यनहिरवले०डोत्रनसोनहिकाम॥ ॥ॐनिसमत्रनि॥अथसा  
 मान्यत्रनिवर्नन॥दाहा॥यहकविषीहनिनिषीहवन॥वृषरुडुत्रंगनिसंग॥नकामनसूषडयजेवटे  
 यमद्रुअंग॥२॥॥निसामान्यत्रनिडयवनि॥सात्रभा०वृषकूत्रंगिनिसंगडोत्रडुत्रंगिनिधनवय॥  
 न्हकअंगयकडयत्रनिजानिथ॥३॥॥निडनत्रनि॥अथनीवत्रनि॥सात्रभससाडुत्रंगिनिसाथयत्रव  
 षरुकवलिहयी॥नकाजनमअकात्रथयगटनीयत्रनियानिथ॥४॥॥निनीवत्रनि॥अथडयत्रनि॥५



दाहा॥ हयहृत्रिलीश्रुति डवत्रति, ससाकत्रनिश्रुतिनीय॥ नवनानीनजाश्रुधिकसामूषसयावीय॥ साव  
 ॥ नसीजानिगंहीन॥ मदनान्कूमनसोचहे, नासूषहा॥ सत्रीनकाकसात्र॥ मडचत्रे॥ ३॥ ॥ ॥ निहनीषषः  
 ॥ वडुथष॥ उवडकलावननं, अंगअंगकामिनिनिकाकामवासवननं॥ दाहा॥ निहिकियाकं त्रिनित्रिनिहिं  
 यविलसेनागाहि॥ रामिनिमूदिनमहा॥ कक, गहासकलसमआहि॥ १॥ अनित्रिचिगियापूषहिमिः  
 ल, कहेकाक॥ हिहा॥ असेनागीनीवकाश्रुषिमूदियाजा॥ २॥ आजनजानेकाकपटिकसौत्रैजरुनवि  
 यात्रिश्रुतिसूषडयजेवननिकांश्रुतित्रिमानेमात्रि॥ ३॥ अथनिधिवनन, कषूयक, दाहा॥ कषूयत्रि  
 वादूने॥ वसनकामवामंग, काकजननकामाकत्रे, यायेनत्रुली॥ ४॥ योय॥ कामवामकवामदिसि  
 वसनसदाश्रंगश्रंग, सावतमदनजग॥ केधियविलसेनियसंग॥ ५॥ वडय॥ यत्रिवावसेमीमंनक  
 मनपकत्रजदतत्रिनित्रुयवाम॥ दूनीयादिगर्ववनकत्रनकंरुहनीयामूहदतश्रुधनदंनदत॥ जव

२०

योधीकामश्रुवेकथालनवयूवनसंठनकत्रदूकलाल॥ ग्रीवार्यवमि, कठिकाषमेनदूदू, वननयदात  
 देन, सफमीकत्रमदनकत्रड, वाजनिहिवसतिश्रु॥ निषेमनाजा॥ अश्रुमिमनमथहीयममात्र, कत्रमदन  
 कत्रगालगात्र॥ नोमीनाहिकटिदसमीहा॥ कत्रमदनकीअंगदा॥ नकादसीमनसिजरुगनिवासनव  
 मदनक्षममेकत्रनिवासजागादिनकिजेवदूतयसंग, नोदवेनवेनत्रुलिश्रुनंग, दादसिकाईयश्रुवेः  
 श्रुनंग, वनिखन, पहयादसागु, स्रुसंग, योदसिकीववननिकत्रनिवास, श्रमावासा, यगश्रुगुष्टायास, क  
 वमदनकत्रगात्र, ॥ हिविधित्रिडयजाडविवात्रि॥ ३॥ दाहा॥ श्रमावासयत्रिवाविमलयगश्रुगुष्टश्रुन  
 ग, अहिपडरुवेवनित्रवन, वरुनयलेनिहश्रंग॥ ४॥ ॥ निहकषूयक॥ अथगुडयकनिधिवननं॥ योप॥  
 यत्रिवाविमलश्रुगु॥ १०॥ वहे, दूनीयावननकाक॥ मकहे॥ नीजगुलहमेकत्रेनिवास, योधिईययावेरुगपाः  
 सु, कटिचुठिसागेना॥ हिश्रंग, श्रु॥ मनमथहीयत्रेसग॥ नव॥ सपूवनवहेसत्राज, दसेकाषमहरुवसेमना



[illegible][illegible]



वदूत्रिवक्षजियहा००, नवनसुनिलीजिय, तासां कामकलालमकवदूकीजिय॥ कामिनिथनीपीनिवदू  
 नकविमानिय, यत्रिहां अयनीवेअयुजियनीकजाकि॥ १॥ दाहा॥ वृक्षपीनिकवनविधि॥ आवाममाभिः  
 निरामकोवे० द०० आताहि॥ वे० तहिनविनवटेकनेनहनिर्वाह॥ २॥ ॥००॥ निर्ययमर्ष०॥ अथविरुथाः  
 वीलकन॥ यत्रिद्या॥ दूगुन॥ राजनादिवर्ननी॥ दाहागुं देनदूक्षकामीचउत्र, मनहडधटगुनहाहि॥  
 मदनं० गुनलाजदसिनिअहविधिसवका००॥ १॥ उरुमनिय॥ अथापिहलमधिमजान॥ वागिलनात्रीही  
 नहेकाककलयत्रवानु२ विरुवात्रीलकल॥ द०॥ विरुवात्रीसंगित्रह, आकामिनित्रहमा०० के, सदाआताः  
 मिनी, वदूयत्रषनमेनात्रीत्रह, नासेसीलकाक०० मकह३, वीयाधर्वनीनात्रीलकन, सवेया, उरुवगिनद  
 ००० कइयनिकमूषडोवनरामिनिहात्रे, पोटेनयी दि॥ यनिकसंगवनरुमुखयाद्विअउत्रे, लकनहेजिन  
 यमनआजियदक्किनहा०० साहकाववात्र, आपनिकाआवतका००, पीनिहिपीरुमजानि, वावनिताकनेनमः

८२

गीयअनिजंहातिउघाटवितकवदूककूलयाकनतिज

हिजानेसगुसमान॥ १॥ अनूत्रागिनात्रीलकल, कुपेदिगरुमिनित्रषननिलजहं कइअंगदिषावतक  
 नमूषदनिउघाटिक्किनकमेवदनइवावतिचलतथकि तदूत्रहत्, यत्रनआरुनसूक्षत्रनिहित्रिकटाक  
 मूषमूदि, पुगटलटकुटिसहावनि॥ पलवनियत्रनयहमाद्यसनि, नित्रषिमिरुगुवजनमकविअनूत्रा  
 गवनि००० हविधिरुवनिसापीनिजिहिअधिकनूवि॥ ३॥ कामवर्नीअरुआताहिलकन॥ कुपे॥ विरुवनकवनसा  
 कनयनूववटकावनि, दोत्रिपोत्रिमहमा००, पथविनवनिचयूलावनि, अयउत्राजटपनिनही, सामदनवर्तव  
 निविनधवनि॥ १॥ त्रिनिर्वनीचउत्रावूवेयूषावतलकल॥ कुपे॥ अजावनमयमंनकं तविचूत्रावत्रकालहि  
 यषावनिजगनूनिदनीकलजावतिरुहालहि, कामिनिरु०० पुसुनिमासदेवीनिगजान, नोतनगरुनिवास  
 मेनवदूयायतगान, उवकिलकना॥ मेनरुमावेसिथरुन, कहसाकीपनिधेन, कलमला०० कुषावहेउवेः  
 तवेजियमे॥ २॥ ॥००॥ निषयमर्ष०॥ अथनात्रीअलकलवर्ननी॥ दाहा॥ निलककूत्रवालनवदूत, अधिकर्न



मम अग्निहोम कहत काक (एक) बलि तन, सकल अलङ्कन यास ॥ १ ॥ जाक रंग हांगें हेरुनी येसि गिय जोः  
 हाँ, कहत काक (एक) टिलमन, तिन्ह यगिया दून काँ ॥ २ ॥ गन की येमात्र गिय लरु धिंगवष मूष बालजः  
 हाँ हीन देवीय विरुवात्र निवे वाला ॥ ४ ॥ गिनि नत्र अत्रिसलि ताल अंग अहि नकुश कानाम, पुगट जग  
 तमहि दधिथ विरुवात्र निवे तीम ॥ ५ ॥ विवक भाँदु पत्रिवाल जिन्ह, सुरु काम का धाम, धूँ ॥ मीन यत्र सेम  
 अयगनी उहाँ सावाम ॥ ६ ॥ जाक यत्र अंगुष्ठ वट, उध कात नोहीन, गात्र काय निजिव गत्र देव वदाँ की ६  
 नीनि नजा की नारिगं लीन नहि, धवल हाँ जिमि सूय नि (वे) हाँ दत्रि डनी जदा घिसंग नहे रुय रूष  
 वंति निडा वंती साग वंती सा राम, इव दं न सना कठिन कव दूँ न पोवे दाम रे अगिल घू अतिहि विसालः  
 तन सारंग त्रिगिय हाँ ॥ याजि यकाँ अयनाँ के रुदन दीज काँ ॥ १० ॥ एक पीन (एक) चीन कूय अधिक  
 हीन क दूँ अंग, वात कहत जिहि त बलि काँ हूँ ले ग्रीव डरंग ॥ ११ ॥ म हाहि सव गम न यत्र वले वाल उला

८३

ल, अग्नि दूर्वल, अग्नि पीन साहान पोवे वाला ॥ १२ ॥ जाक कूय कयाल पावात कहन यत्रि जाहि ॥ १३ ॥ जातमा  
 न वात बलिका नि (वे) जीवे नाहि ॥ अध यत्रान तालू न सत, दसन उध यत्र साँ म, इव दं न दीत्र य अधिक नी ड  
 दत्रि डनी तीम ॥ १४ ॥ जाक अध यत्र विसाल अग्नि, बाल तिस दाकू येन, एना नान विवाहि न, नित्रि सि नित्रि सिः  
 निजन न ॥ १५ ॥ रूगि सफ ॥ अथ अं स मषं उ वित्रि काँ हिना, अत्र सँ क कामिनी लरु ल, वित्रा गह उल कल कूँ उ  
 लिया ॥ जानहिं जानै कि ये ग नि, मिलि नत्र हँ सो नी नि, यगिया या ना हीं कत्रे, रुम या ये अति विरु, रु सः  
 बाषे विल यत्र न, मूष दूँ सूनो वे, कठिन कि यनि अग्नि हाँ, आयन हीं बाँ धिया वे साग वंती सीन हे, वा  
 तन हीं मुदिन वषाने, पीनि हत्र तो हाँ, पीनि गति जानहि जानै ॥ १६ ॥ धिय नाग यत्र मूत्र यणिया ग नीय  
 नाग य पीय कूत्र, मन वय दूँ मे (एक) वित, हाँ, पीनि वू वि दूत्रि ॥ १७ ॥ अथ हिना लरु न ॥ दूये ॥ अग्नि उ  
 रुम मन वसन, वीत्र यत्र मलसुगंध वति, पानन साँ मूष अत्र म, वाग कि न कि न जवा बनि, मूक कनक



उत्तमाल, हास्या वचननिम्बराषणि, मनउदात्रनित्रनह, कसलाव अतिराषणि, आदनंतत्रलिहिनविगः  
वटनि, यहीविधिअकामीत्रहनि, मनहत्रनहत्रिनमकामिनीसा, कामिनीसाकडकविजनहनि॥३॥ अथ अ  
वसंकलक॥ अत्रिल्ल, यतिराषेयीनिसदाशरामिनीसासू आदिर्गिजाहि, हंसीवरून नहासावे, पत्रिही  
असिनात्रिओहा० नाहं आ पृहिं वसि आत्रे॥४॥ ०० नि अथ मर्ष०॥ अथ दूगिलकलवर्ननी॥ मंरुवसीकत्रन  
माहनविधान॥ दाहा॥ ह्यनिर्मणीहीन, दूरीविनूकामीपूत्रव, दाडनं वरहीमिका कसा व० मडअत्रे  
कुंद, सषीग्यालिनी, अत्रवितनी, नटीना०० नि, अविनि (अ००, यत्रीरुसंन्यासिनि, वट०० ना, वालवात्री, नंवालि  
निनि अदूगिकावात्रि॥१॥ कुंद॥ अवस्यमवज्ञाननयत्रवस, कथेनवेदूनीकाडपदस, ककुधनलालवागाः  
हिदियावे, हनिहनिरुजमवागसिषावे॥३॥ कुये॥ ०० नंगं गकु आपनादिडरुमयलि आवेककुं कनेनमसका  
०० रुजनरुत्रिरुठालवे, नित्रषोवेत्रनिसंक, पूत्रषनवदिष्टिरुवावे, शानात्रीवमिले, नेनककुसेनजनावे, काः

मिनिजो कहवाले नही के मषववन मधुन धने के कमल वदन मूसकातु निवसित दूषी निनिखे कनेधः  
 अथ वरुन जा निजा विना वसी करन वने नै यद मिनी वसी करन दाहा ॥ सो गेय ह पयटि नात्रे सां ॥ जिहि दोऊ  
 सागा की वसिहा ॥ ३ ॥ चूँ द ॥ कसू की पसूना लावे मन वचल चुवात्रु वात्रु वक्ष्मावे जात्रे पटिय सून गासा नः  
 गानिखे वसिहा ॥ निअजा नि मंगुँ वान भाहनी खाहा अमू की किसिद्धि खाहा ॥ ४ ॥ चूँ द ॥ कत्र कसू की कसमगः  
 हिवा मर्यानि धात्रि पां नमधुसां नाम लिषिय पटिय मरु नय निजान ॥ १ ॥ दाहा ॥ यद मिनी काज वदी जिय उत्रं नः  
 वनि वसिहा ॥ लाव वं न के वल धनि मंगु सुना जा सा ॥ २ ॥ अथ विरुनी वसी करन मंगुँ काम सव माहः  
 नय निअमू की खाहा ॥ चूँ द ॥ कदला की वं न सलावे एका जा ॥ हलहा निपि सावे सानि वा अर्क पान मह नोषे डो दू  
 ववन पु मसा राये गो जिद उकाल की गा ॥ ही नू पी नि कने वनि अ ॥ २ ॥ मंगुँ उँ विहंगम विहंगमाः  
 यखाहा अमू की वसखाहा कामद वाय अथ संषिनी वसी करन मंगुँ दूँ दूँ धनी धनी मंगु कामद वखाहा पांष



यत्र वा काला अवे, वदू न सह न के नाहि यिसावे, पटिके मंरु गिल के देहाला, नित्र व न हि माहे न न काला  
 ॥१०॥ उं न भा न वा स्वाहा अम की व स स्वाहा, अथ ह कि नी व सी क व न ॥ दाहा ॥ ग म द व आ नि अ दि ल दि न स  
 क ल वा म हा का ॥ अ द व क व ह न आ दू म न सा उ व ग मू ष अ व ध पा ॥ दाहा ॥ आ मा व स नि सि अ र्ध ज व  
 अ नि ज वा वे ता स, अ हि षि या वे आ का ॥ अ नि हि न क व य ग म स ॥ अ थ व सी क व न चू द ॥ उ ल्हा की जी रा अ नि  
 के, अ दि न वा न ग नि के, सा ॥ ह वि धि ष वा ॥ थ, उ व न ता हि या ड थ ॥ १२ ॥ दू स त्री वि धि, चू द, स्या म स हा नः  
 की ज व ले आ ड थ, न ज य न ज सो ना हि यि सा वे, का दू म धा वि आ वा म रि, व सि आ वे क व न का व लि, दू व वा  
 वि धि, का त्री जी त्री, पी य त्रि ला वे, मं टा सी गी न ग व म ग म वे, अ य ने अं ग म ले य नि ता जे, पां चो पी सि दू त्री सी की जे  
 सू म य नि म धू लो जे टी का दी जे, टी का का टे अ नि हि न वा टे, अ य स क हा नि थ का मा हे, आ का वि न ता हि को र्ग  
 हे, अ थ मा ह ना व सी क व न ॥ दाहा ॥ नी नि व व ध का, अ नि गु व, स म स व वी व ज आ यू आ मा व स दा जिय

८३

मिले आ ॥ व य वा य ॥ १३ ॥ दू स त्रा वि धि ॥ चू द ॥ स व न अ ग ल आ य नी, वी व ज ला वे ता म, वा म य ग वी व न येः  
 थ अ मे ला वे ना हि, न हं नू ली क त्रे पी ति नि त्र वा ह, दू स त्रा वि धि ॥ १० ॥ दाहा ॥ म द ना कू म ला वे व व न, न  
 वू लि सू त्र ति क अं न, अ व ल गु जा वे र ग रू मे पी ति नि वा हे कं न ॥ १० ॥ मा ह ना अ त्रि ला ॥ व द न क स त्रि ला षः  
 सू म ग म द, जो नि थ, द व दा न, अ नू कू ल का सि, य नि आ नि थ भ स न म ध यी सि ना हि, धू य द धा म क ॥ १२ ॥ य  
 वि हां मा ह नू य सू र्ग ध क त्रे व सि वा म कां ॥ १२ ॥ अ त्रि ला ॥ स त्र अ जी वि कू ट मा धा ना नि थ, आ ॥ नि आ नि य मा द मा  
 जी दि व च आ नि थ, या वे यि सि त्र क सा टी का की जा थ, य त्रि हा द य न मा हे ला क म हा सू ष ली जिय ॥ २० ॥ दू स त्रा ॥  
 आ का व व न ह न हि ध ने, सा का मि नि उ ह टा ना क त्रे ॥ २१ ॥ ग म वा व न, आ ॥ नि व क न का टे ति ल क लिला वः  
 ज व टी का द षे द ग न न व व सि हा ॥ रु ना व ॥ २२ ॥ श्री व सानं क व न ॥ ग ग व, कू ० ता ली स म व वे य ट वा नी सी यीः  
 सिल ग म वे, स त्रि सां ग ल दाम म ह म ल ॥ व ह वा नी व ह जी व न ल, आ ध ना नि अ मा वा स ने न नि हा नी य, न व क अ



जनने नमहदीजिय, यत्रिहांशमनिहोयेरामसांलीयकाजिय ॥२३॥ दसत्र, दहा ॥ मेनसिला ॥ रात्रे कल  
 त्रिदल ॥ गत्रावन अहिनाम, यमि अंजनटीका केने निवषन मोहयोम ॥२४॥ कथे ॥ यीरुमध्यकथं सक  
 ० डीवकरुनिडो, नगत्रगुंजके पूज, काकजि द्वाघूनिलीजे, यषटपीसे संग अत्रडल २६ मध्वपावे, त्रवि  
 वासत्रअवहांली सवनिकायीसिमगवे, जवेनत्रुणित्रिअत्रिय, पमयगट निव्वेकने, अविअंनदक  
 श्रुयविधि सावदूड याड काडविनधने ॥२५॥ दसत्र कथंलीसग, वासायद्रूपमलदललन, याः  
 ननिसगषवावेनात्रि, यूरुषहां नजिविरुवात्र ॥२६॥ दसत्रीविधि ॥ मेनसिलाकसत्रियरुजधवल्ली  
 ॥ गत्रवनसंगमनदनकत्रल्ली पूरुषवस्यकामिनिकहां जाननत्रउवननात्रिकहांली ॥२७॥ दसत्री  
 विधिनात्रीवसीकत्रन, हलदलदूलधरुना अने, लघुकुयूनवदकीत्रजन्वाने, आत्मसूकषवावेकां  
 अंजनकत्रननात्रिवसिहांली ॥२८॥ दसत्रसकलनत्रमाहना ॥ दाहा ॥ सहदवीजत्रग्रहनमह ॥ गः

८३

वावनसमंश्रीनिरुवत्रीवां गिलककत्रेमाहेसकलजहाना ॥२९॥ धूपसकलवस्य, कर्णत्रयदनकू० सः  
 त्रिसोत्रालभाधजान, मेनसिलधनुना, अगत्रमूटी सोहलसीथन ॥ कक ॥ गेनाडोत्रविलावासायं ठत्र  
 सुषान ॥ नकरुकेदेधूपवासनवसिकत्रनपमान ॥३०॥ अथसुिवसीकत्रना ॥ कथे ॥ संनार्सनिगिनिगः  
 रुवंगीअत्रआत्यत्री ॥ सगुमिगकीराम, डोत्रगुत्रसिषकीनात्री ॥ उहिगआवदिहां डोत्र ॥ क्षाविनीआः  
 कामिनी, सागर्वगीआहां ॥ डोत्रडादिगकीरामिनी, अकिपीकि कीथया नयपमदाषमिपुनिअति  
 याहिय ॥ यंवलसाविरुजानहित्रहे तोथहिगपीगिनिवाहिय ॥३१॥ वंनिनत्रमषंठ दूरपुवसअ  
 स्त्रीपूरुषवसीकत्रना ॥ ॥ डोषधवाजीकत्रनाहिवर्ननी ॥ १० ॥ क्षाउकत्रन ॥ दाहा ॥ सिववीत्ररुजन  
 कर्मावाहनाआहां ॥ यात्राक्षउसंवात्रिकेषाकत्रसिकआहां ॥ ११ ॥ येद्युगअमिषमधूमिनिविमीनमूः  
 सलास्यांम, मूडीआसर्गधसायत्रसलदूदधीअहिनाम ॥२॥ साषादूलागुत्रठत्रीदगीदूपीयत्रियाः



ॐ ॥ पंचगुंजसंश्रुताश्रममहोदधीमां ॥ ३ ॥ ननमर्दननिलनलकाश्रमिपत्रिमल्लयानगिला ॥  
 अरुहांकिक्किलिविलाक्षसवननंहा ॥ ४ ॥ अथक्षतकननचूदनचुगुयूषास्त्रेनिनेकवा  
 पां मंगलं मालकांगनीसाषीउभेरुनां ॥ ५ ॥ शयद्यमानयानिगठिषां यथाकामिनिक  
 लालनं आनंदकदपां ॥ ६ ॥ दाहा ॥ क्षुद्रकनकश्रमिवलधननमाहिआयुक्तां येषमर्ननिः  
 कलाकमेंडोनन, डीषक्षहा ॥ ७ ॥ ननिकं श्रुतायययिदेघटेनवलनिहि श्रुग, अत्रहा ननिकीवृचि  
 मिटे, लोचुनवटे अर्नग ॥ ८ ॥ रुनमंतीं सर्वदी ॥ ९ ॥ हलजाविगी अहिहन् विजिया अत्रवां निः  
 इतिअसांतीं रुनमेनरा ॥ १० ॥ अथक्षरुनंजनन ॥ गीतत्रअनेश्यामत्रंगलं रुनकीवृचिआदि ॥ किक्कनष  
 वावतगीनदिन, नात्रपिअवेगादि ॥ ११ ॥ अत्रिल्ल ॥ गीतत्रमंदित्रहीतत्रअनित्रषां ॥ १२ ॥ टीकः  
 सिवदीवजगादिषव ॥ १३ ॥ भाटाकामूखउवनततचूतत्रिका ॥ यत्रिहीनांतागत्रसत्रनीत्रसागादि

षवायषात्रिहो॥सूत्रनिसमेमूषकात्रिकीसूत्रनकत्रेशाकाः॥सूत्रनकत्रनहोत्रेनहीसूत्रनीययंठित  
 होः॥१०॥सूत्रनक्ये॥ससिकसत्रिहगलोगत्रीमजागीहलआनग॥वदटंकअहिहूनगुंजदेमृगम  
 दभनगसकलपीसिगकाभेनकनकामधुमाअवटावग॥टंकटंपत्रिमानजानि,जियवनीवनावः  
 नआनंदपीतिथानननिमिलेवनीगकरुकेपूत्रषनवलगिमनाअमूयेनही,अवलगिवाषेस्त्रीविलः  
 नस॥११॥दूसत्रीविधि॥दाहा॥वदुगुंजअहिहून,पत्रेटीकहत्रिवलरात्रहेथकिरुद्धमेन॥आवात्रिदू  
 त्रिउसूत्रदमे॥२॥अथकाभेसूत्रमदनभादक॥दाहा॥आसगंध,कूट,कनकि,त्रवाकूत्रअजभादअ  
 नंद॥अत्रवहेना,आंवनसाठिविलावीकंद॥३॥दाहा॥धनिया,भाध,भावत्रस,गजपीयलि,अहिर्न  
 म,सूत्रनकालि,कयूत्रयूनि,नीलसूत्रनीसीमा॥४॥दाहा॥मित्रयि,कायहल(ग)षनू,पीयलियरुअ  
 नि,साटमूलगालीसतज,विजसात्रयूनिजानू॥५॥दाहा॥सूकीवीजअनात्रकीजीवाभनअभनचिता



रुद्रगीमृगकवि, कोयवाजयूनि लंग॥३॥ दाहा॥ सूकीवीज। महवरीपंकजगठानोलसिंघात्रजान, ग  
लिनकाकनासीगा। यूनित्तागकसत्रिश्रानि॥ दाहा॥ १॥ घूहकत्रभूलसमावत्रि, ओषधनुकालासदीकः  
टीकसद्वश्रुनिके, वसनकुनिथयीसि॥ २॥ दाहा॥ लोगवीरोजीजयरुत, गनीकुहानाजीमिनि, दोषदात्रवीः  
नीनवलश्रुत्तलालघूश्रुनि॥ ३॥ दाहा॥ सर्वदजाविगिललिङ टीकटीकलेआवा। एदसेओषधकूटक  
प्रितागत्रश्रुतत्रयाड॥ ४॥ दाहा॥ कीयल्लीर्थायसत्रागद्दधमगाड, नित्रजलराजनमहेश्रुवटाव॥ रुं  
गीश्राधसत्रलेआड, वसनवाधिपयमहश्चिटिकाय॥ ५॥ अत्रिल॥ दक्षिसमानजवदूधकहसगठनी  
हात्रिया॥ विजियावसनसमनिकात्रिभाजत्रिया॥ ओषधश्रुसर्गंध, आदिश्रुनंदनालांय॥ पत्रिही  
यावकर्मदर्मदयत्रचांय॥ यकांलीय॥ ६॥ लोगश्रादिओषधसकलगामहददूरलां॥ टीकरुगमस  
नवीसगवदीजिष्ठाउत्रलां॥ ७॥ रुंयत्रधनेडकेलात्रिकेयूनीजोककुकसित्रांलीड॥ ८॥ दाहा॥ पू

二

निविदिकत्रके सकलमलिभादत्रयेयवास, नाम्नासुभादकमदन, सुंदरमदनसुवास ॥२१॥ दाहा ॥  
 हुकत्रनश्रुतिवलधननग्राहकमनसिजनीत्रश्रुतिउद्यावनसूषणवगभादकसूषणसनीत्र ॥२३॥  
 दाहा ॥ असर्गधनावा दूधसांटाकश्रुतिउद्यावनसूषणवगभादकसूषणसनीत्र ॥२३॥  
 दाहा ॥ असर्गधनावा दूधसांटाकश्रुतिउद्यावनसूषणवगभादकसूषणसनीत्र ॥२३॥  
 न ॥ अधिकवानवत्रनाधूहायासनसुतशाषा ॥ वदूविलंबलोत्रनिकत्रे, साकामिनिविदिकला ॥२४॥  
 ॥ अत्रिल्ल ॥ नात्रीउत्रधहूनावीनजजानिय, घिसीललावेसुल्लेनत्रवभनिय ॥ वित्रल्लोत्रनिमानस  
 त्रनिवदूवा ॥२५॥ यत्रिहाजवलगुशोवेनात्रिनहनहिक्काड ॥२६॥ त्रिपुमादलप ॥ सुंदर ॥ वदक  
 यीनसूषकमहदेटीकघीयलिठानिय ॥ लयटा ॥ केपिठाननाघत्रसकात्रिय ॥ पुनिअग्निनिमधाय  
 का ॥ यियलिक्काहकाटिसूका ॥ यसमदानयीनीवात्रलहिठिकिनीअत्रधत्रला ॥ य ॥ उषधसयूः  
 वनकत्रेयुवनजिनश्रुवत्रकानिय ॥ पुनिअर्धटांकपरिमानसुंदरवत्रीवना ॥ य ॥ अग्निध्वंशत्रमूषः



२०  
 १५  
 १०  
 ५  
 ०

३०॥ लघुसूत्रविधि॥ कनकितवाकनद्वलसूत्रगयदधीयलीसम  
 सत्रिआसगंधकूटआनिघुनिवयरुलासद्वगमाधनकिलेकलसूत्रकीजिय॥ विधिसूत्रमनत्रनात्रिह  
 नंदहिदीजिय॥ ३१॥ सहस्रसयदीर्घाठमगंधे मालकांगुनीतलकटोये॥ मदनकूसकामदनकत्रे॥ म  
 नववसूत्रदीर्घताधये॥ ३२॥ उवनअशुकी॥ उवनअवलगुनात्रितवलगुसूत्रपावेनही॥ लीजेवडवविवा  
 त्रिकेत्रीनिनकनत्रनात्रिकी॥ ३३॥ डावनदाहा॥ कीवनअत्रिविधिगुंजरुत्रिउगंगलितकसंग॥ ववन  
 धियावेत्रवनिकानिलेउवेअनंग॥ ३४॥ दूसेत्रेकद॥ कीटहागथकसत्रंदत्रिउवनमहिनासुनिवास  
 फनअधिकसूत्रने४॥ नेत्रेनिनयत्रनाकावास॥ कत्रेधित्रात्रीहनमहजत्रेकीटनिकात्रि॥ ३५॥ लघुसूत्रसंगि  
 दीजियउवेमदनअलनात्रि॥ ३६॥ कथे॥ यथमकांमकलालवालसंगवित्रलाकीजे॥ मदनसदननंगका  
 टिकाटिमनाकूसलीजे॥ षनउयत्रिषनहठिउत्रअनिवयलचलाये॥ ३७॥ यत्रहटवलान्नवनहवेठेवे

२०  
 १५  
 १०  
 ५  
 ०

३८॥ दूसेत्रीविधि॥ सहस्रसाहस्रगुत्रअनिघुमाननीयकहलरुत्रसूत्रविलीअनूसमसत्रियासिमद  
 नाकूसलोवेत्रनिकत्रनमनसिअजलजाये॥ ३९॥ मुदितविधि॥ नात्रिउवननहीहात्रिके॥ पूत्रषडयत  
 नगकालकोदूदिसिन्विबटे॥ मुदितहापिश्रवालउडाकाभाकामदन अलनिकटनगगच्छि  
 नहा॥ ४०॥ नीतीयथकजगनकत्रेनेवडवजाहा॥ ४१॥ पूत्रषडावनसात्रभा॥ कामिनिअपनयानिसा  
 हलोवेयीअजंगजगनसाथहिविधिअनिउवेत्रवनगवत्रवनिका॥ ४२॥ दाहा॥ सुलीकवनसात्र  
 भा॥ जाजकावनिनीचिनहिजियोयनिनाकीनत्रि॥ हगनहादूद्वीविकत्रेखलाकत्रे॥ ४३॥ कंद  
 ॥ मदनकूसकटात्रविधि॥ कनकत्रिधुंयवलीपरुयानीसीलीजेमनसिसीकथडषअनिथकनत्रः  
 समकीजेहाजिसककसमपीसिनामीनत्रलावेअनिलघवनिनहिनीनअवनमहिउनाये॥ ववन



लक्ष्मीवांशालीजे मदनकी समर्पन कीजिय, अगिकठिठक (भत्रकवावली, नवविमनमानमनावली  
॥४२॥ लयमदनकी समर्पकवन सहनकुत्रीनाथीउथकसमअनिय, अनीसुचमकविपीसिवसन  
महिष्ठागिय, मालकीगुलीनलनकसमवानीय, यत्रिहीमदनकी समर्पकहालं लयजाभनिय ॥४३॥ क (भत्र ॥  
नमयूत्रसत्रवेनगिसमअनेवडुत्रजाकां, मदनकी समर्पन केअगिक (भत्र दृष्टहालं ॥४४॥ संक  
वीकवन ॥४५॥ लेदमदात्रिमकालमगलं के। नूननलाहसोषंउषंउके। कविथनयूत्रागनवीनसा  
माटीकलाजनविधिधनेधनियावकडयत्रगाहियकावली डानककजीवहिर्नगरुत्र, पुनिलीज अंव  
त्रकाहसूषां केकाकाजसत्र ॥४६॥ (थत्रासा अंवत्रकविचिर्नगमधत्रिय ॥४७॥ जोजगिहिमाहिनिका  
त्रिमात्रिय। संकावन अगिहालं नसंकाकीजिय यत्रिहीवालेकलिअनंदमहात्रसलीजिय ॥४८॥  
दसत्री ॥४९॥ जाषां जां रलसदाहामसंकावनहं सामदनधम। नवकामिनिघावेवहावलास

२०

मानादादंगवत्रसकिकियानि ॥५०॥ मकवीत्रजगाकां रुनधउत्रहनविधि ॥ अत्रिल ॥ मानासाहद  
सटीकसाठिसमलाजिय ॥ मिछिडहेसमानसा, वूननकीजिय ॥ धींसनकं सपागहिशाजनषांहे ॥ य  
त्रिहीयत्रेनवीनगवनिडोकाउनजांहे ॥५१॥ दूषागात्रहनालं ललघपीयालिसगसिलाजिग  
असंमरुदसंगअनि पुनिपीसिकांनिकेपूत्रीवाधेदेदेटांकपमान। अगिडगंदूलकजलसांसक  
वननषां ॥ ननअगिसूषां जांली दूषागाकहककडपां ॥५२॥ दूत्रीसेविधिहलकादलीयत्रि  
पकमगलंले, आंके, लोअवत्रसअंवत्रसजलोटांके। पागसागजालां गियाषानिरुगियषांहे ॥  
यत्रिहीजसंगाकावागमहासूषयांहे ॥५३॥ सामवागहनविधिआहा ॥ मदनसदनगेनगिसमेवलन  
सुननहिवात्रिहवषनडयत्रेवषकांनासूषयावेनात्रि ॥५४॥ सगवात्रहनविधिहलषकत्रिकद  
लाहलसमसत्रिजानिय ॥ गानेदनगालिमघानअनिय ॥ गानादूषांयिसिपीवेकामिनी ॥ यत्रिहायावे

५५



पत्रमश्रुनंदसायागिनिहामिनी॥३२॥ द्रुसदाहा॥ उत्रदचूनमहवाश्रीवत्रजानविलांकंद॥ एभययसा  
 पीवेनत्रुलिसुषयावेअनंद॥३३॥ सात्रभयहपनिवात्रलविधि॥ वासकळंति कयागसमकत्रिपीसर्व  
 त्रिसायमदापीवेयुतपूयनिवात्रनहाळंति॥३४॥ द्रुसत्री॥ हत्रयेसाठिआंवांरायश्रीवेसमकनि  
 पीसिअः सालावेसातदिवसजापीवेकाळं गाकायूहपनिवात्रहोने॥३५॥ द्रुसवीकलकयागवीस  
 कयागसमसत्रिआपीवेडठियाग॥ गाकयूयनिवात्रनहाळं नागत्रिसाजानेसवकाळं॥३६॥ वीधन  
 कत्रनविधि॥ वीगाडीवधनउसत्यावे॥ समसत्रिकेजलभश्रुवटावेपूषवनिवनिगाजवहाळं॥ गीनिः  
 दवसजलयीवेसाळं॥३७॥ द्रुसत्रि॥ गजविश्रावदूगिहलेश्रीवेपूनिसुषाळंकेगाहियिसावेसागवात्र  
 आळं॥ हविधिषाळंनिध्वेनत्रुलिवानदूळं॥३८॥ द्रुस॥ टीकवदामयूत्रिषलेश्रीवेचमधसांआळंनिः  
 सालावेवनिगाकसंगत्रनिजाकत्रेनिध्वेनत्रुलिगरुनहिधनेद्रुसवत्रषगीनिकाश्रुनिउत्रदिनधंदः

२१

हडठिषाळंजाभकत्रदसुगत्रुनिकांसवेवागहाळंजाळं॥३९॥ कूचक॥ भत्रविधि॥ समसत्रिधिपालिकू०  
 लोंगयूनिजानिथाश्रुसगंधकुलकनत्रनिध्वेअनियकामिनिनीडनिहिमलिकूचलाळं॥ हयनिहाहा  
 वीहाहीकटात्रमहाकुविपाळं॥४०॥ द्रुसत्री॥ वित्रेतागंगवटीगलमहिकूचलावेअवकाळं॥ उत्रजाहागश्रु  
 तिहिकठिनअनूधलकीराळं॥४१॥ कसवृद्धिवात्रनकदअवात्रकीमहिषीपयकसंगकचलावेय  
 वळंसदिनवटेवात्रतिहिअंग॥४२॥ सामकत्रनविधिआवीगाकासूलमगधवेवीजधेरुवकलेश्रीवेः  
 समजलयीसिआलावेकसविद्रुवहाहिआश्रुलिकूलरुस॥४३॥ द्रुस॥ वसनीवृ० श्रीवत्रकांसंगधोदि  
 नशीकलीसकसपत्रलावेगाकसत्रलहाहिकवसीमगथवात्रिउपजहिअहिनामकलययत्रिसदवस  
 रवश्रुत्रिपानकाश्रुत्रसहागरुंगत्रामुमानीवकटाळीमूअसुषेकाहकाकासवश्रीवेपूनत्रनवननिनि  
 वरुडीगलकसवीजिपुकायहललेगपीथावासासूलसमगाश्रीक्षदलीषादिमगाडरुंगत्राजलेकु



हंसवाव, गहिकविदूनागिलकत्रमल, लंकविहंठलाहमलिमासुनकत्राषे रुंमात्रदाठी (गमकलगाः  
 वेसांनकहे नरुंदन (गमवषनां॥ अवेकागहं सठठिजां॥ वात्रव० नविधि वयवाव वद्वी अत्र अ द  
 वकमाधन सह दं॥ अदकवीदसिमधय च्छुअधिया त्रापीवे पीसिव ८ धूनिवा त्रासामक वनविधि  
 गिहला (प्रोधननकी कालि। अत्रपिं ठावू कुसुमविसाल, गिलका नलमलि अत्रावे, कत्रे स्यामक यदि न  
 दिला लोवे। दसलाक्ष अत्रादितिवनिमगावे गिलका नलमलि अत्रावे, विदूवनपत्रलावे जाकां॥ कत्र  
 कत्रसमसाहा॥॥ दससपा नकसत्रिसमगावे जलजंही वमहं गहिजावे, कत्रलावे कां सभापीसि  
 हने स्यामक व्रजगदीस, त्रामसानमविधिसंषठात्रिके सत्रिसठठिपिसिवा त्रयत्रलपसंवात्रे, द्वित्रिः  
 हां हिक वसं कनकी जे का कसात्र वनीमनिली जे दस (गदं नापी से हन गाल वूना त्रावक दली त्रसठा  
 वकत्रे न फलाहवे जवरा म गां हां नहाही वात्रकानाम॥८०॥ दस वूना डो अने हन गात्रुसित्रसालावेः

८२

आवात्र गनचि नवात्र गें दूत्रिहां॥ जाहि यामे कयटक हनक कूनाहि॥८१॥ दसपथम त्रामस वद्वि  
 कत्रावे गायत्र गलक वत्रिकोलावे। केलावे क्वित्ताका नात्रजनमन डये जे वात्रसत्रीन॥८२॥ दसपां चटी  
 कहत्रिवाल गं क जोषत्रिये यासग अनित्र नां॥ टां कयक क्वात्रिय गागजलसा पीसिक सघत्रलां॥ ययत्रि  
 हां गाही वात्रकानामन कूनहि पां॥८३॥ अथ अत्रावटनविधि॥ कूपे हनदी (गमवषनां॥ नखमाथा सत्रसां॥  
 जानिका समानी कपूत्रलां गं क सव अत्रात्रि ठं क वंदन अत्रन सकसुमरुहि ठात्री नोलवी त्रा जाटी क द  
 सपी से सकल संवात्रि सव वूत्रन क द गं लमह कत्रे जा अत्रावटन कां॥ विमल वूत्रना जे नत्र सिव दन कामः  
 गासाहा॥८४॥ ॥॥ निदगमषं॥ अथ अत्रालयविधिवर्ननं। ग्रीषमकी त्रिउषी जत्री टमलिधिं जत्रा  
 मेवात्रिमास लउजग ननियनिया लिथ। एकदिन गाकसी सयाषनि सयाहा तवादिन डरि के जागगाहि  
 कां निहात्रिय ने नही नजे से कत्रक व ठां॥ केठिं भत्र गहे। ने से सां॥ जे सी वास वनि डयात्रिय, कं वनम



ॐ गाहिनाषे दूनाली के जां गोलका जव मुख ही भेजव ठाविये ॥ दाहा सागा यव डया त्रिके कंव  
 नमक्षम ॐ ॥ काडन दध नासको मुख मे ले जहां जां २ काज वविधि अलाय असि नर्मज अनिके गमच  
 नगाहिष वां ॥ निखे ठाव निववन कविमाले श्री नृप सां लीजे तुल कया सने जान यं क कत्र हां ॥ का  
 गेदी पक मे धने कत्रिक विवाही सां ॥ अत्रिल आधिने निअ माव सने न निहा त्रिके एह वाणी वह च नदी  
 पक महवा त्रिके यह विधिके सुजाना घवन सनिली जिय पत्रिही दध काडवन गाहि ने न जिहि दीः  
 जिया ॥ ४ ॥ ॐ निउकाद सखं गुफ रुदन नाना वी ॥ द्याग विधान सूत्र नि सामान डीषध वन नै गुफ  
 रुद ॥ यकनिक कामना मृदु वा त्रिज एकनिक अतिहा गह लोत्री एकनिक कइ गम सना सम एकनिक  
 कइ गम गिग भत्री एकनिक जलही न विवाज नि एकनिकानि खेय निहात्री कामल हां न हां सगां  
 सायी नम कामन भाहन हात्री नत्री कवत्र अंग पत्र नासक दूय समाना सूत्र नि आवा को मिले कामी वसि

२३

कस जान मानें ॥ २ ॥ दाहा ॥ त्रिनि वविड यजे नात्रिकानात्री मिरे जाकां त्रिवि वटां जाव त्रिके ने गो  
 त्रिनि ववि अतिहा ॥ ३ ॥ दाहा ॥ नात्री नव वंग मह सवन त्रिन क हां मद नाक सक मद न पत्र नः  
 हा मन मथ का सा ॥ ४ ॥ कंठ लाया वादिय क कामदन ग्रह सवन त्रिन क हा ॥ मद नां क सक य ०  
 त्रिने गहा मन सिज का सा ॥ गहां मन सिज का सा गहां मन मथ जल दावे ॥ मद नां क सक वल गे न  
 वहिना ॥ सुष पावे जवल गिह ने न गाहि गिय दूष पावे हात्री सवन नात्री क हा गथ क मद ना ग्रह हाः  
 वी ॥ ५ ॥ ॥ निनात्री गुफ रुद ॥ अथ य दूष रुद वन नै ॥ कृपे ॥ जानो न घटि ध हां गय नि पत्रे न गा  
 समन काम गय निना मिले नहि सुष पावे हा मिनी जां हरे वरि हां दोनिका दूष ड य जावे मद  
 न सद न मृदु अधिक ना सु गे दूष पावे दी व द हां न नि कुल घन ही हात्री अंक समदन ॥ ६ ॥ दाहा ॥  
 आमद नाक ससिष पत्र युग ट य दूष क दूष द हा पत्रि गिया क हा गह जान गुफ गं ह रुद ॥ ७ ॥ दाः



हावकूपन तथां जानिनेवीन नूदवेगानात्रि सासववामूषके डवे कह नका कनित्रकात्रा ॥८॥ दाहा ॥ ना  
 जवगुवीन रुयूषकापत्रे नक्किडम नवतवलगुनि (व्येजानिथ गरु धने नहिनात्रि ॥९॥ दाहा ॥ मदः  
 नीकसजायूत्रिषकालेन नगासा जाः ॥ यात्रिजामजात्रिकेनेनाबिननेकूश्रुद्याः ॥१०॥ दाहा ॥ मदनी  
 कसजायूत्रिषकालेन नगासा जाः ॥ डवे वेगिनहि कामिनी हाहा के श्रुलाः ॥११॥ दाहा ॥ मदनी क  
 सजायूत्रिषकालेन नगासा जाः ॥ वटे श्रुनंद ॥ दटे दर्पाकंद र्पाकामिटे न वृषिदूषदद ॥१२॥ अथ कडव जा निजा वि  
 नाथानिथ मादवीन जवा सवर्नन ॥ दाहा ॥ मदश्रुला मनित्रजल श्रुनमगसूत यत्रन समान कवल  
 वासवीन रुडवे निषदमिनी जान ॥१३॥ विरुनी अथ वटल कामल विमल हाहिन नापत्रवालः  
 डवे वेगिमधुर्गधिसमथानि विरिनी जान ॥१४॥ संधिनी वदूक (भत्रदीन यश्रधिक वदूक हातनि  
 हिवाल श्रुतिकूर्गधिसंधिनि मदन डवे नही डलाल ॥१५॥ हसुनी कटि कटि हवि वात्र रुगमहिषी

२४

कषूत्रपीन डवे सागज मदर्गधिसमहा रानी श्रुतिवसिलह ॥१६॥ डवरुवेगि रयक मह पदमिः  
 निविह निवाल यन कसीषिनी डो वरुसुनी डवे नही डलाल ॥१७॥ अथ पूनष मदना कसवर्नन मदनीः  
 कसजिहि पूनषका श्रुतही हाः ॥ विसाल ॥ दगक (भत्र श्रुतिहा नन हि डवे सूत्र रुडलाल ॥१८॥ आकाः  
 सुश्रम श्रुतिलय नहि विष मे नहिनात्रि ॥ श्रुत हाः ॥ विरात्रनीली श्रुत डव विवोत्रि ॥१९॥ आकाः सुश्रुत  
 (भत्र श्रुतिलय दीन यन ही हाः ॥ ना सम डरु म डो नहि जान न वसिक जाकाः ॥२०॥ मदनी कसका  
 सित्रसूत्र वज्रिनिहि क्री मयथ मस माग मनीय का सत्रे नगासा कांम ॥२१॥ कत्र जोर वषका मी वद ॥  
 जत्रिहा जिजा क्रीम ॥ डवे वेगिरुगपत्र सन हि विपनिन मान रुमा ॥२२॥ अथ नषदान वथन वनन ॥  
 काषजं डव डव जकटि पंथ श्रुनषदान ॥ ना अथ वकयाल विविष्ठा निनि ॥ नी निदूषं डन जान ॥२३॥  
 अथ वृवन अथ वकयाल निसी सडव डव जया नि डो नेन सा न श्रुग वृवन कत्रे जिहा हावे वस मे नाः







ॐ नमो (०) श्री ॥ ३ ॥ कव कामिनि गज गमिनी सजिनो सगसिं गत्र वे (०) सनमूष श्री ॥ के दूष श्री पात्रः  
 श्री पात्र ॥ ४ ॥ कृपे ॥ अति विमल (०) वसुवास अह नरु विमल सज विद्या ॥ निह यूह पय दन वायु पत्र  
 मल पान ध्रुव मग ॥ का दं वत्री कटि घी तवाजिन कन कनी त्र समान मूष वास गहि ले वाषे ला ग श्री दि  
 सूजानु गहि सुरु गनि त्र मल वसन नन भं पत्र मय त्रि मल वाहि सा त्र हसिं गत्र स वा त्रि स द त्रि (०) न  
 सो हे म बाल ॥ ५ ॥ वे (०) सनमूष श्री ॥ ससि मयि सत्र स दूष त्रि माल ॥ ६ ॥ अथ श्री लिंग न वन न ॥ अथ श्री  
 लिंग न नाम श्री भा द ॥ दा हा ॥ राम कं ध क त्रि वा म ध त्रि वे भ व नि पिय (०) द पा न धि श्री व रु पा नि क त्रि श्री  
 लिंग न श्री भा द ॥ ७ ॥ ॥ ॐ नि श्री लिंग नाम मूदि ता ॥ दा हा ॥ क त्रि नि रं ध वि वि रं य म म धू पा व न ले गा मू  
 भा श्री लिंग न मूदि ता क हि ड प ज नि य त्र म दू ला स ॥ नि नि य श्री लिंग न नाम प मा दा हा य नि ग ल य (०)  
 क ध ग दू ना य रं ध य त्रि ज्ञान प त्रि मल ले ला वे ड व रं य मालिं ग न नाम ॥ ८ ॥ य रु र्थ श्री लिंग न नाम श्री नंद

२३

वि वि कटि ल घटे वि वि व त्र न र ह रि श्री क सूष कं द ॥ मूष रं व न म र्दन कू व न श्री लिंग न श्री नंद ॥ ९ ॥ पं  
 व म श्री लिंग न नाम वृ वि नी य वे (०) नि पिय रं ध य त्रि रं कं ध य त्र वां मू ना ये रं नी वा मू क र श्री लि लिंग न  
 वृ वि नी म ॥ १० ॥ ॥ ॐ नि रं यी द न रं ध ॥ ११ ॥ अर्थ त्र श्री स न व न नी य ध म व रु त्र शा का मि नी पिय कः  
 श्री स न द न श्री श्री नंद ड प जे वा (०) वि वि रं न ह न ॥ १२ ॥ पृथ म श्री स न नाम आ ग रं द नि य पो टि के पा लः  
 धि श्री प क त्रेश ग रं ध दू दू क व डे वि ध रे पी य वे ठि रु जा ग हि क लि म ये क वि श्री स न था ग व ना ॥ १३ ॥  
 दू नि श्री श्री स न नाम वृ नि रं द ॥ रु ज ड प त्रि रं म क पा ड ध रे पी य वे ठि रु जा ग हि क लि क त्रे व नि नाम क हा  
 य हि श्री स का श्री नि का म क लाल प का स नि का ॥ १४ ॥ ह नी य श्री स न नाम द ना दि र क टि ड य त्र ना त्रि के पा ड ध  
 रे पी य वे ठि ग ह कू व क लि क त्रे म द नू दि ता ज्ञान हि था ॥ १५ ॥ ध रं के व नि ह न न ही ट र पा क व के ॥ १६ ॥ य रु  
 र्थ श्री स न नाम ॥ १७ ॥ अ त्रि स्त का मि नि का क द ली य ग रं रु ज ध त्रि के ग हे प त्र स त्र श्री क मे न सूष मा नि हे ॥



लसुनयहिनामसुजानयेजीनिहे॥१॥यंयश्रासननामलालसश्रितिलसंदत्रिकाकदलीघगदेकटिकाः  
 त्रिकेःकामीकत्रनश्रनंदश्रयवेःगहेयत्रस्यत्रश्रकत्रयेत्रिकामिनीयत्रिहंलालसनामसासीधर्ममि  
 नी॥३॥षष्ठमश्रासननामविषत्रीतिःपीडयावयसात्रिकेहयत्रयेवठिडयत्ररामकलालकत्रेविष  
 त्रीककहयहिआसकाश्रितिपीतिविकासनकां॥१॥सुयमीश्रासननामपियत्रेठिकंनानिडवाजगहे  
 कत्रलीघनिडयत्रिवेठिबहे।कामिनिकामकलालकत्रेकविश्रंवजश्रासननामध्वने॥२॥अथमश्राः  
 सननामकत्रुषियाधित॥३॥द॥रामजंयमयूत्रषवामकत्रवटकुविश्रुजकधियनिगंवकयासनत्र  
 लिकयत्रनवित्राजिन।गहसजदूंपानिकत्रतित्रिहितश्रुतिगंरुतकामीनीवायथाधितश्रन  
 दयश्रवासीधरहेरुमिनी॥४॥नोमश्रासननाममहितकामिनिथोटेयाडयसात्रियिडयगगहः  
 डलठिनिरुनात्रिकंरगहेकामिनिकायाः॥५॥हिरुश्रासनवत्रनाकवित्राः॥१०॥दसमश्रासननामम

२१

गयसुजानीयनिर्यकहाः॥६॥त्रहेपियद्वयत्रयानिडवाजगहेमूषचवनकलिकंलालकत्रेमगश्रासन  
 वूयश्रनूपध्वनेद्वसत्रिविधिवनिनामृगनात्रिसिहाः॥७॥त्रहेपीयडयत्रिपीनडवाजगहकत्रुलिमूषच  
 विकलालकत्रे।मृगश्रासननामविवात्रिधने॥१२॥नकादगश्रासननामयत्रस्यत्रीवात्रायगयावेका  
 बहेदेदेवत्रनयत्रस्यत्रगहेदंयनिकलिकत्रहिश्रुतिनामश्रासनजानूयत्रस्यत्रजाम्राडीदसश्रासनना  
 मरुमाला॥१३॥षरुलागिनिरुश्रकामिनीभटीघिडकटिगहेनिहेश्रुकमगरयूत्रषरुत्रलिजंयश्रगं  
 माहिकविनमालश्रासनजयाहि॥१४॥द्वसत्राविधियियभटेनियकटिगहंगहंश्रुकश्रित्रिवालका  
 मीकामिनिजंयभाश्रासनकहाकमाला॥१५॥यंयदगश्रासननाममत्रालमृनालपीयभरनियकटिः  
 गहेलः॥१६॥श्रुकहत्रिवालनियडवाः॥१७॥रुजयत्रध्वनेश्रासनकहेमृनाल॥१८॥द्वसत्रीविधिका मिनिः  
 षारुलागिनिरुभटीकामिनिगहेश्रुतिगनगभीलत्रडवाः॥१९॥रुजनयत्रवालकटिगागहेश्रासनमृनाल।



षष्ठ्यस्य नामसूचयत्तवनीययोः केनैव उच्यते कत्र उच्यते कत्र कसीसध्वने पीयवेऽपि गहे क्वच  
 कलिकत्रे सूचयत्तवनामसूचयत्तवने ॥ १८ ॥ सफदगस्य नाममहावलकामिनिके देयाः सुगंधा  
 त्रिककामीकत्रे कलालसायाः पसात्रिके पाः नकसू ॥ १९ ॥ वलनीयस्य अनियेयत्रिहानाममहावलस्य सनडे  
 सेजीनिय ॥ १९ ॥ अष्टदसस्य सनसूत्रनिर्भूतिः ॥ लीयकयत्रनकधयत्रक्षत्रे कटिकत्रगहिकीठासूत्रसात्रे  
 सूत्रनिर्भूतस्य सनको नामयीहीमे जावेदाडकां मा ॥ २० ॥ नोदसस्य सनकत्रावेयथाडसस्य सनकत्रावेः  
 नवमनमथकांमीजावेद्वि ननकपोटि नहेवत्रनात्रिपूनिडठिलः उहेकत्रनात्रि ॥ २१ ॥ दृष्टसंकावनवि  
 धि ॥ दाहा ॥ पीवयावेना नडदकि नवलीसी नवहाः ॥ हदिटकादिटहा नहेवदूसंकावनहाः ॥ २२ ॥  
 यावर्ननैवे ॥ २३ ॥ सजयेपानकत्रिपानयानसूचयत्तवने नादमहमगनके हं देरुगलरुजहं द ॥ २३ ॥ योऽनः  
 विधिमोनगिनसावेनात्रिसंगतो घटे वंगमनाजजावनसाकियसंगयो ॥ २४ ॥ मनमथयाजजागुरुगमला

वनमूदित्राषेकूटे कूटेजीरुसेवान् अनिदिष्टगीचनयपलसूचिनरुषेदेरुनज्ञान ॥ २४ ॥ अथ  
 र्पयस्य सनदुनियत्रनिपुथमस्य सननामसूचयत्तवने निरुवदे घत्रीम ० नहाः ककुर्मदसावकहीस्य  
 सनकत्रे सलसहिरुसूचयत्तवने ॥ २५ ॥ नवलीयोटे पीठियेयूत्रषगहकटियां नसावकहीयनित्रनिकत्रेस्य  
 लसस्य सनज्ञान ॥ २६ ॥ दूनीयस्य सननामडदिरुयमदायोटे पीठियेयिथे ॥ २७ ॥ त्रिथस्य सननामसंकावननवलीनिरुपाडयसात्रिय  
 त्रिथियगीयत्रवेठिकलालकत्रेरुगपीनयथाध्वयानिगहे ॥ रुनामसंकावनसूचयत्तवने ॥ २८ ॥ वरुथ  
 स्य सननामसिथलनियदद्विनयाडयसात्रियत्रेदूसूत्रेयगीयकलंकध्वयानिगहे क्वचकलि  
 मथेसिथलस्य सनसूचयत्तवने ॥ २९ ॥ र्पयस्य सननामगंडकनवलीयत्रनध्वानिरुजनिपः  
 त्रय्यत्रसूचयत्तवने ॥ ३० ॥ दूवके कलिकले कामिनिडयत्रकं नसाकीठाकीजिययत्रिही



गीठक आसनामधु वरुसुनिलीजिय ॥ ३० ॥ कामडावन आसन उपांश आसन कत्रे कडावे विविकी  
 मत्रामहि कडयजे अतिहि नमो नेहाम ॥ ३१ ॥ अथर्पं वरुलिंगन नामा अर्नदमू दिगपुनिय मजनि आ  
 नंदक कौं वरुविनय वषानि आलिंगनयां वोसुत्रनित्राषू नवकाविअ नंदन सधमवीषू ॥ ३२ ॥ धाउसः  
 नाम आसन द्रुये पुथमजाग विरुजानू जानू मदन दिग नहर्जानू कां रुद जानू लास न सजामहा जान  
 जान विवित्री निजानू असन अं वृज वत्रा वरुविया विनय पुनिजानू जानू दिउह विनय सस्य वजानि अरुमा  
 लमन लाग निरुषय वसमहा वली सुत्र न अं र अर्नद कवि जानू मन दिग नामहा ॥ ३३ ॥ विधाउस  
 वरु आसन निरुलीयं वमत्र नि आसन नाम दूनी यत्र नि ॥ आल सड दिग सका वकं हि सिधल सुन दू दे का  
 नयां वो आसन द्रुनिय वरु नि सुनि गीठक यत्रिमान ॥ ३४ ॥ आसन सुगम कठिन नाम यधाउस उपां वल दू  
 रुय सकल लकी सुत्र विडय जावन सुषक वन डावन वरु नि कं ॥ ३५ ॥ वो वासी आसन सकल हं कहेः

काक सुषक दनामहा वरुस विरु नि कठिन कत्रि जानू न अर्नद ॥ ३६ ॥ सात्र ०७७ आसन वरु की सरु व  
 डयावन ॥ ३७ ॥ अथ वरुजानि आषिना आसन वरु नं पुथम पद्म नीमदन ड दिग सका वम नालमा  
 न न सुषद कोलिनी बाल नी निवि सष सष समान कह न अर्नद जानू जिय जानू विरु नी ॥ ३८ ॥ आसन  
 उदिग अं वृज अं वरु आल स पुनिग माल मृ नाल सुलाल सथ षहिय विरु नी सुष दायका ॥ ३९ ॥ संधिनी  
 हलुनी आसन ॥ दाहा ॥ संधिनी गीठक याग वरु नि नी निरु सुष द वषां न सुत्र न अं र वरु नि हलि नी यग  
 महावल जानू अथर्पं वरु नि वरु नं ॥ दाहा ॥ निरु कत्रु नि विरु नी निरु नि अलि कडलि नर्जानू वरु नाः  
 आस कौ ने महि सुकल यं वधि ० नू ॥ ४० ॥ पुथम नीयं क आसन नाम मृग आसन आसन उदिग आल स  
 आसन जानि निरु क आसन नी निहे कहे साका कष यान ॥ ४१ ॥ दूनीय आसन नाम वरु नाम दनू दिग  
 याष वषां नि गीठक सिधल महावल जानू सुष या वरु नि अं र संका वन नो वरु नि जानू अनिययोः



[illegible]

नामनित्रायियं नृककत्रक्षत्रिय, दीयकनामासकिअननसंवात्रियसेनसमं हहांकनीवृकाषाः  
 ॐ हे सुंरुनवात्रोअमघनमसूषया ॐ हे, जवद्वजीहात्रिषा ॐ नगवीनर्जत्रिहे ॥ ४० ॥ डोषठ  
 वं वंसीका मकनाकीकत्रिक्कालिभेदकेक्कानियसयदक्कालकीअत्रअत्रनधनअनिय। वृंहसकाः  
 ॐ के वसनमहक्कानिय, कात्रीहाडीमक्षवानाथ ॥ ४२ ॥ सषडोषधीपाडटीक(गेदधिसंगआया ॐ  
 हेसागदिवसकेषा नववंसीआ ॐ हे, आकोडमासयज्जहिलला ॐ हे वद्वत्रिवागदू ॐ नाहिसह  
 सूषया ॐ हे ॥ ४० ॥ डोषधवलपूषाका, पुथमगंअत्रनि ४ सुलमग्म ॐ यसाअलयावकद्वयनताहि  
 वग ॐ यनवयानीसाकाटिक्काहसूषा ॐ यषंठयंठकत्रिडोषदयूषवना ॐ यषडयत्रकत्ययद  
 वसयर्जगसामधसंगत्रायिय, सुंरुनअनियूषमहावलराषियडध्र(नेत्रजहांहा ॐ अनियुष  
 त्राषिय ॥ ४१ ॥ डोषधयूषरूषाक्ये, अजवा ॐ निनृकसंन। मूरा(गेदूयुनवधानोडयूरासीनीदि



गटीकसकलहांभीमह आ नड दां अंरुत्रयमानमृलिकालयकवावदूरुमिमधयनिगठिअग्नि  
 उयत्रहिजवावदूरुयहविधिषाउगदिवसनिरुस अ अग्नि के के वरह त गीनीटीकरुनकवनडः  
 वाधत्रतअग्निवलधेवन॥२॥ ओषधसंकुवकवन कालत्रसालकीरालनिकात्रिसालांयउत्र  
 लयावकाडयत्रगाहियाठांय साजल (अंरु के रामिनिलयहि अनिहे यत्रिहांमधूकयूत्रलय  
 जानिमहावृत्तिमानिहे॥३॥ मधउयत्रका विहात्राजावृत्रनघुयवीकोदुनावना॥वत्रिअंन  
 कत्रियाटलात्राषेगवदनयत्रसकलयांसयत्रमान् संक्षसंमसाद्विकत्रिजा (अवेसीराल  
 नायगाधूत्रका मनरुत्रे कामिनिअग्नि सं कावनडां॥४॥ वाजाकवनसात्रअ पिथलिसाः  
 यवात्रवाडत्रगदूजाडत्रिदलदूववावत्रिलोत्र कत्रिपूत्रीमहिषिमह॥५॥ यथमसंयुत्रीः  
 वां वां उमलि धे दूमहपीवे दसतत्रलिपहिजां काकसात्रं मडत्रे॥६॥ असांरुन नाड

१०१

नीलय सात्रवा सहदं मधू अग्नि य रकिं जलकवसांय नाहिलयहि अनिविनु (अय दूरे  
 नही॥७॥ अउकवन॥ तालमयाना (अष वृकोचवीज यूनि अग्निनागवला अत्रकंगदीयाः  
 ओवृत्रनं नूसावृत्रनजाषां उममयीवे दूधमहकां अउकव अत्रवलधवन उवनं दस  
 मडां॥८॥ लिगनवृद्धि॥ लयूकयूत्र १० दूध दाडववावत्रिअनसमूधलिगलयजा अनेकां  
 अतिक (अत्र अग्निदीत्रय हां॥९॥ अरे॥ दूसत्रीविधि॥ घीडयां उओषधजां नूयनीनिड अत्रसमा  
 न अजाद्वयमह डीरेकां लंयेलिगवृद्धिअग्निहां॥१०॥ हलकरां अत्रवीज अनात्र वृत्रनः  
 दाडववावत्रिजात्रिषाकट तलयीजिहेकां॥११॥ दोत्रयत्रिगमससमहां॥१२॥ दूसत्राविधि॥ दूद  
 ॥ मधूकसकलसत्रिषा कटां कूठजा मिलजानि डीगदह पूत्रनावाल अत्रगंधम यमका अग्नि  
 साकददादसयीसिममकत्रिअंगडवरेकां न वृत्रवला मनरुत्रे कांमालिगदीत्रयहां॥१३॥



दूसा ॥ असर्गंधकी जत्रिकन कत्रिके नसाधरुनासा निदिन थक सीधिके महिषिमाषनि ॥ आनीना मह  
 पानिगवरु लधरुना त्रिके सववीज अत्रिका त्रिकह मधु डोषध सहिभाले लयक नीहे काळू दस  
 नत्रुविकी हाहा कनावलि गदिन घहाळू ॥ दूसा ॥ गुत्रुवि असर्गंध समर्घी घवीमहिषी माषन संगति ग  
 लयक त्रिहेय नूषदी वघहाळू हे अंग ॥ अथ नत्री जावन ॥ मधु गुत्रु अमिता समक त्रिल्ली ॥ पूनूषलि  
 गकां लयक त्रय ॥ देवे उत्रु कानि निका काम अत्रि विवटे हाळू सूष हांम ॥ १॥ दूसल घूक पूनन  
 सवीज कत्रे जावेना त्रिका कळू मड चूत्रो ॥ २॥ दूसा ॥ कंवन त्रियमह वन अत्रु माथ सहिग वसनः  
 मह दाना मधु सभन लये जा काळू जावेना त्रियम ससुष हाळू ॥ ३॥ वाजीक वन ॥ गमष नू अत्रु विः  
 लात्रु कंद अत्रु पाठ समघाळू धाउ कत्रे अत्रि वलूध त्रैसाषे का कवनाळू ॥ महावल सूरुन ॥ श्रीव  
 नावू वन घां डरु नमधु सांजाने काळू पीवेना पत्रु दूष भास रुत्रिय नां क हाळू ॥ दूसा ॥ बीजा क

१०२

वाळु लये जा पाळू ॥ सूरुन वत्रने कविनाळू ॥ दूसा ॥ रंगना जत्रन सकल खाल रूट पीत वासी जाना  
 धाउ जीवा मलिसम कत्रि ॥ नूक को ॥ गमटिका अनजरु वहि मूष महधत्रे ॥ गमटिका महारु रून हाः  
 ॥ ॥ विना डगल देवे नहिं नडुनिका सूष हाळू ॥ ३॥ अथ डोषध विदूक सादकी पथ मजाळू हलः  
 लोंग सुगलिया अनिया पत्रायं डारं क सह नज विद्यानिय ॥ अ० ०० क अहि रुन राग त्रिय जानिय  
 पात्रा सहिग त्रि दमह वानिय ॥ सष डोष धी ॥ दूत्र हां ॥ गमधूम सांनिके ना मूषालाळू थरु लधरुनाः  
 यनि साग कत्रे वनाळू ॥ दूत्रन ॥ गमधूम मूर्दि ॥ गमधूम मगाळू ॥ सष डोष धी डयत्रकी ॥ लाहया रुघः  
 नमलिके पावक दीजिय अत्रु वत्रन हल हां हि निका त्रि साली जिया ॥ अत्रि सूरु मक त्रियी सिपा रुमहि कीः  
 जिया ॥ नो डोष ध अहि रुन नासु महवी जिया ॥ सष डोष ध नो नाम ॥ लोंग भिंन यक सूत्री ॥ नू क सवित्रं  
 दन सह रुवषान राम सनी क पून दू जानुवं अमानू रुमया यटा कविधिसम जानू सष डोष धी ॥ अः



निधेनालीसटी कयीसियाकमहभने, सकलडोषधसवमलिवदूत्रिमित्रीसमभने, तवदुवनी नयः  
 मानसहरुसावनीसवने॥ याकवाकसूरहा॥ जानसममकत्रिपूकोत्रेसवविधि॥ पद्यावा॥ उ  
 द्वाडिकेआका॥ गालीषा॥ विदूकसादवागजासासवतननंजा॥ १॥ मदनीकसदृकवन  
 विधि॥ मयिककवूकत्रिमित्रीडोसंक्षयीसदूला॥ सहनसाथमदनकत्रेमदनीकसदृहा  
 ॥ १॥ ६०॥ मुलीवीजद१०टीकरुत्रिडोटदू(गमचुनसं संगमदनीकसूलीहवेवटहिदिनदू  
 दिनत्रंग॥ २॥ गुनसमूदहलवननं॥ गुनसमूदहलकहोवषानिदृकत्रिनाषदूवउत्रसुः  
 जान, सत्रिसु, संहाल, यवेकानवहिनासनेसूनदूसनहान, सात्रसनीवूअंजनकत्रे, हलाडीत्रः  
 नागविषहवे॥ २॥ अजासूकसादि॥ नासूआधसीसाहा॥ नगासू। सत्रसधसूनागीकत्रे, वा  
 नीभाषडयसायत्रिहवे॥ ३॥ साठिसहितगायनहिवा॥ निल्वेगासू(हवाजा॥ सकत्रसाथषाः

गा॥ नासू, सुंटेयीत्रासित्रकीगासू॥ १॥ सित्रसमीहाल ३

॥ गाका॥ साषनकविशुअंनिहा॥ ४॥ मधुसगद्याडलयआकत्रे, रुत्रिआवेकदूसकनधन  
 ॥ आयमूकसाअंजनेन, विययत्रिहवसर्वसुनियन॥ ५॥ महिषी(गमवत्रकेत्रससीपीवेकत्रेग  
 रुडोनात्रीगावेलांगवत्रावत्रिजकहलसफषत्रीकेवाषू, हानसमेडठियाकही, एकयगियाषूदव  
 समागतयेनिकीनात्रीयनषयहंजा॥ कर्मसूनिवेधत्रेसरुनंकहगासूना॥ ६॥ गुनसमूद  
 पकहकहीभायहंकथानजा॥ आअजमा॥ साकहे, सूनदूत्रसिकमनला॥ ७॥ अथसूहनवत्र  
 नलया॥ मूसहजनाषादिसगभवदू, वकलकाटिकेकूहसकावदूदूदूकानिअंवनमहलदू, न  
 वकिक्कुडीवाजकनकनदू(गमचुनदूधअजाकादूधथा॥ हनिदूधआनिसमूधसकलदूधसंगददूः  
 वला॥ कानासहिजनसानदूजा॥ यावटाक(गालीपत्रमानूकत्रिकेवाषावउत्रसूजान, सषडी  
 षध॥ दाहा॥ सेनसमेअजादूधसावत्रनलपिहसा॥ विनूयगक्षयनाडवेअयसार्थरुनहा॥



डोषधवावका॥ गला (थला) अर्द्ध टांक युनि डोरो मूत्रगमदयाथक मत्रके गथवदू नाषे षडवसन य  
 नानला०० धीव वाड यत्रवे भत्रे नी निदि व समरुला हा००० मका कय कात्रे ॥ ॥ ॥ दू सत्री विधि ॥ याने  
 मूत्रदा संखरु टिक यत्र अने ॥ स र अ नी ला श्री नि, ना स ० म रु या ना वान द्वां ह, य नि, बाल  
 मूत्रदा संष, साने, मधू सा, मल ह म, कत्रे नाषे या ड, उ यत्र, भने ॥ स ष डो ष धा ॥ मूत्र, आप न सायू ह  
 त्रिष, जा क, उ ज या ड, व हे, ने नि, द्य ग्री, मधू, कटा ना पी ड, स फ, दि व स पी वा ति ह, ना ग दू ष, स व जा  
 उ यत्र र्ज, मल ह म, क हे, ना स यू त्रि ह, या डा ॥ डो ष धा ॥ दा द का ॥ य थ ह ल दि अ नू श्री व ला, पी ये, बी ज य  
 वात्र, सानि ज, मूत्रि, नि ज, डो ष धी, श्री सि स व स म, हात्र, पी सि, ज व हीं क नि घाल, यानी, सा धि दा द जे  
 ह, सून दू वि ग दे, मल दू दे दे, हा था ॥ डो ष ध अ, म्मी क ला दू जा ग हे सा ना ग दू त्रि हा ॥ मूल, ज वा  
 सा, श्री नि, के द्वा हं, मूषा व दू यात्र, या ॥ स व स न, म ह, कानि के, यु नि षा ड, स म, ज नू, पी न, पा ० नि र

कामिनी दिवस ३ घनमान पात्राग सवज्ञहे सुनदू वहु वदेकांन ॥ दू सत्री ॥ घी ३ ॥ क सत्र डला  
हृ००, अमि वटा०० वाषक वि शा००, तीजा अं सं घा ड यू नि कां वि, साग दिवस गिय घा०० निहा वि, घी व वा  
गत्र हे कि न मिरु, १ ह सु नि वाषा अय न विरु ॥ अली गरु ध व न विधि ॥ वाम र्जं द गिय वं धे दू दू दू  
दय ष हि अ नि ॥ न व य व र ष सं ग म क रे गरु गं व र हे सु न कां न ॥ रू र न ॥ म द नो क स म र्द न क रे, पा नः  
ना स क सं ग, व गि न डो वेषू व ष सा, ती य मी ने अ गि रं म ॥ दू स० ॥ दू द ह द वि वा गे व वा अ नि दू दू के  
हु जे य क ० सा नि ॥ कि न क अ नि ००० वा ष ड ००० सा व र म ह य क अं गू ० भ ला ०० ॥ लिंग वृ द्ध ॥ आ स र्ग  
धू डो वा व व न्नी ली जे, गि ल का वी डो मू वी वी ज, स व स म यी सि स ज ल य नि हा षू, अ व ट न क व ह अ मि  
यं वा षि ॥ म द नो क स नि न ड व ट दू ला ०० ज ल ना ग के अ व दू ॥ ०० ॥ ला व दू दि न ०० की स य वि मा नू दी  
व द्य हा ०० सु न दू दे का न ॥ रू र न ॥ ज्ञा नो डं क वि दू क अ ने थ क सू या वी हा ह वि ० ने, थ क थ क ठा वि स



पात्री अरु वायवाय ० दूः समीरु, वक्रा, विष्णु, महान, नयायन, नकसूत्र, निहिय वा नन, मुदिभा मसी  
 मरुकरु, सात्रगि सभगा मूषमहधरु, जवलरु मूषसुयात्री नहे, डवेन पृषका कः मकहे॥  
 द्रुस॥ सक डो हाथ आत्री, उरु वरुटा अन डगात्री, नीनि वूटी वयाव त्रि आनि, सहन सहित (गः  
 लीक त्रि सांनि, टी क टी क एगली पत्र मान, दाह सुषाः के धरु सुजान, सात्रगि समे ठात्र मूष अं न  
 व डवेन पृषका य हर्ग न, जव सागली धरु हनिका नी, डवो रुयाय दू ल दू विवा त्रि॥ द्रुस॥  
 मंडक वडा कूय नं आनि, तिस मूषया रासगी वानि, मूद्रकू म के वी (क्षे दू म स डं डि जा गं न व ह यी  
 नान षा डि, न व ग म त्रि नि भ व रु त्रि धूय सुषा ड, यट हा त्रि के गु टि काल्या ड, सात्रगि सभ मूष अं न व  
 ल दू डवे पृषका व ड गलि न दहि॥ मल ह म वा व का॥ पात्रा आनि क पू व त्र स, सह न मा म स म र्क  
 त्रि, थ य नि सिंग त्र ह स म रात्र, वा त्रि दा म थ वा त्रि ले, एग दू न ल ष २ ट दा म प हि हि थि व डो थि य गा सो

१०५

ह स व का म, न व स व डो ष द पी सि के ता म ह द दू व लाः॥ आनि अग्नि की जाय न व डो न धू वां स व जाः  
 दू, मधु अं ग राय काः के न क य ह त्र प त्र मान न व स डो ष द दू नि थ, त्रि सां म व त्र न ज व जानू, आदि  
 अं न व ल न ही॥ जवल गि म ल ह म हाः, बोले का उ डि जाः हे सून दू व सि क स व काः॥ सा म ल ह म  
 आव स न र्ग ला वे ड य त्र वा व रु त्रि आ वे दू षे न ही रा ष न का क व नाः, डो ष द य स र्ग का॥ धनि या  
 लां ग टी क य त्रि आ न दू, द व दा वू पृ ति गि न ता जान दू, नि र्ग न ली अ दू या क टाः, पी प त्रि सां ल दू, १०  
 स म राः॥ दा हा॥ न डो ष ध स कू व ट दू का नी हा डी ठा त्रि वा त्रि स राः॥ ठा त्रि ज ल म ध अग्नि य त्रि व  
 त्रि ध य, वि नू टा क सा आ व टि थ, ज व त्र हे स राः॥ न क, सा स राः॥ पा र हि पि वे आ ण सून दू वि व क  
 ने नि स मे वा क स द ही, पी वे डो डि जा काः, ना य अ जी त्र न जाः॥ नि हि स र्ग न क यि न हाः॥ र्क र न ज  
 न न॥ न्या नि आ ड स नि सू त्र वा त्र, आ दि थ क दि न आ न दू ना त्रि, अ य न अं गु त्र वा त्रि पु मा न, का टे च्ची



हव्याः सृजान् कालि कालिनक मृगकत्रे, सृजयत्रायके कटिमहधरे, सदा सर्वदापीठे नहे, अलंः  
रुनवदूतकवित्रयकहे, जववह मृगश्रागश्रावे, निखिजानूयूत्र वनवजोवे, ओषधपीयषकापी  
पत्रि, शाठि शकत्रं ज ३ अत्रयीता ४ वायविठंग ज ५ हत्रं सूनमीता ६ यषट ओषधसमकत्रिलं दू, निम  
थद्वनी, षांठकत्रह, अष्टगक (गमलीयत्रमानयमांशो वस्त्रमलजानी ॥ ओषधवलपूश्चिका ॥ शांठि जाव  
०० निमित्रयि, संधासवश्रानि, कत्रगा, तालासयक, पीयत्रि, दात्रयीनीश्रानि, वदूतसेधालं दू समडो अः  
इहागवषान्, माचत्रस, सहाग, हिंग, गंधकलानयांगमश्रानि सहलू, साशी, हागषांठकटि अं वत्रश्रा  
नि, सत्रनीवूददूयूटयट, वात्र, रायिका, मीनि, तालमषाना (गमषदू, ओत्रसगावत्रिल्याड, वीन  
कवाश्रु ओकंगही, दाउटांकमगड, सूकसिंघात्रटांकदू ०० अश्रुकहनाजाहा ००, यकटांकश्राश्राः  
निय, सूनदूत्रसिकसवसांका ००, कटिवसनमहकानिय, सवसमजसेश्रानू, (गमलीवाक्षो) डोः

टिकेयां चटांकयत्रमान् ओषधिहा० नायष्टिका रुक्मनकोत्रोत्रेनि॥ ताडपत्रद्वधहिया  
वेवटेष्वाहुवलमेन॥ ॥०० निओषधसंपूर्ण॥ ॥०० निश्चानंदकवि विप्रविश काकमंज  
त्रीसंपूर्ण॥ ॥ ॥०० रुक्मवत्तु॥ ॥ सं० ३३ वे० उ० दि० ४ ग्राहमनाउनदयका ॥ अ० क० २३ व० ५ सा० १२ य० ४२ विया॥

भगनदास सुगत दासया संकलनं

आज्ञा सक-कृपयात उपहार !



मानसिक पुनर्वासना संकलन  
काका सप्त-संस्कार उपाय ।

१०१